राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

हर खबर पर पकड़

11 आईपीएल में बतौर कप्तान...

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को दबाना... 12

वर्ष : 14 | अंक : 303 | नई दिल्ली, शनिवार, 16 मार्च, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 25°C

न्यूनतम तापमान 18°C

बाजार

सोना 67,545

चांदी 77,600

सेंसेक्स 72,643

निफ्टी 22,023

संक्षिप्त खबरें

बीआरएस विधायक का भाई अवैध खनन मामले में गिरफ्तार

हैदराबाद। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के एक विधायक के भाई को कथित अवैध खनन के मामले में गिरफ्तार किया गया है। संगारेड्डी जिला पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने कहा कि पाटनचेरु विधानसभा सीट से विधायक जी. महिपाल रेड्डी के भाई जी. मधुसूदन रेड्डी को गिरफ्तार किया गया है। उनके स्वामित्व वाली कंपनियों द्वारा जिले में कथित अवैध और अत्यधिक खनन किए जाने के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया था। रेड्डी को गिरफ्तार किए जाने पर बीआरएस ने इसे सत्तारूढ़ कांग्रेस की राजनीतिक प्रतिशोध की कार्रवाई करार दिया। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि तहसीलदार की शिकायत के आधार पर मधुसूदन रेड्डी के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें हिरासत में लिया गया है। आगे की जांच जारी है।

अजीत डोभाल की इजरायल यात्रा शांति और स्थिरता के लिए : विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली, 15 मार्च (वेब वार्ता)। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल की हाल की इजरायल यात्रा उस क्षेत्र में शांति और स्थिरता कायम करने के भारत के प्रयासों का एक हिस्सा थी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने साप्ताहिक पत्रकार वार्ता में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की यात्रा के बारे में कहा कि उन्होंने उस दौरान प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात की तथा अपने इजरायली समकक्ष एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से विचार-विमर्श किया। वार्ता में गाजा में मानवीय सहायता पहुंचाए जाने तथा बंधकों की रिहाई के संबंध में भी चर्चा हुई। प्रवक्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री पश्चिम एशिया में शांति और स्थायित्व को बहुत महत्व देते हैं। इस सिलसिले में वे विभिन्न अरब देशों के नेताओं के संपर्क में भी है। लैटिन अमेरिकी देश हैती में जारी संघर्ष के संबंध में प्रवक्ता ने कहा कि आवश्यक होने पर वहां फंसे भारतीय नागरिकों को स्वदेश लाने के लिए कदम उठाए जायेंगे। इस संबंध में हमारी तैयारी है। विदेश मंत्रालय में इस संबंध में एक नियंत्रण कक्ष बनाया गया है।

एसबीआई चुनावी बॉण्ड संख्या का खुलासा करने के लिए "कर्तव्यबद्ध": उच्चतम न्यायालय

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) राजनीतिक दलों द्वारा प्राप्त चुनावी बॉण्ड की विशिष्ट अक्षरांकीय संख्या (यूनीक अल्फा-न्यूमेरिक नंबर) का खुलासा करने के लिए "कर्तव्यबद्ध" है और उसे ऐसा करना होगा। इसके साथ ही न्यायालय ने ऐसा नहीं करने के लिए बैंक से जवाब मांगा। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी वाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली संविधान पीठ ने कहा कि शीर्ष अदालत ने चुनावी बॉण्ड मामले पर अपने फैसले में खरीदार, राशि और खरीद की तारीख सहित बॉण्ड के सभी विवरण का खुलासा करने का निर्देश दिया था। इस पीठ में न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल हैं। निर्वाचन आयोग (ईसी) ने बृहस्पतिवार को उन संस्थाओं की पूरी सूची जारी की जिन्होंने राजनीतिक चंदा देने के लिए चुनावी बॉण्ड खरीदे थे। आयोग द्वारा अपनी वेबसाइट पर ये आंकड़े सार्वजनिक किए जाने के एक दिन बाद प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि एसबीआई को सभी जानकारियां मुहैया करानी हैं। पीठ ने बैंक को नोटिस जारी

किया और मामले में आगे की सुनवाई के लिए 18 मार्च की तिथि तय की। सीजेआई ने बैंक के प्रति नाराजगी जताते हुए कहा, "एसबीआई की ओर से कौन पेश हो रहा है? क्योंकि हमारे फैसले में हमने विशेष रूप से खरीदार, राशि और खरीद की तारीख सहित बॉण्ड के सभी विवरणों का खुलासा करने का निर्देश दिया था। उन्होंने बॉण्ड संख्या का खुलासा नहीं किया। इसका खुलासा एसबीआई को करना होगा।" विशिष्ट अक्षरांकीय संख्या का उन लोगों से मिलान किया जाएगा जिन्होंने उन दलों के चुनावी बॉण्ड खरीदे हैं जिन्हें उन्होंने चंदा दिया था। सीजेआई ने कहा, "उन्होंने (एसबीआई) बॉण्ड संख्या का खुलासा नहीं किया। इसका खुलासा एसबीआई को करना होगा।" उन्होंने कहा, "लेकिन सच कहें, तो उन्होंने जितनी जानकारी उपलब्ध कराई है उसे लेकर हम नाराजगी जता सकते हैं क्योंकि वे (बॉण्ड संख्या का खुलासा करने के लिए) कर्तव्यबद्ध थे।" न्यायालय, निर्वाचन आयोग की उस अर्जी पर सुनवाई कर रहा था जिसमें चुनावी बॉण्ड मामले में न्यायालय के 11 मार्च के आदेश के एक हिस्से में संशोधन का अनुरोध किया गया है। न्यायालय ने अपने पंजीयक (न्यायिक) को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि निर्वाचन आयोग द्वारा सीलबंद कवर में सौंपे गए आंकड़ों को स्कैन किया जाए और उन्हें डिजिटल माध्यम से उपलब्ध कराया जाए। आयोग के वकील ने कहा कि उन्होंने 11 मार्च के आदेश में मामूली संशोधन के लिए अर्जी दायर की है जिसमें यह निर्देश दिया गया है कि निर्वाचन आयोग अदालत को सौंपे गए आंकड़ों को अपनी वेबसाइट पर अपलोड करेगा। उन्होंने कहा कि आयोग ने उन आंकड़ों की कोई प्रति अपने पास नहीं रखी है जिन्हें अदालत को सौंपा गया है क्योंकि इसे सीलबंद कवर में दिया गया था। पीठ ने कहा, "यह निर्देश जारी करते समय, न्यायालय ने माना था कि इस अदालत की रजिस्ट्री को उपलब्ध कराए गए आंकड़ों की एक प्रति ईसी के पास भी होगी।" आयोग ने अनुरोध किया कि इन दस्तावेजों को उसे वापस किया जाए ताकि वह न्यायालय के निदेशों का पालन कर सके और इन्हें अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर सके। पीठ ने कहा, "इस अदालत का पंजीयक (न्यायिक) यह सुनिश्चित करेगा कि न्यायालय के अंतरिम आदेश के तहत निर्वाचन आयोग द्वारा सौंपे गए आंकड़ों को स्कैन किया जाए और उन्हें डिजिटल माध्यम से उपलब्ध कराया जाए।" पीठ ने कहा कि इस काम को शनिवार शाम पांच बजे तक पूरा करना बेहतर रहेगा और एक बार यह कार्य हो जाने के बाद मूल दस्तावेज निर्वाचन आयोग को वापस कर दिए जाएं जिसके बाद आयोग आंकड़ों को अपनी वेबसाइट पर अपलोड करेगा।

कांग्रेस और वामपंथी दल ठग हैं, केरल को धोखा दिया : पीएम मोदी

प्रातः किरण/एजेंसी

पथानामथिट्टा (केरल)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केरल के सत्ताधारी वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) और विपक्षी संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) को 'ठग' करार देते हुए शुक्रवार को कहा कि राज्य में दोनों एक-दूसरे का विरोधी होने का दिखावा करते हैं जबकि दिल्ली में गले मिलते हैं। यहां एक रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि केरल के लोग इनकी सच्चाई समझ गए हैं और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पिछले चुनाव के दो अंकों के वोट प्रतिशत के मुकाबले आने वाले चुनावों में दो अंकों की सीटों तक पहुंचने से दूर नहीं है। उन्होंने कहा, "एलडीएफ और यूडीएफ विरोधी होने का दिखावा करते हैं, लेकिन दिल्ली में वे एक-दूसरे को 'गले' लगाते हैं! कांग्रेस और कम्युनिस्ट यहां एक-दूसरे को कोसते हैं लेकिन राष्ट्रीय राजधानी

में गठबंधन करते हैं!" उन्होंने कहा, "कांग्रेस और लेफ्ट दोनों ठग हैं। उन्होंने केरल के लोगों को धोखा दिया है। लेकिन अब केरल के लोग, खासकर युवा और महिलाएं, हकीकत समझ रहे हैं।"

जनसभा में मौजूद लोगों की भीड़ की ओर इशारा करते हुए मोदी ने कहा कि पथानामथिट्टा का उत्साह बता रहा है कि इस बार केरल में 'कमल' खिलने वाला है। उन्होंने कहा, "पिछले चुनावों में केरल की जनता ने हमें दो अंकों के वोट प्रतिशत वाली पार्टी बनाया था। और अब, यहां दोहरे अंकों की सीटों से हमारा भाग्य दूर नहीं है!" प्रधानमंत्री ने कहा कि केरल के लोग राज्य में शासन करने वाली भ्रष्ट और अक्षम सरकारों के कारण पीड़ित हैं और यहां की सरकारों ने रबर किसानों की दुर्दशा के प्रति आंखें मूंद ली हैं। केरल में आम तौर पर एलडीएफ या यूडीएफ ही सत्ता पर काबिज होते रहे हैं। दक्षिण के इस राज्य में भाजपा का प्रदर्शन अब तक कोई खास नहीं रहा है। भाजपा यहां पैर जमाने के लिए लंबे समय से प्रयासरत है। केरल में कानून व्यवस्था की स्थिति को लेकर भी उन्होंने एलडीएफ सरकार पर निशाना साधा और कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य में चर्च के पादरी भी सुरक्षित नहीं हैं उन्होंने कहा, "कानून व्यवस्था की शर्मनाक स्थिति के कारण वे हिंसा का शिकार हो रहे हैं। इतना ही नहीं असंख्य कॉलेज कम्युनिस्टों का अड्डा बन गए हैं।" उन्होंने कहा, "केरल में महिलाएं, युवा और समाज का हर तबका डर के साये में जी रहा है और राज्य में शासन करने वाले लोग चैन की नींद में सो रहे हैं।" प्रधानमंत्री ने दावा किया कि केरल को बचाने का एकमात्र 'रामबाण इलाज' कांग्रेस और एलडीएफ से छुटकारा पाना है। उन्होंने कहा, "यह एकमात्र समाधान है जिसके माध्यम से केरल के लोगों को न्याय मिलेगा।"

चुनावी बॉण्ड मामले की विशेष जांच हो, भाजपा के खातों से लेन-देन पर रोक लगे: खरगे

प्रातः किरण/एजेंसी

बेंगलुरु। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शुक्रवार को कहा कि चुनावी बॉण्ड योजना से जुड़े मामले की विशेष जांच होनी चाहिए और सच सामने आने तक भारतीय जनता पार्टी के बैंक खातों से लेन-देन पर रोक लगाई जाए। खरगे ने प्रवर्तन निदेशालय और आयकर विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसियों के छापे के बाद कई कंपनियों द्वारा चुनावी बॉण्ड खरीदे जाने का मुद्दा भी उठाया।

उन्होंने कहा कि जहां भाजपा ने चुनावी बॉण्ड के जरिये करोड़ों रुपये एकत्र किये हैं, वहीं कांग्रेस को जिस बैंक खाते में चंदा मिला, उससे लेन-देन पर रोक लगा दी गई। खरगे ने संवाददाताओं से कहा, "प्रधानमंत्री कहते हैं 'न खाऊंगा, न खाने दूंगा', लेकिन आज उच्चतम न्यायालय ने यह उजागर कर दिया है कि कैसे भाजपा ने चुनावी बॉण्ड से पैसा बनाया है। एसबीआई द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों से पता चलता है कि भाजपा को कुल चंदे का 50 प्रतिशत से

अधिक मिला, जबकि कांग्रेस को केवल 11 प्रतिशत मिला।" कांग्रेस अध्यक्ष ने दावा किया कि कंपनियों पर भाजपा को चंदा देने के लिए दबाव डाला गया।

खरगे ने कांग्रेस के खिलाफ आयकर विभाग की कार्रवाई का हवाला देते हुए कहा, "आयकर विभाग को ऐसा करने का निर्देश दिया गया था और लगभग 300 करोड़ रुपये 'फ्रीज' कर दिए गए हैं हम चुनाव में कैसे जा सकते हैं? आप चुनावी बॉण्ड के माध्यम से करोड़ों रुपये एकत्र कर रहे हैं, जबकि कांग्रेस को कार्यकताओं, सांसदों और अन्य लोगों से चंदा मिला।" उन्होंने कहा, हमारा खाता बंद है, उनका खाता खुला है। उन्हें 6,000 करोड़ रुपये मिले, जबकि दूसरों को बहुत कम मिला।" खरगे ने सवाल किया, "अगर विपक्षी पार्टी का खाता 'फ्रीज' कर दिया जाएगा, तो वे चुनाव कैसे लड़ेंगी? समान अवसर कहां है? इसलिए मैं उच्चतम स्तर पर जांच की मांग करता हूं। जब तक सच्चाई सामने नहीं आती, तब तक उनके (भाजपा) खाते से भी लेन-देन पर रोक लगाई जानी चाहिए। यह पता लगाने के लिए एक विशेष जांच की जानी चाहिए।

लोकसभा चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा आज

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग 18वीं लोकसभा एवं चार राज्यों की विधानसभाओं के चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा शनिवार को करेगा और इसी के साथ देश में आदर्श आचार संहिता लागू हो जाएगी। निर्वाचन आयोग ने इसके लिए कल एक संवाददाता सम्मेलन कल दोपहर तीन बजे विज्ञान भवन में आयोजित किया है। मीडिया को भेजे गये आमंत्रण में कहा गया है कि भारत निर्वाचन आयोग ने यह संवाददाता सम्मेलन 2024 के लोकसभा के चुनाव तथा राज्य विधानसभाओं के चुनाव कार्यक्रमों की घोषणा करने के लिए आयोजित किया है। सूत्रों के अनुसार लोकसभा चुनावों के साथ आंध्र प्रदेश, ओडिशा, सिक्किम एवं अरुणाचल प्रदेश की विधानसभाओं के चुनाव भी होने हैं। चुनाव कार्यक्रमों की घोषणा होने के साथ ही देश भर में आदर्श आचार संहिता लागू हो जाएगी। सरकार ने कल ही चुनाव आयोग में आयुक्तों के दो रिक्त पदों पर नियुक्ति की है। विधि एवं न्याय मंत्रालय ने श्री ज्ञानेश कुमार और डॉ सुखबीर सिंह संधू को चुनाव आयुक्त नियुक्त करने संबंधी अधिसूचना गुरुवार शाम जारी की। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इससे पहले इन चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को मंजूरी प्रदान की। दोनों आयुक्तों ने तत्काल प्रभाव ने कार्यभार संभाल लिया और दो दिन बाद चुनाव कार्यक्रम की घोषणा करने का निर्णय लिया गया। कल दिन में प्रधानमंत्री निवास पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में चुनाव आयोग में खाली आयुक्तों के दो पदों पर नियुक्ति पर विचार के लिए एक बैठक बुलायी गयी थी जिसमें गृह मंत्री अमित शाह एवं लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी शामिल हुए थे। हाल ही में चुनाव आयुक्त अरुण गोयल के अचानक इस्तीफे के बाद आयोग में केवल मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ही रह गये थे। बाकी दोनों आयुक्तों के पद खाली होने और लोकसभा चुनाव आसन्न होने के कारण दोनों पदों पर शीघ्रातिशीघ्र नियुक्ति करना आवश्यक हो गया था।

भाजपा ने गरीब के बेटे को पीएम और बूथ कार्यकर्ता को देश का गृहमंत्री बनाया: अमित शाह

- अबकी बार 400 पार का नारा जनता लगा रही

प्रातः किरण/एजेंसी

अहमदाबाद। लोकसभा चुनाव की तारीखों के ऐलान से पहले शुक्रवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने गृहराज्य गुजरात के दौरे पर है। इस दौरान कार्यकताओं को संबोधित कर केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा, आजादी के बाद देश को सुरक्षित करने का काम सिर्फ और सिर्फ नरेंद्र भाई ने किया है। आप सभी के साथ 40 साल से काम कर रहा हूं। अनेक पराजय के बाद हमें चुनाव जीतने की महारथ हासिल हुई है। शाह ने कहा, देश की जनता अब की बार 400 पार का नारा लगा रही है। जनता चुनाव घोषित होने का इंतजार कर रही है। संकल्प से सिद्धि का मार्ग नरेंद्र भाई ने दिखाया है। अभी तक पूरे देश में 135 सीटों का दौरा करके आया हूं,

हर जगह मोदी मोदी की चर्चा हैं। लोकसभा चुनाव सिर्फ सांसद चुनने का नहीं है, बल्कि हर मतदाता को हमारे संकल्प यात्रा के साथ जोड़ना है। शाह ने अपने कार्यकताओं से कहा कि लोगों से विनम्रता से मिलिए, प्रचार में सभी को जोड़िए। केंद्रीय मंत्री शाह ने कहा, आज 29 साल पहले का दृश्य याद आ रहा है। मैं विधानसभा का चुनाव लड़ने जा रहा था, तब यही हनुमान दादा में दर्शन किए थे और भूपेंद्र पटेल पार्षद थे। आज फिर से वहीं से लोकसभा चुनाव के लिए शुरूआत की है। भाजपा ने बूथ कार्यकर्ता को देश का गृहमंत्री बनाया। पार्टी ने गरीब परिवार के चाय बेचने वाले को प्रधानमंत्री बनाया। भाजपा में आंतरिक लोकतंत्र है, जिसकी वजह से यह संभव हुआ। मोदी आज विश्व के लोकप्रिय नेता: गृह मंत्री ने कहा, पीएम मोदी ने 33 प्रतिशत महिला आरक्षण देकर महिला शक्ति को विधानसभा-संसद का दरवाजा खोला है। आज नरेंद्र भाई सिर्फ देश के नहीं, दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। आजादी के बाद देश को सुरक्षित करने का काम सिर्फ नरेंद्र भाई ने किया है। उन्होंने कहा, जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाया। दो बार हमारे सैनिकों पर आतंकियों ने हमला किया, जिसका सर्जिकल और एयर स्ट्राइक करके जवाब दिया। डोकलाम में चीन ने जो किया, सब सोच रहे थे क्या होगा? नरेंद्र भाई ने आंख दिखा दिया और चीन को वापस लौटना पड़ा।

सीएए पर अमेरिका के बयान को भारत ने बताया अनावश्यक और बेतुका

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। भारत ने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) पर अमेरिका के बयान को खारिज करते हुए कहा है कि यह आनवश्यक, गलत सूचनाओं पर आधारित और बेतुका बयान है। संकट में फंसे लोगों की मदद करने के लिए उठाए गए इस प्रशंसनीय कदम को वोट बैंक की राजनीति के चश्मे से देखते हुए आलोचना नहीं की जानी चाहिए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को पत्रकार वार्ता में कहा कि जिन लोगों को भारत की बहुलवादी परंपराओं और इस क्षेत्र में विभाजन के इतिहास के बारे में सीमित जानकारी है, उन्हें उपदेश नहीं देने चाहिए। भारत के सहयोगी और शुभचिंतकों को अच्छी मंशा से उठाए गए इस कदम का स्वागत करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि अमेरिका के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यु मिलर ने सीएए कानून पर चिंता जाहिर की थी। उन्होंने कहा था कि उनका देश इस कानून को लेकर चिंतित है, वह इस कानून के क्रियान्वयन पर नजदीकी से नजर बनाए रखेगा। उन्होंने यह भी कहा कि धार्मिक स्वतंत्रता और सभी के साथ समान व्यवहार का सम्मान किया जाना मूलभूत लोकतांत्रिक सिद्धांतों का तकाजा है। प्रवक्ता जायसवाल ने अमेरिका और कुछ अन्य देशों के बयानों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि सीएए कुछ लोगों को नागरिकता देने पर केन्द्रित है। यह किसी की नागरिकता लेता नहीं है। कानून उन लोगों को, जिनका कोई देश नहीं रह गया है, मानव गरिमा और मानवाधिकार प्रदान करना है। इस संदर्भ में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार पर चिंता व्यक्त करने का कोई कारण नहीं है। उन्होंने दोहराया कि यह कानून भारत का अंदरूनी मामला है तथा देश की समावेशी परंपराओं और मानवाधिकारों के बारे में प्रतिबद्धता पर आधारित है। इसके जरिए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के हिन्दू, सिख, बौद्ध, पारसी और ईसाई समुदाय के पीड़ित शरणार्थियों को सुरक्षित पनाह दी गई है।

संबोधन केंद्र सरकार 16 फसल बीमा कंपनियों को 35 हजार करोड़ रुपये का भुगतान करती है

केंद्र में कांग्रेस की सरकार आई तो आदिवासियों को जमीन के पट्टे दिए जाएंगे : राहुल गांधी

प्रातः किरण/एजेंसी

मुंबई। कांग्रेस पार्टी के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को पालघर में कहा कि जब उनकी पार्टी केंद्र की सत्ता में आएगी तो आदिवासियों को जमीन के पट्टे दिए जाएंगे। 50 फीसदी आदिवासी आबादी वाले इलाकों में 6वीं अनुसूची लागू की जाएगी, यानी सारी शक्तियां स्थानीय सरकार, गांव के पास होंगी। अगर कांग्रेस की सरकार आती है तो जातिगत जनगणना भी कराई जाएगी। राहुल गांधी शुक्रवार को 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के दौरान पालघर जिले के वाडा में एक सभा को संबोधित कर रहे थे। राहुल गांधी ने भाजपा सरकार

पर तंज कसते हुए कहा कि भारत की 88 प्रतिशत आबादी ओबीसी, दलित, आदिवासी, पिछड़े समुदायों से है लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में उनकी भागीदारी बहुत कम है। न्याय पालिका में भी उच्च पदों पर इस सामाजिक समूह के लोगों की संख्या कम है। 6 प्रतिशत लोगों के हाथ में अदालतें, मीडिया, पैसा और सत्ता है। भूमि अधिग्रहण के दौरान समाज के गरीब तबके की जमीन ली जाती है लेकिन अदानी की एक इंच भी जमीन नहीं ली जाती है। राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री बीमा योजना से किसानों को नहीं, बल्कि कंपनियों को फायदा हो रहा है। केंद्र सरकार 16 फसल बीमा कंपनियों को 35 हजार करोड़ रुपये का भुगतान करती है, यह जनता का पैसा है। 88 फीसदी लोगों को ये पैसा जीएसटी से मिलता है। बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से नुकसान होने पर भी किसानों को मदद नहीं मिल पाती है। सरकारी कंपनियों में जनता की भागीदारी थी लेकिन अब सरकारी काम भी निजी कंपनियां करती हैं, इसलिए 88 प्रतिशत समाज का प्रतिनिधित्व नहीं है। समाज को मेहनत करनी होगी, लेकिन जिस दिन यह समाज जाग जाएगा, देश हिल जाएगा। भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुक्रवार को सुबह पालघर के मोखाड़ा स्थित हनुमान मंदिर से शुरू हुई। राहुल गांधी ने जवाहर में विजय स्तंभ को सलामी दी। आज शाम को यात्रा खुडुस गांव से ठाणे में प्रवेश करेगी और आनंद दिघे चौक, भिवंडी में एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की जाएगी। यात्रा का आज पड़ाव सोनाले मैदान पर होगा।

अयोध्या में राममंदिर में प्राणप्रतिष्ठा के साथ ही अब भारत में रामराज्य स्थापित होगा : राजनाथ

प्रातः किरण/एजेंसी

चतरा (झारखंड)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि वे दिन दूर नहीं हैं, जब भारत में 'रामराज्य' स्थापित होगा और देश 2027 तक दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा। सिंह ने नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) के लागू होने पर भाजपा को सांप्रदायिक बताने वालों पर भी निशाना साधा और यह सवाल किया कि पाकिस्तान में हिंदुओं की आबादी किन परिस्थितियों में लगभग 23 प्रतिशत से घटकर लगभग 3 प्रतिशत हो गई। राज्य की राजधानी रांची से लगभग 160 किलोमीटर दूर इटखोरी में एक रैली को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा, "अयोध्या में मंदिर में प्राणप्रतिष्ठा के साथ ही अब भारत में रामराज्य की स्थापना होगी। रामलला टेंट से अपने महल में पहुंच गए हैं। उन्होंने कहा, "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए विकास कार्यों के दम पर भारत उनके नेतृत्व में ह्वविश्वगुरुह्व बनेगा और यह भगवान की इच्छा है कि वह न केवल तीसरी बार बल्कि चौथी बार भी प्रधानमंत्री बने रहें। उन्होंने सीएए पर कहा कि हिंदू, सिख, ईसाई और पारसियों सहित अल्पसंख्यक अफगानिस्तान, बांग्लादेश

और पाकिस्तान जैसे देशों में धार्मिक उत्पीड़न का सामना कर रहे थे और शरण के लिए भारत आ रहे थे। उन्होंने कहा, हमने उन्हें नागरिकता देने का फैसला किया। इसके लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को सांप्रदायिक करार दिया गया।" झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर निशाना साधते हुए सिंह ने कहा कि यह भारत के इतिहास में अभूतपूर्व घटना है कि एक मुख्यमंत्री ही लापता हो गया लेकिन अब वह भ्रष्टाचार के आरोप में सलाखों के पीछे हैं। सिंह ने कहा, "पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकारों के उलट भाजपा सरकार पर कोई भी भ्रष्टाचार को लेकर उंगली नहीं उठा सकता।"

संक्षिप्त समाचार

सीतावनी जोन के कोटा में शुरू होगी सफारी

रामनगर (नैनीताल), एजेंसी। रामनगर वन प्रभाग के सीतावनी जोन के कोटा रेंज में नया पर्यटन गेट खोला जा रहा है। इसी क्रम में पर्यटकों के लिए 26 किलोमीटर का ट्रैक बनाया जाएगा। रामनगर वन प्रभाग मार्च के अंत तक इस पर्यटन जोन को शुरू करने की तैयारियों में जुटा है। रामनगर वन प्रभाग के अंतर्गत सीतावनी पर्यटन जोन आता है। कॉर्बेट के बाद सीतावनी पर्यटन जोन में सबसे ज्यादा पर्यटक जंगल सफारी के लिए पहुंचते हैं। सीतावनी जोन में टेड़ा गेट और पवलगढ़ गेट से पर्यटक जंगल सफारी को जाते हैं। सैलानियों को नया अनुभव और विकल्प देने के लिए रामनगर वन प्रभाग 26 किलोमीटर का नया ट्रैक बनाएगा जो अलग पर्यटन गेट होगा। कोटा रेंज में यह पर्यटन गेट भंडारपानी से शुरू होगा जो घने जंगल से होकर भंडारपानी में समाप्त होगा। इसी पर्यटन गेट से सैलानी जंगल में जाएंगे और वन्यजीवों का दीदार कर सकेंगे। रामनगर वन प्रभाग के डीएफओ दिगांथ नायक ने बताया कि कोटा जोन के नाम से नए पर्यटन जोन के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। माह के अंत तक यह पर्यटन जोन शुरू हो जाएगा। रामनगर में नया पर्यटन गेट बनने से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। गेट खुलने से गाइड, जिप्सी चालक और अन्य को रोजगार मिलेगा। रामनगर में यह 10वां पर्यटन जोन होगा जहां पर्यटक जंगल सफारी का लुत्फ ले सकेंगे। इस माह अल्मोड़ा वन प्रभाग के मोहान में नया पर्यटन जोन खोलने की तैयारी है।

सुबह नौ से शाम सात बजे तक होगा श्रम कार्ड का नवीनीकरण

हल्द्वानी, एजेंसी। श्रम विभाग की ओर से पंजीकृत श्रमिकों को कंबल, छाता समेत अन्य सामान वितरित किया जा रहा है। इसके चलते श्रम विभाग कार्यालय में श्रम कार्ड के नवीनीकरण के लिए लंबी लाइन लग रही है। इस समस्या को देखते हुए अब विभाग ने पंजीकरण काउंटर पर कार्य का समय तीन घंटा बढ़ा दिया है। नैनीताल रोड स्थित श्रम कार्यालय में बीते दो दिन से कभी कर्मचारी की कमी से एक काउंटर बंद रहा, तो कभी इंटरनेट सेवा ठप हुई। इससे श्रमिकों को विभिन्न योजनाओं के लिए बनाए गए श्रम कार्ड का नवीनीकरण नहीं हो पाया था। सोमवार को श्रम कार्यालय में स्टाफ की कमी से एक ही काउंटर खुला। मंगलवार को इंटरनेट सेवा ठप रहने के कारण भी कई लोगों के श्रम कार्ड रिन्यू नहीं हो पाए। काउंटर पर पहले सुबह 10 से शाम पांच बजे तक पंजीकरण होते थे। यह समय अब 9 बजे से शाम 7 बजे तक कर दिया है। श्रम प्रवर्तन अधिकारी संजीव कंडारी ने बताया कि श्रमिकों को हर तीन साल में अपना श्रम कार्ड रिन्यू करवाना होता है। इस बार श्रमिकों का आचार संहिता लगने से दो महीने कार्य बंद होने के डर के कारण लोगो की भीड़ बहुत बढ़ गई है। इसके कारण काम का लोड भी बढ़ रहा, वहीं प्रर्याप्त समय ना होने से कई लोगो का कार्य भी नहीं हो पाया।

डीआईजी ने किया पुलिस लाइन और पुलिस कार्यालय का निरीक्षण

रुद्रपुर, एजेंसी। डीआईजी डॉ. योगेंद्र सिंह रावत ने पुलिस लाइन और पुलिस कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने पुलिस लाइन की एमटी शाखा में नवनिर्मित स्टोर रूम और वाशर मेन रूम का उद्घाटन किया। बुधवार को डीआईजी डॉ. रावत पुलिस लाइन पहुंचे। उन्होंने परेड की सलामी लेकर निरीक्षण किया। साथ ही टोलीवार जवानों का टर्नआउट और ड्रिल को भी देखा। इसके साथ ही पुलिस लाइन के विभिन्न शाखा कार्यालय और पुलिस लाइन परिसर में हो रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता भी परखी। उन्होंने आर्मरी, बैरक, एमटी शाखा, जीपी स्टोर, भोजनालय, कर्मचारियों के लिए बने बैरक का निरीक्षण कर अधीनस्थों को जरूरी दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस लाइन सभागार में हुए सम्मेलन में अधिकारियों व कर्मचारियों की समस्याओं को सुनकर उनका निराकरण किया। उन्होंने पुलिस कार्यालय में प्रधान लिपिक शाखा, आंकिक शाखा, डीसीआरबी, रीडर कार्यालय, साइबर सेल कंट्रोल रूम का निरीक्षण कर दस्तावेज जांचे।

सबसे पहले देहरादून में चलन से बाहर होंगी डीजल सिटी बस और विक्रम, मिलेगा अनुदान

देहरादून, एजेंसी।
देहरादून में लंबे समय से डीजल चलित सार्वजनिक सवारी वाहनों को शहर से बाहर के रूटों पर चलाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन अब तक परिवहन विभाग विक्रमों को शहर से बाहर नहीं कर सका है।

राजधानी देहरादून की आबोहवा को स्वच्छ बनाने के लिए प्रदेश में सबसे पहले दून में डीजल सिटी बसें और विक्रम चलन से बाहर होंगे। डीजल सार्वजनिक यात्री वाहनों के संचालकों को नई सीएनजी-इलेक्ट्रिक या स्वच्छ वैकल्पिक ईंधन से संचालित बस खरीदने के लिए अनुदान सबसे पहले दून में मिलेगा। इसके बाद यह प्रयोग पूरे प्रदेश में किया जाएगा। अनुदान योजना को लेकर दून के सिटी बस और विक्रम संचालकों ने खुशी जाहिर की है।

देहरादून में लंबे समय से डीजल चलित सार्वजनिक सवारी वाहनों को शहर से बाहर के रूटों पर चलाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन अब तक परिवहन विभाग विक्रमों को शहर से बाहर नहीं कर सका है। उधर शहर के रूटों का परमिट होने के कारण सिटी बसों को भी शहर से बाहर करना संभव नहीं है। ऐसे में सिटी बस और विक्रम संचालकों को अनुदान देकर सीएनजी-इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने के लिए प्रोत्साहित करना ही एकमात्र विकल्प था। पिछले कई सालों से यह मांग भी की जा रही थी कि अगर सरकार डीजल वाहनों को चलन से बाहर करना चाहती है तो अनुदान स्कीम लेकर आए, ताकि नए वाहन खरीदने में आसानी हो।

बृहस्पतिवार को सरकार की ओर से स्वच्छ गतिशीलता परिवर्तन नीति के तहत अनुदान योजना को मंजूरी दी गई। इसमें सिटी बस और विक्रमों के लिए एक समान प्रावधान किया गया। कहा गया कि सिटी बस या विक्रम के परमिट को सरेंडर करने और वाहन स्क्रैप कराने का प्रमाण पत्र देने पर 25 से 32 सीट की नई सीएनजी या स्वच्छ ईंधन बस खरीदने के लिए वाहन लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रुपये अनुदान दिया जाएगा। वहीं वाहन को स्क्रैप किए बिना परमिट सरेंडर करने पर वाहन लागत का 40 प्रतिशत या अधिकतम 12 लाख रुपये अनुदान दिया जाएगा।

विक्रम संचालकों के लिए एक अन्य विकल्प भी खोला गया है। इसमें सीएनजी या वैकल्पिक ईंधन से चलने वाली मैजिक को खरीदने के लिए विक्रम संचालकों को वाहन लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 3.5 लाख रुपये अनुदान दिया जाएगा। यह व्यवस्था 1=1 के फार्मूले पर लागू की जाएगी।

सरकार बेशक दून की हवा को स्वच्छ बनाने की मंशा के साथ अनुदान योजना लेकर आई है, लेकिन इसके सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। परिवहन विभाग भले ही सीएनजी और इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ाने को लेकर नई नीति पर अमल करने जा रहा हो, लेकिन अगर पूरी सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था ही सीएनजी और इलेक्ट्रिक वाहनों के भरोसे हा गई तो कई चुनौतियां झेलनी होंगी। दून में अभी पांच सीएनजी पंप हैं, इनमें भी सीएनजी गैस टैंकरों से आती है। शहर की कारों को ही यहां से सीएनजी लेने के लिए लंबी कतार लगानी पड़ती है। ऐसे में अगर सैकड़ों नए वाहन आ गए तो काफी मुश्किल होगी। इसके लिए सरकार को बुनियादी ढांचा मजबूत करना होगा। नए सीएनजी पंप खोलने होंगे। इलेक्ट्रिक वाहनों के सामने और भी बड़ी चुनौती है। शहर में एक भी सरकारी इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन नहीं है। ऐसे में अगर विक्रम या सिटी बस संचालक इलेक्ट्रिक वाहन की खरीद करना भी चाहें तो राह आसान नहीं होगी।

फंदे पर लटकी मिली महिला, गुपचुप अंतिम संस्कार की थी तैयारी

रुद्रपुर, एजेंसी। ट्रांजिट कैंप थाना क्षेत्र में एक महिला संदिग्ध हालात में फंदे पर लटकी मिली। आनन-फानन परिजन देर रात पुलिस को सूचना दिए बिना शव को अंतिम संस्कार के लिए श्मशान ले गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। पुलिस के अनुसार संजयनगर खेड़ा में बिलासी राय (55) अपने परिवार के साथ रहती थीं। मंगलवार शाम परिजन किसी समारोह में गए थे।

घर पर बिलासी अकेली थीं। जब परिजन लौटे तो बिलासी अपने कमरे में लोहे के कुंडे पर साड़ी के फंदे पर लटकी थीं। इसे देख परिजनों के हाथपांव फूल गए और शव को फंदे से उतारकर अंतिम संस्कार की रस्म में जुट गए। रात में ही परिजन शव को शिवनगर स्थित श्मशान घाट ले गए। रात करीब दो बजे थाना पुलिस को किसी ने महिला के अंतिम संस्कार की सूचना दी। एचएसओ भारत सिंह ने बताया कि सूचना पर टीम श्मशान घाट पहुंची और संदेह के आधार पर शव को मोर्चरी भिजवाया। परिजनों का कहना है कि बिलासी का बड़ा बेटा नशे के दलदल में फंस चुका है और आए दिन घर में कलेश कर उसके साथ दुर्व्यवहार करता रहता था। इसको लेकर बुजुर्ग अवसाद से गुजर रही थीं।

बैंक के बॉब में विलय की मांग को लेकर किया प्रदर्शन

हल्द्वानी, एजेंसी। नैनीताल बैंक के बैंक ऑफ बड़ोदा (बॉब) में विलय की मांग को लेकर बुधवार को नैनीताल बैंक के अधिकारी और कर्मचारियों ने अपनी-अपनी शाखाओं में काली पट्टी बांधकर विरोध जताया। क्षेत्रीय कार्यालय हल्द्वानी में नारेबाजी करते हुए धरना प्रदर्शन किया। लगातार प्रबंधन की उपेक्षा से खिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों ने क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में कामकाज के बाद धरना दिया और नारेबाजी की। इस दौरान कर्मचारी बैंक प्रबंधन के विरोध में बाहों में काली पट्टी बांधे रहे। वक्ताओं ने कहा कि जनवरी में नैनीताल बैंक ऑफिसर यूनियन के एक प्रतिनिधिमंडल ने सांसद अनिल बलूनी के नेतृत्व में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से भी मुलाकात की थी और वित्तमंत्री ने विलय संबंधी उचित कार्रवाई का भरोसा भी दिया था।

मांगों के समर्थन में कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

हरिद्वार, एजेंसी।
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ की ओर से मांगों के लिए जिला चिकित्सालय में प्रदर्शन किया गया। इस दौरान कार्यवाहक प्रमुख अधीक्षक से हुई वार्ता में कुछ मांगों पर सहमति बन गई, लेकिन कर्मचारियों का कहना है कि आंदोलन अभी जारी रहेगा।

बृहस्पतिवार को चतुर्थ श्रेणी राज्य कर्मचारी संघ के पूर्व घोषित आंदोलन कार्यक्रम के तहत काली फीती बांधकर कर्मचारियों ने जिला चिकित्सालय के बाहर नारे बाजी कर विरोध-प्रदर्शन किया। जिस पर कार्यवाहक मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. विकास दीप ने आंदोलनरत कर्मचारियों को वार्ता के लिए बुलाया। वार्ता में कई मांगों पर समझौता होने से सहमति बन गई, लेकिन अभी तक अन्य अधिकारियों ने वार्ता के लिए नहीं बुलाया। इससे कर्मचारियों ओर से आंदोलन जारी रखा जाएगा। जिसमें शुक्रवार को अधिकारियों को मांगों के लिए गुलाब के फूल भेंट किया जाएगा।

16 मार्च को सामूहिक अवकाश लेकर मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के गेट के बाहर धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इस मौके पर कार्यवाहक प्रमुख अधीक्षक डॉ. आरबी सिंह, डॉ. शशिकांत, डॉ. सुब्रत अरोड़ा, दिनेश धनोशी, सुनीता के अलावा कर्मचारी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष दिनेश लखेडा, प्रवक्ता राजेंद्र तेश्वर, ऑडिटर महेश कुमार, जिला मंत्री राकेश भंवर, मूलचंद चौधरी, सतीश आदि मौजूद रहे।

हरिद्वार पहुंचे राज्यसभा सांसद अनिल देसाई का स्वागत

हरिद्वार, एजेंसी। राज्यसभा सांसद और शिवसेना उद्धव बाला साहेब ठाकरे के राष्ट्रीय सचिव अनिल देसाई हरिद्वार पहुंचे। उन्होंने हरकी पैड़ी पर गंगा पूजन कर देश की उन्नति और सुख-समृद्धि की कामना की।

शिवसेना के प्रदेश प्रमुख गौरव कुमार, जिला प्रमुख अशोक कुमार शर्मा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने अनिल देसाई का स्वागत किया। अनिल देसाई ने कहा कि देश के अंदर अमन-चैन कायम रहे, इसको लेकर विशेष तौर पर मां गंगा से प्रार्थना की गई।

गर्जिया मंदिर के टीले को बचाने के लिए पौने छह करोड़ मंजूर, कैंची धाम में लगेंगे दो नए ट्रांसफार्मर

नैनीताल, एजेंसी।
रामनगर में गर्जिया मंदिर के टीले को बचाने के लिए शासन ने 579.11 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति दी है। गर्जिया मंदिर के मुख्य टीले को आपदा प्रबंधन के तहत कोसी नदी की बाढ़ से बचाव के लिए सुरक्षात्मक कार्य योजना के लिए वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है।

रामनगर में गर्जिया मंदिर के टीले के सुरक्षात्मक कार्य के लिए शासन ने 579.11 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति दी है। विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रामनगर स्थित गर्जिया देवी मंदिर के मुख्य टीले को आपदा प्रबंधन के तहत कोसी नदी की बाढ़ से बचाव के लिए सुरक्षात्मक कार्य योजना के लिए 579.11 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। वित्तीय स्वीकृति मिलने के बाद अब गर्जिया मंदिर के टीले का कार्य जल्द शुरू होगा। वहीं सिंचाई विभाग ने भी मंदिर के निर्माण के लिए निविदा निकाली है।

कैंची धाम में आने वाले भक्तों और पर्यटकों की सुविधा के लिए बिजली आपूर्ति दुरुस्त की जाएगी। ऊर्जा निगम 47.76 लाख से 400 केवी और 250 केवी के दो ट्रांसफर लगाने के साथ

11केवी की दो किलोमीटर लाइन बिछाने का कार्य जल्दी शुरू करेगा। विभाग ने कार्य के लिए टेंडर जारी करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

ऊर्जा निगम ने पर्यटक स्थलों पर निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए दो नए ट्रांसफार्मर लगाने का फैसला किया है। ऊर्जा निगम के अधीक्षण अभियंता नवीन मिश्रा का कहना है कि कैंची धाम में ऊर्जा निगम की ओर से अधिक पावर क्षमता वाले ट्रांसफार्मरों को लगाया जाना है। इसके लिए टेंडर जारी होने की तैयारी शुरू हो गई है।

पहाड़ों पर चल रही बसों का ऐसा है हाल, सोच-समझकर ही करें यात्रा; यहां मारपीट पर भी उतर रही सवारी

हल्द्वानी, एजेंसी।
सीएनजी वाहनों के मालिकों संग रोडवेज प्रबंधन से जुड़े लोगों की लापरवाही को लेकर रोडवेज कर्मचारी संयुक्त परिषद ने मोर्चा खोल दिया है। परिषद का कहना है कि पिछले दिनों एक सीएनजी बस रास्ते में गैस खत्म होने से बंद हो गई। यात्रियों ने निगम के परिचालक को घेर सारे रुपये वापस ले लिए, जबकि रुद्रपुर में सीएनजी मालिक की तरफ से रखे चालक के न आने पर सवारी परिचालक से मारपीट पर उतारू हो गई। परिषद की ओर दिए नोटिस में कहा गया है कि दूसरे संगठनों के दबाव में एक साल से भी कम समय में कर्मचारियों का पटल परिवर्तन किया जा रहा है। स्टेशन अधीक्षक और

वरिष्ठ स्टेशन प्रभारी पर भी तमाम आरोप लगाए। कहा कि बस स्टेशन में गंदगी फैली रहती है। नशेड़ी व अराजकतत्व सक्रिय रहते हैं, मगर कोई टोकने वाला नहीं है। परिषद ने कहा कि बस डायग्राम के हिसाब से संचालन करने के साथ अनुबंधित बस के खराब होने पर राजस्व का नुकसान उसके मालिक से वसूला जाए। संगठन पदाधिकारियों ने कहा कि 12 फरवरी को एआरएम से हुई समझौता वार्ता में जारी निर्देशों का अभी तक पालन नहीं करवाया गया। इस मामले में वार्ता बैठक बुलाई गई है।

जसपुर में सीएम पुष्कर सिंह, लाभार्थी सम्मान समारोह में किया प्रतिभाग; विकास कार्यों का लोकार्पण किया

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी।
ऊधमसिंह नगर के जसपुर पहुंचकर सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कृषि उत्पादन मण्डी समिति परिसर की ओर से आयोजित लाभार्थी सम्मान समारोह में प्रतिभाग किया।

आज मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ऊधमसिंह नगर के जसपुर में है। सीएम धामी ने कृषि उत्पादन मण्डी समिति परिसर जसपुर में आयोजित लाभार्थी सम्मान समारोह में प्रतिभाग किया। इस दौरान सीएम धामी ने नगर पालिका के भवन और करोड़ों रुपए की विकास योजनाओं का शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार तरक्की कर रहा है और इस बार भी पीएम नरेंद्र मोदी प्रचंड बहुमत से प्रधानमंत्री बनेंगे।

उन्होंने दावा किया कि उत्तराखंड तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है। सीएम ने सभी लोगों से आगामी चुनाव में भाजपा के पक्ष में मतदान करने का आग्रह किया। गढ़ी नेगी क्षेत्र को नगर पंचायत बनाने के लिए क्षेत्र वासियों ने यात्रा निकालकर मुख्यमंत्री का आभार जताया। इस दौरान कांग्रेस के विधायक आदेश चौहान कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए।

अवैध उपखनिज से लदे वाहन को ले जाने पर माफिया ने वन टीम का रास्ता रोका

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। हल्द्वानी में अवैध तरीक से उपखनिज ले जा रहे वाहन को पकड़ने के बाद रेंज कार्यालय ले जाने के दौरान खननमाफिया की एंट्री से बखेड़ा हो गया। खनन माफिया ने बीच सड़क वाहन खड़ा कर वन विभाग को अवैध उपखनिज से लदा वाहन नहीं ले जाने दिया।

हल्द्वानी में अवैध तरीके से उपखनिज ले जा रहे हाईवा को पकड़ने के बाद रेंज कार्यालय ले जाने के दौरान खननमाफिया की एंट्री से बखेड़ा हो गया। खनन माफिया ने बीच सड़क वाहन खड़ा कर वन विभाग को अवैध उपखनिज से लदा वाहन नहीं ले जाने दिया। फोर्स पहुंचने के बाद माफिया निकल गया। टीम ने हाईवा सीज कर हीरानगर गौला रेंज कार्यालय में खड़ा करवाने के बाद मुकदमा दर्ज कर लिया है।

वन विभाग की टीम को बृहस्पतिवार सुबह सूचना मिली कि बरेली रोड पर तीनपानी के पास एक स्टोन क्रशर के स्टॉक से उपखनिज अजीतपुर जा रहा है। एक रॉयल्टी पर वाहन दो-दो चक्कर मार रहे हैं। सूचना पर गौला रेंज की टीम मौके पर पहुंच गई। जैसे ही स्टॉक से हाईवा उपखनिज भरकर बाहर निकला तो टीम ने वाहन रोक लिया। माल की रायल्टी सुबह 7:53 बजे की कटी हुई थी जबकि वाहन स्टॉक से 10:59 बजे निकल रहा था।

टीम वाहन पकड़कर जैसे ही हीरानगर गौला रेंज के कार्यालय लाने लगी तो माफिया अपनी कार में पहुंच गया। उन्होंने हाईवा के सामने अपना वाहन लगा दिया। जैसे ही वन टीम उसे लेकर आगे बढ़ी तो एफटीआई के सामने माफिया ने दोबारा अपना वाहन हाईवा के सामने लगा दिया। इसके बाद उन्होंने हाईवा का प्रेशर पाइप निकाल दिया। इस दौरान वनकर्मियों की माफिया से तकरार हो गई। बाद में एक स्टोन क्रशर का मैनेजर भी मौके पर पहुंचा। मामला उच्च अधिकारियों तक पहुंचा। उन्होंने वन विभाग की और टीम को मौके पर भेजा। वनकर्मियों के पहुंचने पर माफिया कार में भाग निकला।

अब लोक सेवा आयोग हर साल कराएगा पीसीएस भर्ती परीक्षा, दो साल बाद जारी विज्ञप्ति में मिलेगा ये फायदा

हरिद्वार, एजेंसी। पीसीएस की परीक्षाएं कई-कई साल में होती हैं। इससे युवाओं को उत्तराखंड में पीसीएस बनने के लिए वर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। बुधवार को भी दो साल बाद पीसीएस के 189 पदों पर भर्ती निकाली गई। वर्ष 2021 की पीसीएस भर्ती भी पूरी नहीं हो सकी है।

उत्तराखंड में पीसीएस बनने के लिए अब युवाओं को कई-कई साल का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। आयोग की ओर से हर साल पीसीएस की भर्ती परीक्षा कराई जाएगी। दो साल बाद जारी हुई विज्ञप्ति में भी अभ्यर्थियों को उम्र में दो साल की छूट मिलेगी। ताकि, दो साल भर्ती नहीं होने पर उम्र निकलने वाले युवाओं को भी मौका मिल सके।

राज्य में लोक सेवा आयोग की ओर से पीसीएस के रिक्त पदों पर भर्ती कराई जाती है, लेकिन पीसीएस की परीक्षाएं कई-कई साल में होती हैं। इससे युवाओं को उत्तराखंड में पीसीएस बनने के लिए वर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। बुधवार को भी दो साल बाद पीसीएस के 189 पदों पर भर्ती निकाली गई। वर्ष 2021 की पीसीएस भर्ती भी पूरी नहीं हो सकी है। उसमें अभी अभ्यर्थियों का इंटरव्यू बाकी है।

मगर, अब लोक सेवा आयोग की ओर से निर्णय लिया गया है कि हर साल पीसीएस के रिक्त पदों पर भर्ती निकाली जाएगी। एक साल में ही भर्ती को पूरा भी कर लिया जाएगा। इससे जहां युवाओं को पीसीएस अधिकारी बनने का अवसर हर साल मिलेगा, वहीं पीसीएस के रिक्त पद भी अधिक समय खाली नहीं रहेंगे।

आईजीआई एयरपोर्ट पर विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने के लिए एलजी वीके सक्सेना ने दी मंजूरी, मिलेंगे ये फायदे

लालफीताशाही होगी कमः एलजी ने एयरपोर्ट हब पर एफटीजेड/एसईजेड विकसित करने के महत्व को ध्यान में रखते हुए

- मांगी गई अनुमतिः डीआईएएल ने आईजीआई एयरपोर्ट पर 2.02 हेक्टेयर (5 एकड़) क्षेत्र में दो बहु उत्पाद एसईजेड की स्थापना का प्रस्ताव रखा है
- नागरिक उड्डयन मंत्रालय, दिल्ली को पायलट एयर कार्गो हब के रूप में पहचान दिलाने के लिए प्रयासरत है.

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी को बड़ा आर्थिक बढ़ावा देने वाले एक कदम में एलजी वीके सक्सेना ने आईजीआई एयरपोर्ट पर विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड)/मुक्त व्यापार क्षेत्र (एफटीजेड) की स्थापना के लिए मंजूरी दे दी है. करीब पांच एकड़ क्षेत्र में कार्गो इन्फ्रास्ट्रक्चर और अन्य संबद्ध गतिविधियों से संबंधित, यह एसईजेड/एफटीजेड के शुरू हो जाने के बाद लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को बड़े पैमाने पर बढ़ावा मिलेगा. साथ ही रोजगार पैदा करने के अलावा आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देगा.

लालफीताशाही होगी कमः एलजी ने एयरपोर्ट हब पर एफटीजेड/ एसईजेड विकसित करने के महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव को मंजूरी दी. एसईजेड निर्यात, भंडारण, व्यापार और हवाईअड्डा परिसर में संबंधित सेवाओं के प्रावधानों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों का निर्माण करेगा. यह उद्यमियों को कर लाभ प्रदान करने के अलावा लाइसेंसिंग, मंजूरी और अन्य नियमों के संदर्भ में प्रक्रियात्मक जटिलताओं को उदार बनाएगा और लालफीताशाही को कम करेगा.

नागरिक उड्डयन मंत्रालय, दिल्ली को पायलट एयर कार्गो हब के रूप में पहचान दिलाने के लिए प्रयासरत है. इसके लिए टियर 1, 2 और 3 स्तर के बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है. जबकि, दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डीआईएएल) ने पहले ही एयरपोर्ट पर दो कार्गो टर्मिनल और लॉजिस्टिक्स केंद्र विकसित करके टियर 1 और 2 बुनियादी ढांचे का विकास किया है. हवाईअड्डा परिसर में एसईजेड/एफटीजेड बनने के बाद यह टियर 3 का स्तर हासिल कर लेगा.

मांगी गई अनुमतिः डीआईएएल ने आईजीआई एयरपोर्ट पर 2.02 हेक्टेयर (5 एकड़) क्षेत्र में दो बहु उत्पाद एसईजेड की स्थापना का प्रस्ताव रखा है और एसईजेड नियम, 2006 के तहत, दिल्ली सरकार की सिफारिश के लिए अनुरोध किया है. इसके बाद उद्योग विभाग, जीएनसीटीडी (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार) ने डीडीए से मंजूरी मांगी गई. चूंकि दिल्ली के मास्टर प्लान के अनुसार, दिल्ली का विकास डीडीए के दायरे में आता है, इसलिए उद्योग विभाग ने डीडीए को 2023 में लिखे पत्र से इस बारे में अपना इनपुट देने का अनुरोध किया कि क्या मास्टर के अनुसार, दिल्ली एयरपोर्ट पर इस तरह के बुनियादी ढांचे के विकास की अनुमति है.

भारत सरकार को किया जाएगा सूचितः डीडीए ने अपने पत्र दिनांक के माध्यम से, एमपीडी-2021 में निर्धारित परिवहन के लिए यातायात और विकास नियंत्रण मानदंडों पर विचार करने के बाद, भारतीय हवाईअड्डा प्राधिकरण द्वारा निर्धारित इस संबंध में विनियमों के अधीन अपनी सहमति व्यक्त की. एलजी की मंजूरी और डीडीए की टिप्पणियों के साथ जीएनसीटीडी की सैद्धांतिक सहमति/समझौता, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार को भी सूचित किया जाएगा.

मायावती के गुंडों के खिलाफ पीएमओ तक लड़ेंगे लड़ाई, चुनाव आयोग से शिकायत- अशोक सिंह

- एसवीकेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रेस क्लब में की प्रेस वार्ता

बोले, गुंडागर्दी खत्म करने के लिए समाज विकास क्रांति पार्टी पूरे देश में लड़ेगी लोकसभा चुनाव

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

समाज विकास क्रांति पार्टी (एसवीकेपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंह ने अपने ऊपर हुए जानलेवा हमले के बाद सुरक्षा की मांग को लेकर दिल्ली प्रेस क्लब में पत्रकारों से वार्ता की, इस दौरान उन्होंने अपने और पार्टी समर्थकों पर हुए हमले को लेकर बात की, अशोक सिंह ने बसपा सुप्रीमो मायावती पर खुलकर आरोप लगाते हुए कहा कि वह उनके बहुत सारे राज जानते हैं और पोल खुलने के भय से उन्होंने एसवीकेपी के राष्ट्रीय महासचिव पर अपने गुंडों से हमला कराया है। इस दौरान उन्होंने कहा कि उनके ऊपर हुए जानलेवा हमले के बाद भी पुलिस एफआईआर दर्ज नहीं कर रही है और वह अपनी सुरक्षा के लिए पीएमओ तक अपनी आवाज उठाएंगे। साथ ही इस गुंडागर्दी को खत्म करने और देश को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए उनकी पार्टी पूरे देश में लोकसभा चुनाव लड़ेगी।

समाज विकास क्रांति पार्टी (एसवीकेपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पुलिस के रवैये के खिलाफ अपना आक्रोश प्रकट करते हुए कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री व बसपा सुप्रीमो के साथ वह काफी समय तक काम कर चुके हैं और उनके बहुत सारे राज जानते हैं। नई पार्टी बनाने पर अपना नुकसान देखते हुए उनकी तरफ से आए दिन धमकियां मिल रहीं हैं। इसलिए ही उनकी पार्टी के महासचिव सुनील सक्सेना पर ग्रेटर नोएडा में हमला कराया गया। अशोक सिंह ने कहा कि चुनाव में उतरने से रोकने के लिए उन्हें लगातार धमकियां मिल रही है, लेकिन पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। जबसे उन्होंने समाज विकास क्रांति पार्टी का गठन किया है, तभी से उनको चुनाव में उतरने से रोकने की साजिश रची जा रही है। लेकिन वह रुकने वाले नहीं हैं। एसवीकेपी देश के सभी राज्यों में लोकसभा चुनाव लड़ेगी और देश को भय मुक्त और हिंदू राष्ट्र बनाएगी।

बता दें कि ग्रेटर नोएडा में हुए हमले के बाद किसी तरह की कोई कार्रवाई ना होने को लेकर अशोक सिंह गृह मंत्रालय तक अपनी आवाज उठा चुके है। संसद मार्ग से जंतर-मंतर तक पैदल मार्च भी निकाल चुके है, और चुनाव आयोग में लिखित ज्ञापन भी दे चुके है। अशोक सिंह ने कहा कि यदि उन्हें जल्द ही सुरक्षा नहीं मिली तो आने वाले समय में वह सड़कों पर उतरेंगे और उनके खिलाफ रची जा रही साजिश को जनता तक पहुंचाएंगे। इस दौरान सुनील सक्सेना , राज कपूर समेत अन्य पार्टी नेता मौजूद रहे।

केजरीवाल के बयान पर कपिल मिश्रा का हमला

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) का नोटिफिकेशन जारी कर देने के बाद देश में अब सीएए लागू हो गया है. सीएए के अमल में आ जाने के बाद अब बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आए गैर मुस्लिम अल्पसंख्यकों को भारतीय नागरिकता मिलने का रास्ता साफ हो गया है. इस मसले को लेकर साल 2020 में देशभर में सीएए के खिलाफ प्रदर्शन हुए थे. और अब फिर सीएए के लागू होने के बाद राजनीति गर्मा गई है. जहां विपक्ष इसे गैर संवैधानिक बता रहा है वहीं बीजेपी इसकी जरूरत बताती नहीं थक रही. इसी कड़ी में सीएए को लेकर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के रुख पर कपिल मिश्रा ने हमला बोला है.

कपिल मिश्रा का कहना है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की सोच पाकिस्तानी है और उनकी हरकत बेहद ही शर्मनाक है. उनका कहना है कि जो सिख पाकिस्तान, अफगानिस्तान से अत्याचार सहकर आए हैं अस्तित्व बचाकर भारत आए हैं. हिंदू बौद्ध जैन परिवार जो वहां से यहां आए हैं उनकी नागरिकता तो पाकिस्तानी हो सकती है, लेकिन आपकी तो सोच पाकिस्तानी है. उन्होंने केजरीवाल से कहा कि आपने जो कल बयान दिया उससे पता चलता है कि आप इन लोगों से कितनी नफरत करते हैं.

कपिल मिश्रा ने कहा कि केजरीवाल इन हिंदू और सिख परिवारों से कितनी नफरत करते हैं. आपके इस बयान से पता चल गया. आप ने बर्मा से आए रोहिंग्याओं को तो कभी नहीं कहा कि आप दूसरे देश से आए हैं, जो बांग्लादेश से आए उनको तो आपने कभी कुछ नहीं कहा. जबकि उन परिवारों को आपका विधायक अमानतुल्लाह खान 10000 रुपए और राशन दे रहा है और बाद में इनके वोटर कार्ड और आधार कार्ड बनेंगे.

कपिल मिश्रा ने अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते हुए कहा कि आप अपने आप को पढ़ा लिखा कहते हैं, लेकिन कानून में यह साफ लिखा है की जो लोग 2014 तक भारत आ गए हैं उन्हीं की नागरिकता का यह कानून है और आप यह कह रहे हैं कि 3- 4 करोड़ लोग आ जाएंगे. उन्होंने अरविंद केजरीवाल से पूछा कि इनसे आपकी दुश्मनी क्या है. मैं हाथ जोड़कर अरविंद केजरीवाल से कहता हूं कि इन लोगों ने बहुत जुल्म सहे हैं वहां पर इन्होंने अपनी माता, बेटियों की इज्जत धर्म आबरू बचाकर यहां आए हैं. कपिल मिश्रा ने कहा कि आपने देखा नहीं की केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पूरी गुरु ग्रंथ साहिब जी को लेकर आए थे आप क्या चाहते हैं वह नहीं आते. ये सभी हिंदू सिख जैन परिवार आपके घर से 1 किलोमीटर दूर ही रुके हुए हैं लेकिन आप इनसे इतनी नफरत करते हैं कि कभी इनसे मिलने नहीं गए. केजरीवाल जी आपको शर्म आनी चाहिए आपका व्यवहार बहुत ही शर्मनाक है.

अदालत ने सीएम की याचिका पर फैसला सुरक्षित रखा

प्रात: किरण संवाददाता

सीएम अरविंद केजरीवाल ने कथित आबकारी नीति में घोटाले को लेकर दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में ईडी की शिकायत पर जारी समन को सत्र अदालत में चुनौती दी थी। अदालत ने शुक्रवार को केजरीवाल की याचिका पर सुनवाई की और फैसला सुरक्षित रख लिया। सीएम केजरीवाल ने मामले में ईडी की शिकायत पर मजिस्ट्रेट अदालत द्वारा उन्हें जारी किए गए दो समन को चुनौती दी है। ईडी ने शिकायत दर्ज की थी कि सीएम केजरीवाल ने कथित शराब नीति से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में उसके समन का पालन नहीं किया। राउज एवेन्यू कोर्ट के विशेष न्यायाधीश राकेश सयाल ने गुरुवार को एक पुनरीक्षण याचिका पर दोनों पक्षों की दलीलें सुनी। सीएम केजरीवाल ने ईडी की शिकायत पर उन्हें समन जारी करने के अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट (एसीएमएम) दिव्या मल्होत्रा के आदेश के खिलाफ दो याचिकाएं दायर की। 7 मार्च को दूसरा समन जारी किया गया था और मामले को 16 मार्च को सुनवाई के लिए रखा था। वरिष्ठ वकील रमेश गुप्ता और वकील राजीव मोहन शुक्रवार को सीएम केजरीवाल और अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) एस.वी. राजू एजेंसी की ओर से पेश हुए। सीएम केजरीवाल को शनिवार को मजिस्ट्रेट अदालत के सामने पेश होना है। वकील रमेश गुप्ता ने अदालत से याचिकाकर्ता सीएम केजरीवाल को छूट देने का आग्रह किया। उन्होंने अदालत में दलील दी कि ईडी केवल प्रचार के लिए दिल्ली मजिस्ट्रेट अदालत के समक्ष उनकी व्यक्तिगत मौजूदगी की मांग कर रही है। उनकी व्यक्तिगत मौजूदगी से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। वहीं ईडी की तरफ से पेश हुए एस.वी. राजू ने सीएम केजरीवाल के वकीलों की दलीलों को विरोध किया। उन्होंने कहा कि सीएम केजरीवाल भले ही आप का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन वे खुद को कानून के ऊपर मानते हैं। सीएम केजरीवाल ईडी और अदालत के सामने पेश होने के बजाए उद्घाटन व राजनीतिक कार्यक्रमों को तरजीह देते हैं। ऐसे में उन्हें व्यक्तिगत पेशी से छूट नहीं देनी चाहिए।

हर्ष मल्होत्रा की उम्मेदवारी से खुश हुए वर्कर : गुरमीत सिंह सूरा

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश भाजपा से महामंत्री हर्ष मल्होत्रा को पूर्वी दिल्ली से लोक सभा प्रत्याशी बनाए जाने पर कार्यकताओं में उठी खुशी की लहर है। यह कहना है पश्चिमी दिल्ली भारतीय जनता पार्टी के सह प्रभारी सरकार गुरमीत सिंह सूरा का। गुरमीत ने कहा, जमीनी स्तर से जुड़े हुए एक कार्यकर्ता को इतने बड़े स्तर पर प्रत्याशी बनाना ऐसा केवल भाजपा में संभव है। गुरमीत सूरा कहते हैं लोकसभा चुनाव में इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनडीए के लिए 400 पार का लक्ष्य सेट कर दिया है, जनता को मोदी जी पर पूरा विश्वास हैं, क्योंकि पीएम मोदी ने जो कहा उसे हमेशा पूरा किया! बीजेपी अपने दम पर ही 370 से ज्यादा सीटें जीत कर ले आएगी ऐसा सरदार गुरमीत सिंह सूरा ने बताया। गुरमीत कहते हैं ओपिनियन पोल ने सभी को हैरान कर दिया है। ये सर्वे न्यूज 18 इंडिया द्वारा किया गया है। सर्वे के आंकड़े बताते हैं कि अगर आज चुनाव हो जाएं तो एनडीए का आंकड़ा 411 तक चला जाएगा, वहीं बीजेपी को अपने दम पर भी 350 सीटें मिलेंगी।

कर्ज उतारने के लिए बन गया झपटमार, गिरफ्तार

नई दिल्ली। कीर्ति नगर थाना पुलिस ने 14 मार्च को एक बदमाश को रमेश नगर से गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान रवि के रूप में हुई है। वह चिकन की दुकान पर काम करता था। जहां से मिलने वाली सैलरी से वह संतुष्ट नहीं था। वहीं उसके ऊपर कर्ज भी काफी था। ऐसे में वह लुटेरा बन गया और झपटमारी करने लगा। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि नौ मार्च की रात करीब 10.5 बजे लूट की सूचना मिली। पीड़ित ने बताया कि वह अपने घर रमेश नगर जा रहा था। इसी दौरान किसी ने उसका मोबाइल झपट लिया और फरार हो गया। पुलिस ने केस दर्ज कर सभी उपलब्ध कैमरों के सीसीटीवी फुटेज का विश्लेषण किया और आरोपी की पहचान कर उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपित ने बताया कि उसने मोबाइल हरमीत सिंह की मदद से किसी को बेच दिया। पुलिस ने हरमीत को गिरफ्तार किया और उसकी निशानदेही पर दीपांशु अरोड़ा को पकड़ लिया।

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पहला शुद्धिपत्र

टेंडर नं. **30-ELECT-55-T-2023-24-E3**

कार्य का नामः– बीआरएसक्यू रेलवे स्टेशन पर केंद्रीकृत नियंत्रण और कमांड सेंटर (सी–4) के प्रावधान के संबंध में विद्युत कार्य।

टेंडर नं.:- 30-ELECT-55-T-2023-24-E3		
पहले प्रकाशित		संशोधन
कार्य का नाम	बीआरएसक्यू रेलवे स्टेशन पर केंद्रीकृत नियंत्रण और कमांड सेंटर (सी–4) के प्रावधान के संबंध में विद्युत कार्य।	प्रशासनिक कारणों से रद्द किया गया
निविदा की अनुमानित लागत	रु. 109.38 लाख	
कार्यालय का पता	वरिष्ठ मंडल विधुत अभियता/जी, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली	
बयाना राशि	रु. 204700.00	
निविदा निवेदन की दिनांक व समय	19.03.2024, 12.00 Hrs.	
निविदा खोलने की दिनांक व समय	19.03.2024, 12.00 Hrs.	

उपर्युक्त निविदा के निविदा दस्तावेज को संशोधित किया गया है, कृपया **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध संशोधित दस्तावेजों को देखें और तद्नुसार अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें। **826/24**

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

लूट का विरोध करने पर तेजधार हथियार से हमला

- बबलू ने बताया कि 13 मार्च की शाम काम करने के बाद वह घर जा रहे थे।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

द्वारका नॉर्थ इलाके में लूटपाट का विरोध करने पर बुधवार को बदमाशों ने एक युवक पर तेजधार हथियार से हमला कर दिया। बदमाश पीड़ित बबलू से नकदी और दस्तावेज लेकर फरार हो गए। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पीड़ित बबलू अपने परिवार के साथ रघुवीर नगर में रहता है और मजदूरी करता है। बबलू ने बताया कि 13 मार्च की शाम काम करने के बाद वह घर जा रहे थे। इसी दौरान रास्ते में दो युवकों ने उन्हें रोक लिया। एक युवक उनकी पेंट की जेब से पैसे निकालने लगा। विरोध करने पर बदमाशों ने उस पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। बदमाशों ने उनके जेब से सात सौ रुपये और आधार कार्ड निकाल लिए। पीड़ित के शोर मचाने पर दोनों बदमाश वहां से फरार हो गए। शोर सुनकर उनके पास आए कुछ लोगों की मदद से पीड़ित ने पुलिस को मामले की सूचना दी।

नाम बदलकर नौकरी के लिए थाईलैंड जा रहे युवक को पकड़ा, एजेंट भी गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नाम बदलकर नौकरी करने थाइलैंड जा रहे एक युवक को पुलिस ने नौ मार्च को एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया। इमिग्रेशन काउंटर पर छानबीन में पता चला कि आरोपी ने अलग-अलग जानकारी देकर दो भारतीय पासपोर्ट बनवा रखे हैं। इस मामले में गोरखपुर निवासी एक एजेंट को भी पकड़ा गया है। रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। डीसीपी उषा रंगनानी के अनुसार, आरोपी पवन तिवारी ने बताया कि वह पहली बार वर्ष 2008 में थाईलैंड गया था। वीजा अवधि समाप्त होने के चलते उसे 2015 में डिपोर्ट उसके पासपोर्ट को ब्लैकलिस्ट कर दिया गया था। भारत आने के बाद वह दोबारा नौकरी के लिए थाईलैंड जाना चाहता था। इस दौरान गोरखपुर में उसकी मुलाकात मनोज नामक एक एजेंट से हुई। उसने अलग नाम और जन्मतिथि से आधार कार्ड बनवाया और इसकी मदद से उसका दूसरा पासपोर्ट बन गया। इसके बाद वह 2018 में थाईलैंड चला गया। 2020 में वह वापस आया। इस बार भी उस पर ज्यादा समय तक रहने के चलते तीन वर्ष का प्रतिबंध लगाया गया। अवधि पूरे होने बाद वह फिर दूसरे पासपोर्ट से थाईलैंड जा रहा था, लेकिन पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसकी निशानदेही पर बुधवार को पुलिस टीम ने एजेंट मनोज जायसवाल को भी गोरखपुर से गिरफ्तार किया। वह टिकट ट्रेवल एजेंट का काम करता है।

गुरुद्वारा मोती नगर द्वारा दिल्ली फतेह दिवस मनाया गया

नई दिल्ली। गुरुद्वारा श्री गुरू सिंह सभा, मोती नगर द्वारा दिल्ली फतेह दिवस मनाया गया, जो कि 15 मार्च 1783 को सिख जरनैलों द्वारा की गई दिल्ली फतेह को समर्पित था। इस अवसर पर आयोजित विशेष गुरमति समागम के दौरान बीबी पुष्पिंदर कौर खालसा के ढाडी जत्थे ने ढाडी वारें गाकर लोगों के सामने दिल्ली फतेह दिवस का इतिहास पेश किया। इसके साथ ही भाई वाहेगुरु सिंह के कीर्तनी जत्थे ने गुरबाणी कीर्तन गायन किया। गुरुद्वारा साहिब के अध्यक्ष रविंदर सिंह बिट्टू और महासचिव राजा सिंह ने कार्यक्रम में सेवाएं देने वाली सभी शख्सियतों को सम्मानित करते हुए लोगों को नए नानकशाही वर्ष की शुरूआत की बधाई दी। भाई बीबा सिंह खालसा स्कूल के मैनेजर डॉ. परमिंदर पाल सिंह ने मंच सचिव की भूमिका निभाते हुए श्रद्धालुओं को दिल्ली फतेह दिवस के इतिहास के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ. परमिंदर पाल सिंह ने कहा कि दिल्ली की संगत सदैव बाबा बघेल सिंह की ऋणी रहेगी। क्योंकि बाबा बघेल सिंह और उनके साथी सेनापतियों बाबा जस्सा सिंह अहलूवालिया, बाबा जस्सा सिंह रामगढ़िया, बाबा महा सिंह शुकरचक्किया और बाबा तारा सिंह घेबा ने दिल्ली पर फतेह प्राप्त करके लाल किले पर केसरी निशान फहराया था।

गैंगस्टर काला जठेड़ी के 3 शार्प शूटर गिरफ्तार, बड़ी वारदात को देने जा रहे थे अंजाम

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने गैंगस्टर काला जठेड़ी गैंग के 3 शार्प शूटर को गिरफ्तार किया हैं. इनके पास से 2 पिस्टल और 7 कारतूस बरामद किए गए हैं. पुलिस के अनुसार, सूचना मिली थी कि काला जठेड़ी गैंग के गुर्गे रिठाला में किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने जा रहे हैं. इसकी सूचना पर पुलिस की जॉइंट टीम ने रिठाला गांव की एक इमारत में छापेमारी कर तीनों को गिरफ्तार किया है. पुलिस की पूछताछ में तीनों ने स्वीकार किया कि वो गैंगस्टर काला जठेड़ी के लिए काम करते हैं. डीसीपी डॉ. गुरइकबाल सिंह सिद्धू ने बताया कि पकड़े गए आरोपियों की पहचान 32 साल के मनदीप उर्फ मोनू, 22 साल के हरदीप और 45 साल के सुनील उर्फ राज के रूप में हुई है. तीनों दिल्ली, हरियाणा और पंजाब के रहने वाले हैं. पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि काला जठेड़ी के तीन सदस्य रिठाला गांव में है. अगर समय रहते कार्रवाई की जाती है तो इन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है. सूचना के आधार पर तुरंत एक संयुक्त पुलिस टीम का गठन किया गया और रिठाला गांव में छापेमारी की गई. डीसीपी ने बताया कि छापेमारी के दौरान पुलिस ने एक इमारत से तीनों को पकड़ा है. पूछताछ के दौरान आरोपियों ने खुलासा किया कि वो काला जठेड़ी गिरोह के लिए काम करते हैं और अपने हैंडलर के निदेशों पर अपराधिक वारदातों को अंजाम देते हैं. फिलहाल पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ई–नीलामी हेतु सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक / माल भाड़ा, दिल्ली डिवीजन, उत्तर रेलवे, रेलवे बोर्ड के पत्र सं. 2022 / टीसी (एफएम) / 10 / 04 दिनांक 13.06.2022, के अनुसार दिल्ली मंडल के विभिन्न स्टेशनों से चलने वाली निम्नलिखित ट्रेनों में एसएलआर और पार्सल वान (राउंड ट्रिप के आधार पर) के स्थान को 02 वर्षो के पट्टे पर देने के लिए आईआरईपीएस के ई–नीलामी मॉडयूल के माध्यम से बोलियां आमंत्रित की जाती है:–

क्रम सं	ई–नीलामी के आरम्भ होने की तिथि तथा समय	एस्सेट्स जिनकी नीलामी की जानी है
1.	20.03.2024 को 10:30 बजे	12191 (F1, F2 & R1), 12330 (F1), 12457 (F1, F2 & R1), 12908 (F1), 12918 (F1), 12963 (F1), 14041 (R1), 14316 (F1), 14507 (F1, F2 & R1), 15035 (F1 & R1), 19338 (F1), 20914 (F1), 20946 (F1), 20958 (F1), 22429 (F1), 22463 (F1)
2.	21.03.2024 को 10:30 बजे	12066 (F1), 12428 (F1), 12646 (F1), 14731 (F1 & R1), 15060 (F1 & R1), 20408 (F1), 20473 (F1 & R1), 20488 (F1), 22168 (F1 & F2), 22950 (F1), 22986 (F1)
3.	22.03.2024 को 10:30 बजे	12005 (F1), 12038 (F1), 12148 (R1), 12444 (F1), 12481 (F1, F2 & R1), 14714 (F1), 22421 (F1, F2 & R1)
4.	26.03.2024 को 10:30 बजे	01 LVPH (24 टन) राउंड ट्रिप पर प्रत्येक गाडी में - 12226/12225, 12236/12235, 12284/12283, 12425/12426, 12432/12431, 12442/12441, 12445/12446, 12488/12487, 14033/14034, 22412/22411, 22420/22419, 22428/22427, 22429/22430, 22434/22433, 22460/22459 तथा 01 VP (23 टन) राउंड ट्रिप पर गाडी संख्या 22418/22417
5.	27.03.2024 को 10:30 बजे	12284 (F1), 12424 (F1), 14014 (F1), 14303 (F1 & R1), 14305 (F1 & R1), 14331 (F1, F2 & R1), 14545 (FI, F2 & R1), 22168 (R1), 22418 (F1), 22654 (F1)
6.	28.03.2024 को 10:30 बजे	12011 (F1), 12017 (F1), 12029 (F1), 12040 (F1), 12148 (F1 & F2), 12382 (F1), 12425 (F1) 12432 (F1), 12455 (F1), 12562 (F1), 14041 (F1), 14553 (F2), 15035 (F2), 22454 (F1, F2 & R1)
7.	01.04.2024 को 10:30 बजे	04304 (F1, F2 & R1), 12013 (F1), 12015 (F1), 12031 (F1), 12034 (F1), 12448 (F1), 12459 (F1), 12916 (F1), 12986 (F1), 22414 (F1), 22472 (F1, F2 & R1), 22806 (F1)
8.	02.04.2024 को 10:30 बजे	12045 (F1), 12265 (F), 12754 (F1), 14152 (F1), 14164 (F1), 14681 (F1), 20938 (F1 & R1), 22401 (F1)

महत्वपूर्ण सूचनाः 1. ई–नीलामी के विभिन्न पहलुओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए इच्छुक बोलीदाताओं को **https://www.ireps.gov.in/html/helpdesk/learning_centre.html.** (e-Auction leasing section). पर जाने की सलाह दी जाती है।

2. धरोहर राशि जमा (ईएमडी): नीलामी के दौरान कुल संविदात्मक बोली मूल्य का 5% ऑनलाइन जमा किया जाना है। सफल बोलीदाता की ईएमडी सुरक्षा जमा के रूप में रखी जाएगी।

3. रेलवे प्रशासन किसी भी समय इन निविदाओ / अनुबंधों को समाप्त करने का सम्पूर्ण अधिकार रखता है या इनके संबंध में किसी संशोधन अथवा अतिरिक्त नियमो और शर्तो के साथ इन निविदाओं अथवा अनुबंधो के बीच में ही समाप्त करने अथवा जारी रखने के संबंध में, जो की इन ट्रेनों के जारी रहने अथवा समाप्त होने कि स्थिति पर निर्भर करता है। **849/2024**

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

द्वारका में इनामी बदमाश एनकाउंटर के बाद साथी के साथ गिरफ्तार, डकैती के मामले में था वांटेड़

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में अपराधियों के हौसले बुलंद है आए दिन एक के बाद एक आपराधिक वारदातों को अंजाम देने के बाद ये कई बार पुलिस के सामने पड़ जाने पर भी नहीं डरते है और पुलिस पर गोली चला देते है.शुक्रवार को दिल्ली के द्वारका के धूल सिरस गांव में दो लाख का इनामी बदमाश जो 3 करोड़ की डकैती में वांछित था पुलिस एनकाउंटर केबाद गिरफ्तार कर लिया गया. 3 करोड़ की डकैती में वांटेड मिराज एनकाउंटर के बाद अरेस्ट शुक्रवार को दिल्ली में बड़ा एनकाउंटर हुआ. जिसमें 3 करोड़ की डकैती में वांछित और दो लाख का इनामी बदमाश बांग्लादेशी मिराज आखिरकार पुलिस के हत्थे चढ़ गया. शुक्रवार तड़के द्वारका इलाके के धूल सिरस गांव में क्राइम ब्रांच की टीम ने एनकाउंटर के बाद मिराज और उसके साथी को पकड़ लिया. इस दौरान मिराज के पैर में गोली भी लगी.

दरअसल बांग्लादेशी अपराधी मिराज वही शातिर अपराधी है जिसे 3 करोड़ की डकैती को अंजाम दिया था और इस पर 2 लाख का इनाम भी था. इस एनकाउंटर को द्वारका इलाके में सुबह-सुबह अंजाम दिया गया. इसने दिल्ली में लगभग आधा दर्जन डकैती की वारदातों को अंजाम दिया था और इसी वजह से यह पुलिस की लिस्ट में वांटेड था. इस बदमाश के पीछे क्राइम ब्रांच काफी समय से लगी थी और क्राइम ब्रांच को एक पुख्ता जानकारी मिली थी कि वो इस इलाके में आने वाला है और इस जानकारी के मिलने के बाद क्राइम ब्रांच की टीम ने जाल बिछाया और इस बदमाश को पहले गिरफ्तार करने की कोशिश की लेकिन मिराज को जब पुलिस वालों के द्वारा घिरे होने की भनक लग गई तो उसने पुलिस वालों पर गोली चला दी. जवाबी कार्रवाई में उसे गोली लगी और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है. पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार गोली उसके पैर में लगी.

क्राइम ब्रांच के एडिशनल कमिश्नर संजय भाटिया से मिली जानकारी के अनुसार क्राइम ब्रांच की पश्चिमी रेंज 2 के सदस्यों को इस बदमाश के धूल सिरस गांव में अपने साथियों के साथ आने की सूचना मिली थी. इसके बाद टीम ने जाल बिछाया और बदमाशों को घेर लिया. पहले पुलिस वालों ने उसे सरेंडर करने के लिए कहा लेकिन सरेंडर करने की बजाय उसने पुलिस वालों पर फायरिंग शुरू कर दी. बदमाशों की एक गोली इंस्पेक्टर अक्षय कुमार के बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी और फिर पुलिस वालों ने अपने बचाव में गोली चलाई तो एक गोली मिराज के पैर में लगी मिराज के साथ-साथ उसके साथी साहिद को भी पुलिस ने पकड़ लिया. मिराज और उसके साथी के पास से दो हथियार भी बरामद किए गए हैं. पिछले साल अशोक विहार इलाके में मिराज और उसके साथी ने एक कारोबारी के घर में घुसकर 3 करोड़ की डकैती को अंजाम दिया था. इस दौरान उसने कारोबारी के पूरे परिवार को बंधक बना लिया था. कारोबारी की पिटाई भी की थी तब से अलग-अलग एजेंसियां मिराज और उसके साथी को पकड़ने में जुटी हुई थी. यह भी आशंका जताई जा रही थी की वारदात को अंजाम देने के बाद यह बदमाश बांग्लादेश भाग गया. पुलिस की टीम लगातार इसकी गिरफ्तारी में जुटी हुई थी. फिलहाल पुलिस टीम इसके बाकी साथियों की तलाश कर रही है और गिरफ्तार किए गए बदमाशों से पूछताछ कर रही है.

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ई–नीलामी हेतु सूचना

भारत के राष्ट्रपति की तरफ से वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर रेलवे, अंबाला छावनी द्वारा मंडल के निम्नलिखित स्टेशनों पर पार्किंग के ठेके आवंटित करने हेतु ई–नीलामी रेलवे वेबसाइट **www.ireps.gov.in** के माध्यम से बोली आमंत्रित की जा रही है। धरोहर राशि बोली की 5% होगी तथा बोली कम से कम बोली मूल्य से 0.2% बढ़ा कर लगानी होगी। आवंटित की जाने वाले पार्किंग ठेकों को विवरण निम्नलिखित है।

क्र. सं.	नीलामी कैटलॉग सं.	लॉट सं. / श्रेणी	कार्य का विवरण	रेट यूनिट	ट्रिप्स / दिन	नीलामी प्रारंभ तिथि व समय	नीलामी बंद होने की तिथि व समय
1	UMB-Parking0324	Parking- UMB-CDG-MX-75-24-1 (Parking-Mixed)	चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन (पंचकुला साइड) 2nd एंट्री पर दो पहिया और चार पहिया (नॉन कॉमर्शियल) का संयुक्त ठेका	कुल लाइसेंस फीस	91	25.03.2024 10:00:00	25.03.2024 10:30:00
2	UMB-Parking0324	Parking-UMB-DLPC-MX-73-24-1 (Parking-Mixed)	दौलतपुर चौक रेलवे स्टेशन (सर्कुलर एरिया) पर दो पहिया, तीन पहिया और चार पहिया का संयुक्त ठेका। कुल एरिया 704 वर्ग मी।	वार्षिक लाइसेंस फीस	1095	25.03.2024 10:00:00	25.03.2024 10:40:00
3	UMB-Parking0424	Parking-UMB-ANSB-MX-76-24-1 (Parking-Mixed)	आनन्दपुर साहिब रेलवे स्टेशन (सर्कुलर एरिया) पर दो पहिया, तीन पहिया और चार पहिया का संयुक्त ठेका। कुल एरिया 2384.74 वर्ग मी।	वार्षिक लाइसेंस फीस	1095	28.03.2024 11:00:00	28.03.2024 11:30:00
4	UMB-Parking0424	Parking-UMB-SML-PCCV-68-24-1 (Parking-Passenger carrying Commercial Vehicles)	शिमला एक्सटेंशन पर वाणिज्यिक वाहनों का ठेका। कुल एरिया– 376.11 वर्ग मी।	वार्षिक लाइसेंस फीस	1095	28.03.2024 11:00:00	28.03.2024 11:40:00

नीलामी आमंत्रण सूचना, नीलामी प्रपत्र, एक बार पंजीकरण व अधिक जानकारी हेतु रेलवे वेबसाइट **www.ireps.gov.in** को देखें। **821/2024**

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें
पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, शनिवार,16 मार्च, 2024

दुर्गेश पाठक के नेतृत्व में नारायणा गांव में महत्वपूर्ण कामों का होगा उद्घाटन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

- मोहल्ला विलनिक, हाई मास्ट लाइट, चौपाल पुनर्निमाण, सुरक्षा गेट का होगा उद्घाटन- दुर्गेश पाठक
- पांडव नगर ए-बी ब्लॉक के बीच से गुजरने वाली मेन रोड का निर्माण शुरू हो गया है- दुर्गेश पाठक
- जिंदल वॉटर इंफ्रास्ट्रक्चर और एमसीडी अधिकारियों के साथ बैठक की- दुर्गेश पाठक
- राजेंद्र नगर में हो रहे सभी कामों की अच्छी गुणवत्ता के लिए हम लगातार निरीक्षण करते हैं- दुर्गेश पाठक

चार महत्वपूर्ण कामों की शुरूआत होगी। इसमें मोहल्ला क्लिनिक, हाई मास्ट लाइट, चौपाल पुनर्निमाण, सुरक्षा गेट आदि का उद्घाटन शामिल है। इसके अलावा पांडव नगर ए और बी ब्लॉक के बीच से गुजरने वाली मेन रोड का निर्माण भी शुरू हो गया है। यह रोड लोगों के इस्तेमाल के लिए जल्द बनकर तैयार हो जाएगी। बीते कल हमने जिंदल वॉटर इंफ्रास्ट्रक्चर और एमसीडी अधिकारियों के साथ बैठक की। राजेंद्र नगर में हो रहे सभी कामों की अच्छी गुणवत्ता के लिए हम लगातार निरीक्षण करते हैं। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता, राजेंद्र नगर के विधायक एवं एमसीडी प्रभारी दुर्गेश पाठक ने शुक्रवार को कहा कि हम 16 मार्च को नारायणा गांव में चार बहुत महत्वपूर्ण कामों का उद्घाटन कर रहे हैं। पहला, माता मंदिर के रास्ते में कोई लाइट नहीं होने के कारण वहां बहुत अंधेरा होता था। इस अंधेरे से नारायणा गांव की आधी आबादी परेशान थी। ऐसे में हमने वहां हाई मास्ट लाइट की व्यवस्था की है। उसके बाद नारायणा गांव डिस्पेंसरी यूजीआर के पास नए मोहल्ला क्लिनिक का उद्घाटन होगा। मोहल्ला क्लिनिक में डॉक्टर, दवाइयां, टेस्ट, सारी सुविधाएं उपलब्ध कराने के बाद ही इसका उद्घाटन किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि तीसरा, जुलाहा चौपाल का पुनर्निमाण किया गया है। शनिवार को चौपाल का भी उद्घाटन करेंगे। नारायणा गांव के लोग काफी समय से यह चौपाल बनाने के लिए कह रहे थे, अब उनकी मांग पूरी हो रही है। इसके बाद वाल्मीकी मंदिर रोड पर सुरक्षा गेट का उद्घाटन किया जाएगा। लगभग आधा गांव उस रास्ते से निकलता है लेकिन लोग वहां बिल्कुल सुरक्षित महसूस नहीं करते थे। यह सुरक्षा गेट लोगों के मन का डर खत्म करेगा। इन चारों कामों का कल उद्घाटन किया जाएगा। दुर्गेश पाठक ने कहा कि इसके अलावा पांडव नगर ए और बी ब्लॉक के बीच से गुजरने वाली मेन रोड का निर्माण भी शुरू हो गया है। यह रोड लोगों के इस्तेमाल के लिए जल्द बनकर तैयार हो जाएगी। बीते कल हमने जिंदल वॉटर इंफ्रास्ट्रक्चर और एमसीडी अधिकारियों के साथ बैठक की। राजेंद्र नगर में हो रहे सभी कामों की अच्छी गुणवत्ता के लिए हम लगातार निरीक्षण करते रहते हैं। मैं अपनी विधानसभा की एक-एक समस्या का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हूं और दिन रात उसके लिए महनत करता हूं।

अलग अलग मामलों में 3 वांटेड को दबोचा

नई दिल्ली। साउथ डिस्ट्रिक्ट के मालवीय नगर और एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वाड की ज्वाइंट पुलिस टीम ने अलग-अलग मामलों में शामिल तीन वांटेड को गिरफ्तार किया है। जिन्हें अलग अलग कोर्ट के द्वारा अलग-अलग मामलों में भगोड़ा घोषित किया गया था। डीसीपी अंकित चौहान के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों की पहचान देवेंद्र कुमार, अजय कुमार और प्रताप सिंह के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार देवेंद्र न्यू उस्मानपुर थाने में दर्ज 2020 के मामले में कड़कड़डूमा कोर्ट द्वारा भगोड़ा घोषित किया गया था। जबकि अजय कुमार 2015 में दर्ज नेबसराय मामले में साकेत कोर्ट के द्वारा भगोड़ा घोषित किया गया था। वहीं प्रताप सिंह बदरपुर थाना में 2019 में दर्ज मामले में कोर्ट के द्वारा भगोड़ा घोषित था। इन तीनों को मालवीय नगर एसएचओ और एएटीएस के इंचार्ज इंस्पेक्टर उमेश यादव, हेडकांस्टेबल संदीप और कृष्ण की टीम ने टेक्निकल सर्विलांस की मदद से पता लगा करके उनके ठिकानों से गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई है।

12 वी के स्टूडेंट की हुई थी चाकू से गोदकर निर्मम

- वसंत कुंज साउथ पुलिस ने हत्यारे को दबोचा

12वीं क्लास के एक स्टूडेंट की चाकू से बुरी तरह गोदकर उसकी निर्मम हत्या करने के मामले में आखिरकार पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी पहचान ऋषि उर्फ कांचा उर्फ नेपाली के रूप में हुई है। यह दिल्ली के गोरखधाम मंदिर इलाके में रह रहा था। डीसीपी साउथ वेस्ट रोहित मीणा ने बताया कि हत्या की यह वारदात भलस्वा डेयरी इलाके में पिछले साल हुई थी। जिसमें 18 साल के एक युवक हिमांशु पर चाकू से कई बार वार करके उसकी निर्मम हत्या कर दी गई थी। उस मामले में भलस्वा डेयरी थाना की पुलिस टीम आरोपी ऋषि के बारे में लगातार पता लगा रही थी। लेकिन यह पुलिस से बचने के लिए अपना ठिकाना लगातार बदल रहा था। इसी बीच एसीपी सत्यजीत सरीन की देखरेख में एसएचओ वसंत कुंज साउथ सहदेव राणा की टीम को हत्या के मामले में फरार इस वांटेड आरोपी के बारे में जानकारी मिली। पुलिस टीम ने इसे ट्रैप लगाकर धर दबोचा। पूछताछ में पता चला कि किसी बात को लेकर ऋषि का हिमांशु से झगड़ा हो गया था और उसी का बदला लेने के लिए उसने चाकू से उसके ऊपर ताबड़तोड़ वार कर दिया और मौके से फरार हो गया। हिमांशु को नजदीकी अस्पताल में ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

संक्षिप्त खबरें

3 करोड़ की डकैती में शामिल दो बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। अशोक विहार में एक पेपर ट्रेडर के घर में घुसकर परिवार के सभी सदस्यों को बंधक बना हथियारों के बल पर दो करोड़ नकदी व करीब एक करोड़ रुपये मूल्य के जेवरात डकैती करने के मामले में शामिल दो बदमाशों को क्राइम ब्रांच ने मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया है। इनमें एक बदमाश बांग्लादेशी है। मुठभेड़ में दोनों तरफ से छह राउंड गोलियां चली। बदमाशों की तरफ से एक गोली एक इंस्पेक्टर के बुलेटप्रूफ जैकेट पर लगी, जबकि पुलिस की एक गोली बांग्लादेशी बदमाश मिराज उर्फ मेहराज के पैर में लगने से वह घायल हो गया। दोनों के कब्जे से एक अत्याधुनिक पिस्टल और एक कट्टा बरामद किया गया। एडिशनल पुलिस कमिश्नर, क्राइम ब्रांच, संजय भाटिया के मुताबिक, हवलदार विनोद कुमार की सूचना पर इंस्पेक्टर अक्षय कुमार की टीम ने जब बृहस्पतिवार देर रात धुलसिरस गांव, द्वारका के पास मिराज व उसके साथी को रुकने का इशारा किया, तब दोनों ने पुलिसकर्मियों पर फायरिंग शुरू कर दी। मिराज ने पिस्टल से दो गोलियां चलाई, जिनमें एक गोली इंस्पेक्टर अक्षय के बुलेटप्रूफ जैकेट पर लगी। वह बाल-बाल बच गए। दूसरे बदमाश साहिद द्वारा कट्टे से गोली चलाने पर हवलदार गौरव बाल-बाल बच गया। जवाबी कार्रवाई में इंस्पेक्टर अक्षय द्वारा चलाई गई गोली मिराज के दाहिने पैर में लगी। वह बांग्लादेश का रहने वाला है और लूटपाट, डकैती, आर्म्स एक्ट आदि के पूर्व के पांच मामलों में शामिल रहा है। सात मई 2023 की तड़के पांच बजे पांच नकाबपोश हथियारबंद बदमाश अशोक विहार में रहने वाले कारोबारी के घर में उस समय घुस गए थे, जब वह व उनके माता-पिता, पत्नी, बहन और बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे। तीन बदमाशों के पास अवैध हथियार व अन्य के पास चाकू और घर तोड़ने के उपकरण थे। पीड़ित का ग्राउंड फ्लोर पर कार्यालय है, जबकि कारोबारी पहली मंजिल पर परिवार के साथ रहते हैं। भूतल पर कार्यालय की खिड़की की लोहे की ग्रिल काटकर बदमाश इमारत में घुसकर पहली मंजिल पर जाने में कामयाब हो गए थे।

मोबाइल चोरी के शक पीट पीट कर एक की हुई हत्या

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

- दूसरे दोस्त को पहुंचा दिया था अधमरा करके हस्पताल

एक युवक इंद्रपाल को शक हुआ की उसका मोबाईल दूसरे युवकों मनीष और रामबाबू ने चुरा लिया है। मोबाइल चोरी के शक में फिर उनके बीच आपस में बहसबाजी शुरू हो गई। मनीष और रामबाबू ने साफ मना किया की उन्होंने इंद्रपाल का मोबाइल चोरी नहीं किया है। लेकिन बात यहीं पर खत्म नहीं हुआ और इंद्रपाल ने दोनो युवकों को सबक सिखाने के लिए कॉल करके अपने कई और साथियों को बुला लिया। सभी ने मिलकर मनीष और रामबाबू की पिटाई शुरू कर दी। मार मार के दोनो को अधमरा कर दिया और सभी मौके से फरार हो गए।

डीसीपी रोहित मीणा ने बताया की हत्या की यह वारदात 11 मार्च को शाम में हुई थी। जब पुलिस को सूचना मिली कि कुछ लड़कों में झगड़ा हो रहा है। मौके पर पुलिस टीम पहुंची तो पता चला की गुंबद वाला पार्क के पास हुए झगड़े में दो शख्स बुरी तरह घायल हो गया था। जिसे सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहां पर पता चला की एक युवक जिसकी पहचान मनीष कुमार के रूप में हुई, उसकी मौत हो चुकी है। मनीष मूलतः बिहार का रहने वाला था। उसका साथी रामबाबू जो घायल हुआ था, उसने फिर पुलिस को पूरे मामले के बारे में बताया।

उसने बताया की उनका इंद्रपाल नाम के युवक से झगड़ा हुआ था। क्योंकि वह मनीष और उसपर मोबाइल चोरी का आरोप लगा रहा था। जब दोनों ने मना किया तो बात बढ़ गई और उसके बाद इंद्रपाल ने कॉल करके तीन-चार और लड़कों को मौके पर बुला लिया और उन लोगों ने फिर लात घुसो और डंडों से पिटाई कर दी। जिसमें मनीष बुरी तरह घायल हो गया, उसके बाद सभी लड़के मौके से फरार हो गए। बाद में मनीष की मौत हो गई।

एसीपी सफदरजंग इंक्लेव रणवीर सिंह की देखरेख में एसएचओ शंभू नाथ सिंह की टीम ने पता लगाना शुरू किया। कई दिनों तक छापेमारी करने के बाद सीसीटीवी फुटेज और लोकल इनफॉरमेशन की मदद से इन आरोपियों को पकड़ने में कामयाब हुई। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान इंद्रपाल उसके साथी सौरभ और शिवम के रूप में हुई। फिर इनकी निशानदेही पर उनके दो और नाबालिक साथी को भी हिरासत में लिया गया। जिन्हें जुवनाइल जस्टिस बोर्ड में पेश करने के बाद ऑब्जर्वेशन होम में भेज दिया गया।

अलग अलग मामलों में 3 वांटेड को दबोचा

साउथ डिस्ट्रिक्ट के मालवीय नगर और एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वाड की ज्वाइंट पुलिस टीम ने अलग-अलग मामलों में शामिल तीन वांटेड को गिरफ्तार किया है। जिन्हें अलग अलग कोर्ट के द्वारा अलग-अलग मामलों में भगोड़ा घोषित किया गया था। डीसीपी अंकित चौहान के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों की पहचान देवेंद्र कुमार, अजय कुमार और प्रताप सिंह के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार देवेंद्र न्यू उस्मानपुर थाने में दर्ज 2020 के मामले में कड़कड़डूमा कोर्ट द्वारा भगोड़ा घोषित किया गया था। जबकि अजय कुमार 2015 में दर्ज नेबसराय मामले में साकेत कोर्ट के द्वारा भगोड़ा घोषित किया गया था। वहीं प्रताप सिंह बदरपुर थाना में 2019 में दर्ज मामले में कोर्ट के द्वारा भगोड़ा घोषित था। इन तीनों को मालवीय नगर एसएचओ और एएटीएस के इंचार्ज इंस्पेक्टर उमेश यादव, हेडकांस्टेबल संदीप और कृष्ण की टीम ने टेक्निकल सर्विलांस की मदद से पता लगा करके उनके ठिकानों से गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई है।

कुक बना मोबाइल लुटेरा, पुलिस ने दबोचा

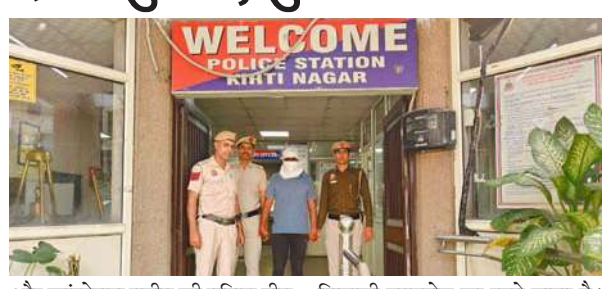

- कीर्ति नगर पुलिस टीम ने किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

कीर्ति नगर थाना की पुलिस टीम ने मोबाइल लूट की वारदात को अंजाम देने वाले मामले में एक ऐसे आरोपी को गिरफ्तार किया है, जो चिकन शॉप पर कुक का काम करता था। उसकी पहचान रवि उर्फ मोटा के रूप में हुई है। लेकिन अपनी अच्छी कमाई नहीं होने से परेशान था और अपनी लाइफ स्टाइल चेंज करना चाहता था। इसी चक्कर में वह झपटमारी की वारदात करना शुरू किया था। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि 9 मार्च की रात को रमेश नगर इलाके में इसने एक शख्स का मोबाइल छीन लिया और मौके से फरार हो गया। उस मामले में पीड़ित की शिकायत पर एफआईआर दर्ज करके छानबीन शुरू की गई। एसएचओ संजीव ढोडी की देखरेख में हेडकांस्टेबल विकास और कांस्टेबल नवीन की पुलिस टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता लगाना शुरू किया। आखिरकार कई दिनों की मशक्कत के बाद इसके बारे में पता लगाने में पुलिस कामयाब हो गई। फिर पुलिस की टीम ने टेक्निकल सर्विलांस की मदद से इसके बारे में सही जानकारी इकट्ठा करके इसको पकड़ लिया। जब इससे पूछताछ हुई तो इसने बताया कि लूट गया मोबाइल उसने एक रमेश नगर के रहने वाले दूसरे शख्स को बेच दिया है। पुलिस ने फिर उसको पकड़ा तो पता चला कि उसने दीपांशु नाम के शख्स को मोबाइल दे दिया है, जो शिवाजी एनक्लेव का रहने वाला है। फिर पुलिस ने उसे भी पकड़ा और मोबाइल बरामद किया। उन दोनो के खिलाफ भी कारवाई किया जा रहा है। पूछताछ में आरोपी ने पुलिस को बताया की वह कई लोगों की फैमली में रहता है। अपनी अच्छी लाइफ स्टाइल जीने के लिए वह शॉर्टकट से पैसा कमाने के जुगाड़ में लगा हुआ था। लेकिन फिलहाल वह रमेश नगर के ही चिकन शॉप में कुक का काम करता था। उसके दिमाग में आयडिया आया की यदि महंगे मोबाइल लूटेगा, तो उसे बेचकर अच्छा इनकम शुरू हो जाएगा।

मेट्रो द्वारा तेलीवाड़ा चौक पर दुकानों के सामने बिजली ट्रांसफर लगाने पर व्यापारियों में रोष

- कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा - परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

सदर बाजार मेट्रो आने से व्यापारियों में जहां पर खुशी है वहीं पर वहीं पर कुछ कार्यों को लेकर व्यापारियों में दहशत बनती जा रही है। इसी का उदाहरण देखने को मिला तेलीवाड़ा चौक पर मेट्रो द्वारा कई बिल्डिंगों के सामने बिजली ट्रांसफर लगाने को लेकर व्यापारियों में बहुत डर सा पैदा हो गया है। इसको लेकर तेलीवाड़ा के सभी व्यापारिक फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड एसोसिएशन के अध्यक्ष परमजीत सिंह पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें फेडरेशन के संरक्षक प्रकाश महेंद्रु, उपाध्यक्ष दीपक मित्तल, महासचिव राजेंद्र शर्मा, कमल कुमार सहित अनेक व्यापारी उपस्थित थे। इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने कहा बड़े दुख की बात है जिस प्रकार मेट्रो सुरक्षा व अपने कार्यों के लिए जानी जाती है मगर वह सदर बाजार में कई कार्य ऐसे कर रही है जिससे आने वाले समय में व्यापारियों के जान माल का काफी नुकसान हो सकता है। इसी का उदाहरण देखने को मिल रहा है तेलीवाड़ा चौक पर जहां पर बिल्कुल कहीं बिल्डिंगों के सामने बिजली ट्रांसफर लगाने की तैयारी हो रही है। जिससे कोई भी बड़ा हादसा हो सकता है क्योंकि सदर बाजार में छोटी-छोटी गलियां होने के कारण हर बिल्डिंग एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई है भगवान ना करे कोई हादसा हो जाए तो बहुत बड़ी दुर्घटना का रूप ले सकती है। जबकि तेलीवाड़ा चौक के बीच में पूरी जगह खाली है वहां पर ट्रांसफार्मर लग सकता है। पम्मा व राकेश यादव ने कहा इस निर्णय से मेट्रो के प्रति व्यापारियों में काफी रोष है किसको लेकर व्यापारी उचित अधिकारियों से बातचीत करेंगे ना कोई निर्णय निकला तो सड़कों पर भी उतरेंगे।

स्पेशल स्टाफ ने हथियार के साथ 3 दबोचा

- सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल, देशी तमंचा, गोलियां बरामद

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

साउथ डिस्ट्रिक्ट के स्पेशल स्टाफ की पुलिस टीम ने एक गैंगस्टर से इंस्पायर होकर आपराधिक वारदात में शामिल और दिल्ली पुलिस के घोषित बीसी सहित तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके पास एक सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल, दो कंट्री मेड पिस्टल, 4 जिंदा कारतूस, और कार भी जब्त किया है। डीसीपी अंकित चौहान के अनुसार गिरफ्तार किए गए बदमाशों की पहचान शुभम, दानिश और भीम के रूप में हुई है। इनमें से शुभम महरौली थाना का घोषित बीसी भी है। यह तीनों दिल्ली के महरौली इलाकों के रहने वाले हैं। एसीपी ऑपरेशन राजेश कुमार की देखरेख में इंस्पेक्टर धीरज महलावत की टीम ने इनको गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई है। पुलिस टीम टेक्निकल सर्विलांस की मदद से लगातार इनका पता लगा रही थी। और उसी छानबीन में पता चला की अंधेड़ीया मोड़ के पास यह लोग रात में आने वाले हैं। पुलिस टीम ने आधी रात करीब 1:40 बजे वहां पर ट्रैप लगाया और एक गाड़ी को ट्रैक किया। जिसमें यह तीन बदमाश सवार थे और उनके पास से फिर हथियार मिले। इनकी पहचान की गई और उनके खिलाफ महरौली थाने में आर्म्स एक्ट का मामला भी दर्ज किया गया।

चोरी के शक में हत्या करने वाले नाबालिग सहित पांच पकड़े

नई दिल्ली। किशनगढ़ थाना पुलिस ने मोबाइल चोरी के शक में युवक की पीट पीटकर हत्या करने के मामले में 12 मार्च को दो नाबालिग सहित पांच लोगों को पकड़ा है। आरोपियों ने 11 मार्च की रात को चोरी के शक में दो लोगों की पिटाई की थी। घायलों में शामिल एक शख्स ने अस्पताल में दम तोड़ दिया था। आरोपी इंद्रपाल, सौरभ और शिवम को जेल भेज दिया गया है, जबकि दोनों नबालिगों को बाल सुधारगृह भेजा गया है। पुलिस उपायुक्त रोहित मीणा ने बताया कि 24 वर्षीय मनीष कुमार मूलतः बिहार के सीवान का रहने वाला था। वह दिल्ली में मजदूरी करता था और कटवारिया सराय इलाके में रहता था। दूसरा घायल रामबाबू भी बिहार, सीवान का रहने वाला है और कटवारिया सराय में रहता है। रामबाबू ने बताया कि 11 मार्च की रात करीब 7 बजे इंद्रपाल उनके पास आया और मनीष पर उसका मोबाइल चोरी का आरोप लगाने लगा। इन्द्रपाल के आरोप पर मनीष और रामबाबू ने मोबाइल होने से मना किया। इस पर दोनों में हाथापाई होने लगी। इन्द्रपाल ने अपने जानकारों को बुला लिया। इसके बाद सभी ने मिलकर मनीष और रामबाबू की पिटाई कर दी। आरोपी दोनों घायलों को धमकी देकर मौके से फरार हो गए। आरोपियों के जानकारों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने मनीष को मृत घोषित कर दिया। अस्पताल से किशनगढ़ थाना पुलिस को जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप मित्तल के मार्गदर्शन में पांच लाख नए सदस्य बनाए जाएंगे

समापन समारोह में उपस्थिती न्यूज के चैयरमेन सुभाष चंद्रा ने कहा- देशभर में अग्रवाल समाज की संस्थाओं को किया जाएगा एकजुट करने का प्रयास

- छत्तीसगढ़ इकाई को मिला सर्वश्रेष्ठ अवार्ड।
- नए राष्ट्रीय महामंत्री बनाए गए दिल्ली के गिरीश मित्तल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक धर्म की नगरी वृंदावन के श्री कृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में संपन्न हुई, इस अवसर पर जहां बैठक का शुभारंभ भगवान अग्रसेन जी एवं कुलदेवी महालक्ष्मी जी के तैलचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, तत्पश्चात प्रथम दिवस की बैठक में जहां अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के अंतर्गत विभिन्न समितियो का गठन करने पर चर्चा करते हुए निर्णय लिए गए, जिसमें प्रमुख रूप से अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के अंतर्गत राजनैतिक समिति, उद्योग एवं व्यापार समिति जिसमें हैदराबाद के आर एन गुप्ता को राष्ट्रीय संयोजक, प्रोफेशनल समिति जिसमें सीए,डॉक्टर, अधिवक्ता, इंजीनियर, रोजगार समिति, सामाजिक उत्पीड़न समिति, प्रशिक्षण शिविर समिति, इतिहास एवं साहित्यकार समिति, प्रशासनिक समिति, संस्कृतिक कार्यक्रम समिति, खेलकूद समिति,सदस्यता अभियान समिति जिसमें हैदराबाद के अजय अग्रवाल एवं सहसंयोजक रायगढ़ के अधिवक्ता बाबूलाल अग्रवाल को बनाया गया,कुरीति उन्मूलन समिति, कंप्यूटर प्रशिक्षण समिति जिसमें बेंगलुरु के ओपी पोद्दार को बनाया गया, कैरियर काउंसलिंग समिति,धार्मिक आयोजन एवं यात्रा समिति जिसमें कोटा राजस्थान की पूर्व विधायक श्रीमती पूनम गोयल को बनाया गया, चिकित्सा समिति जिसमें रायपुर के डॉक्टर अनिमेष चौधरी, पत्रिका संपादन समिति जिसमें नई दिल्ली के मेरी दिल्ली के डायरेक्टर राजेश गुप्ता को बनाया गया

वहीं बैठक के दौरान प्रथम दिवस जहां देश के विभिन्न स्थानों से आए समाज बंधुओ ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव रखे तो वहीं इस दौरान मंच पर उपस्थित अतिथियों में प्रमुख रूप से अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के राष्ट्रीय चैयरमेन प्रदीप मित्तल, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आर एन गुप्ता, राष्ट्रीय महामंत्री राजेश भरूका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष डॉ रामबाबू सिंघल, उत्तर प्रदेश इकाई के प्रदेश अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के मुख्य संयोजक संजय गुप्ता, कार्यक्रम के मुख्य संयोजक जितेंद्र सिंघल, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ अशोक अग्रवाल रायपुर, गिरीश मित्तल दिल्ली, श्रीमती सविता गुप्ता, महावीर गोयल, एसके गुप्ता, मधुसूदन मित्तल, राजेश गोयल, आई सी बंसल, दिनेश गुप्ता (४२८ रङ्का३६१), राष्ट्रीय प्रचार मंत्री राजेश गुप्ता, महिला विंग की महामंत्री श्रीमती शिखा गर्ग प्रमुख रूप से मौजूद रहे, तथा प्रथम दिवस आगंतुक समस्त सदस्यों का आयोजक उत्तर प्रदेश इकाई की ओर से स्वागत करते हुए अभिनंदन किया गया तथा सुंदर किट प्रदान की गई। आयोजन को सफल बनाने के लिए अमित गुप्ता जी न्यू दिल्ली२, अनिल मित्तल जी सतमोला एवं सुरेश पोद्दार जी ने आकर्षक उपहार देकर सहयोग किया। द्वितीय दिवस की बैठक का शुभारंभ सुबह 10:00 बजे हुआ जिसमें द्वितीय दिवस के कार्यक्रम में न्यूज के चैयरमेन डॉक्टर सुभाष चंद्रा मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे एवं इस दौरान जहां राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सहयोग करने वाले सभी सदस्यों का एवं स्वागत समिति के सदस्यों का स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया गया, तो वहीं आगंतुक सभी सदस्यों को भी उत्तर प्रदेश इकाई की ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए एवं कार्यक्रम का संचालन करते हुए राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ अशोक अग्रवाल एवं आयोजन समिति के सदस्य गिरीश मित्तल ने समाज बंधुओ द्वारा दिए गए लगभग 50 प्रस्ताव पर वन टू वन चर्चा की, जिसमें विभिन्न प्रस्तावो को स्वीकृति प्रदान की गई तथा इन सभी प्रस्तावों पर आने वाले चेन्नई की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में विस्तार पूर्वक गति देने का भी निर्णय लिया गया,तथा प्रस्ताव में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन का अलंकरण समारोह आयोजित करने, राष्ट्रीय स्तर पर समाज में होने वाले संबंध विच्छेदों के लिए,अग्र पंचायत समिति का गठन करने,अग्र सेना का गठन करने, उच्च शिक्षा चाहने वाले यूपीएससी के बच्चों के लिए दिल्ली एवं अन्य स्थानों पर निशुल्क कोचिंग की व्यवस्था करने, शादी ब्याह में प्री वेडिंग बंद करने, राष्ट्रीय स्तर पर अग्रवाल समाज के न्यूनतम कार्यक्रम तय करने,अग्र महापुरुष विपश्यना आचार्य सत्यनारायण गोयनका जी को राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार से भारत रत्न सम्मान देने हेतु पत्र लिखने, बुजुर्ग खुश होगा तो भारत महकेगा को सूत्र वाक्य के रूप में सामाजिक स्तर पर मान्यता प्रदान करने,समाज के शादी ब्याह में दिन के फेरे आयोजित करने जन जागरूकता अभियान चलाने, समाज में विवाह योग्य लड़के- लड़कियों की उम्र अधिकतम 25 वर्ष निर्धारित किया जाए तथा इस प्रस्ताव पर प्रत्येक अभिभावकों से चर्चा कर अपने बच्चों को 25 वर्ष की उम्र तक विवाह कर देने के संबंध में आग्रह किया जाएगा, आदर्श समाज के निर्माण करने के लिए हमारे पारंपरिक रीति रिवाज को समाहित करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर एक पुस्तिका प्रकाशित करने, अंग्रेजी दास्तां के प्रतीक राजा रानी के चित्र युक्त सिक्कों की जगह भगवान अग्रसेन जी के फोटो युक्त चांदी के सिक्कों का प्रचलन समाज के मांगलिक एवं अन्य कार्यक्रमों में करने,सहित विभिन्न प्रस्तावो पर चर्चा कर निर्णय लिये गए, तथा वृंदावन की बैठक में पहली बार राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ अशोक अग्रवाल के प्रयासों से देश भर की विभिन्न प्रांतीय इकाइयों से समाज हित में प्रस्ताव मंगाए गए, जिसके प्रतिफल स्वरूप लगभग 100 प्रस्ताव राष्ट्रीय नेतृत्व को प्राप्त हुए जिसमें प्रस्ताव 50 प्रस्ताव पर विस्तार पूर्वक चर्चा कर निर्णय लिए गए

लोकसभा चुनाव में नई राजनीतिक पार्टियां भी ठोक रही है ताल, भारतीय लोकमत राष्ट्रवादी पार्टी 408 सीटों पर उतारेगी उम्मीदवार

- जन समस्याओं को लेकर हम लोगों के बीच गए और उनको बताया कि उनके क्या अधिकार हैं
- हमारी पार्टी जाती धर्म क्षेत्र और भाषा से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में गठित की गई है. हमलोग सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं.

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

देश में आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में कुछ ही दिन बचे है,जल्द ही चुनाव की तारीखों की घोषणा इलेक्शव कमीशन के द्वारा कर दी जाएगी. वहीं चुनाव को लेकर राजनीतिक पार्टियों ने कमर कस ली है. कोई पार्टी गठबंधन करने में कोई सीटों की शेयरिंग तो कोई सीटों के चयन को लेकर व्यस्त है .इसी दिशा में कई ऐसे भी है जो चुनाव को लेकर एक नई व्यवस्था और शासन का नया विकल्प देने के लेकर नई पार्टी का गठन कर रहै है .इसी कड़ी में भारतीय लोकमत राष्ट्रवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में 408 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने की जानकारी दी है.

देश में आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव में तैयारी को नई राजनितिक पार्टी भी मैदान चुनाव लड़ने के लिए कमर कस चुकी है. इसी बीच भारतीय लोकमत राष्ट्रवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में 408 सीटों पर उम्मीदवार उतारने की बात कही है. शुक्रवार को नई दिल्ली में पार्टी के संस्थापक और राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज कुमार शर्मा ने लोकसभा चुनाव के लिए अपनी पार्टी तरफ से 52 उम्मीदवारों की घोषणा की. उन्होंने कहा कि आपके मन में यह सवाल होता होगा कि हमें राजनीति पार्टी बनाने की जरूरत क्यों पड़ी. तो मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं जाति, धर्म के आधार पर पार्टियों का देश में गठन हुआ है लेकिन हमारी पार्टी जाती धर्म क्षेत्र और भाषा से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में गठित की गई है. हमलोग सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं. इसलिए हमने लोगों के बीच जाकर राजनीतिक जागरूकता के लिए अभियान चलाया. जन समस्याओं को लेकर हम लोगों के बीच गए और उनको बताया कि उनके क्या अधिकार हैं और उनकी समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है. देश में कहीं स्वास्थ्य सेवा, कहीं सड़क, कहीं यातायात तो कहीं पर बुनियादी सुविधाओं का अभाव है. हम लोगों ने फूड प्रोसेसिंग यूनिट के माध्यम से लोगों के बीच, आईटी के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया.

चुनाव पर होने वाले मनमाने खर्च को कैसे कम किया जा सकता है इस दिशा में हमने लोगों को बताया. ताकि राजनीतिक जागरूकता बढ़े और जन भागीदारी बढ़ाई जा सके और चुनाव जीता जा सके. हमारा तीन दिवसीय सम्मेलन चल रहा है जिसमें यह मंथन किया जा रहा है कि कैसे हम लोग 2024 चुनाव में बेहतर प्रदर्शन करें. पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रभारी राजेंद्र शर्मा, लोकेश त्यागी मुरादाबाद मंडल के अध्यक्ष, संजय कुमार शर्मा नेशनल कोआर्डिनेटर, अनु शर्मा युवा महिला मोर्चा के पदाधिकारी मौजूद रहे. इसमें पंकज कुमार शर्मा दक्षिणी दिल्ली से उम्मीदवार बनाया है .

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
नई दिल्ली, शनिवार, 16 मार्च, 2024

संक्षिप्त खबरें

आग लगने से तीन घर जले

पातेपुर (वैशाली)। पातेपुर थाने की अजीजपुर चांदे टोला मुसापुर में शुक्रवार को दोपहर में अचानक आग लगने से तीन घर जलकर राख हो गए।मिली खबर के अनुसार उक्त गांव के मो0 समी के घर में अचानक आग लग गई।इसके बाद आग की लपटें तेजी से बगल के मो0 कलाम और अख़्तरी खातून के घर को भी अपने चपेट में ले लिया।आग को बुझाने के लिये ग्रमीणों ने निजी पम्पसेट से पानी छिड़ककर काबू पाने का प्रयास किया।बाद में सरकारी दमकल आया तब जाकर आग को बुझा पाया। अंचलाधिकारी ने राजस्व कर्मचारी को घटनास्थल के जायजा लेने के लिये भेजा ।

प्रभारी प्रधानाध्यापक के पद पर दिया योगदान

हाजीपुर। उत्क्रमित मध्य विद्यालय सपहा हाजीपुर पूर्वी में प्राथमिक विद्यालय गुरमिया हाजीपुर के त्रिवेणी कुमार ने प्रभारी प्रधानाध्यापक के पद पर योगदान दिया योगदान के समय विद्यालय में भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमे प्रधानाध्यापक सह राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के प्रदेश प्रधानमंत्री पंकज कुमार हरिहरपुर के प्रधानाध्यापक उमेश कुमार यादव शिक्षक सह राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री राजेश कुमार आलोक कुमार आदि वक्ताओं ने कहा कि सरकारी विद्यालय में अब सारी सुविधाऐ सरकार द्वारा मुहैया कराई जा रही है जिससे विद्यालय में बहुत ही सुधार हुआ अब ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय भी प्राइवेट स्कूल को टक्कर दे रहे हैं। इस अवसर पर शिक्षक विनय कुमार अंकित कुमार शिक्षिका सोनी कुमारी शाहजहां कुमारी आदि लोगों उपस्थित थे।

स्वतंत्रता सेनानी और समाजसेवी की पुण्यतिथि मनाई गई

हाजीपुर । ताम्रपत्र से सम्मानित महान स्वतन्त्रता सेनानी श्रद्धेय अयोध्या राय जी के छोटे भाई श्रद्धेय रामचंद्र राय जी का 19 वा पुण्यतिथि उनके पुत्र जनता दल यूनाइटेड के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं प्रदेश राजनैतिक सलाहकार समिति सदस्य श्री विनोद कुमार राय जी के आवासीय परिसर में मनाया गया। आयोजित कार्यक्रम में दोनो भाई जी के तैल्यचित्र पर श्रद्धासुमन पुष्प श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किए, उनके किए गए कार्यों पर चर्चा करते हुए देश प्रदेश और समाज की एकता और अखंडता के कार्यों का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में शामिल मुख्य रूप से उनके पुत्र श्री विनोद कुमार राय, प्रो कमलेश्वर प्रसाद यादव, प्रो चंद्रभूषण सिंह शशि, प्रो पाण्डेय ब्रजनंदन प्रसाद, पांडेय कृष्णनंदन प्रसाद, श्री चंद्रदेव राय, श्री संजय कुमार निराला, श्री रविन्द्र प्रसाद यादव, श्री अनंत कुमार राय, श्री इत्यादि सामिल हुए। रणधीर कुमार राय, श्री इत्यादि सामिल हुए।

बाइक छीनने का विरोध किया तो बदमाशों ने मारी गोली, गंभीर रूप से घायल युवक रेफर

थाना क्षेत्र के कोल्हायपट्टी-रजनी प्रतापनगर रोड में हुई घटना

प्रात : किरण, संवाददाता

मुरलीगंज मधेपुरा मुरलीगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत कोल्हायपट्टी-प्रतापनगर रोड में शुक्रवार को करीब दो बजे बदमाशो ने बाइक सवार को गोली मार बाइक लूट कर फरार हो गए। सूचना पर दल बल के साथ पहुंचे थानाध्यक्ष मंजू कुमारी ने घायल युवक को पुलिस वाहन से समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद नाजुक हालत को देख चिकित्सक ने हायर सेंटर रेफर कर दिया। बदमाशों की गोली लगने से घायल युवक की पहचान रजनी पंचायत के प्रतापनगर वार्ड तीन निवासी लंबू मुखिया (38) वर्ष के रूप में हुआ है। बताया गया कि लंबू मुखिया अपने करीबी को मुरलीगंज रेलवे स्टेशन पर छोड़कर वापस घर लौट रहे थे। इस दौरान कोल्हायपट्टी चौक पर दो युवक गाड़ी रोकवाकर थोड़ी दूर छोड़ने की बात कहे। इसपर उक्त युवक अपने साथ दोनो युवको को बैठाकर आगे बढ़ गये। इसी बीच कोल्हायपट्टी नहर समीप पहुंचते ही दोनो युवक बाइक चालक को रोकवा दिया और रुपए की मांग करने लगा। रूपया नही देने के बाद बाइक की चाभी लेने लगे। जिसका लंबू मुखिया द्वारा विरोध करने के दौरान उक्त दोनो बदमाशों ने सामने से गोली मारकर जख्मी करते हुए बाइक लेकर फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते हीं क्षेत्र में पुलिस की दबिश बढ़ाई गई है। इधर परिजनों में दहशत और मातमी माहौल गमगीन है। लोगों का कहना है कि वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के नशा में लिप्त युवाओं के द्वारा आए दिन छोटी बड़ी अपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। हालांकि पुलिस अपराधिक घटनाओ पर अंकुश लगाने के लिए जद्दोजहद करते हैं।

इस बावत थानाध्यक्ष मंजू कुमारी कहा कि घटना को लेकर छानबीन तेज कर दिया गया है।

पेयजल की समस्या को लेकर ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर : प्रखंड के रतनपुर पंचायत के वार्ड नंबर 12 भौराटाड़ गांव में वार्ड के दर्जनों महिला एवं पुरुष ग्रामीणों ने मिलकर पी एच ई डी विभाग एवं स्थानीय पदाधिकारीयों के खिलाफ पेयजल की समस्या को लेकर विरोध प्रदर्शन करते हुए जमकर बवाल काटा। जानकारी के अनुसार अभी हाल ही में कुछ दिन पहले सूबे के मुखिया नीतीश कुमार द्वारा सात निश्चय योजना पार्ट टू पर विशेष बल दिया गया है। ताकि नल जल योजना का लाभ गांव के हर मुहल्ले के लोगों को मिल सके। जहां एक तरफ सरकार सूबे के सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में आम लोगों को शुद्ध पेयजल मुहैया कराने का एक तरफ दावा करती है तो दूसरी ओर विभागीय पदाधिकारी व कर्मचारियों के लापरवाही के कारण प्रखंड के रतनपुर पंचायत के वार्ड नम्बर 12 के निवासी मुख्यमंत्री जल नल योजना के तहत शुद्ध पेयजल को तरस रहे हैं। जिसकी सुधि लेने वाला कोई नही। रतनपुर पंचायत के वार्ड नंबर 12 निवासी राजेश यादव,पप्पू यादव, बेबी देवी,अरविंद कुमार, चुनचुन यादव,रामचरित्र यादव,प्रकाश पासवान,सुमन यादव, सौरभ ठाकुर,ब्रह्मदेव यादव,उमा देवी, सुनीता देवी,फुल कुमारी,रमेश यादव सहित दर्जनों वार्ड वासियों ने अपने वार्ड में पेयजल समस्या को लेकर बताया कि बीते एक महीने से नल जल योजना द्वारा दिये गए कनेक्शन से एक बूंद पानी भी नहीं टपका है। जिससे हम वार्डवासियों के बीच शुरूआती गर्मी के मौसम में ही पेयजल संकट गहराने लगा है। जबकि वार्ड में पेयजल समस्या के समाधान को लेकर हम ग्रामीणों द्वारा प्रखंड के वरीय पदाधिकारियों से कई बार गुहार भी लगाई है।लेकिन आज तक इस नल जल योजना द्वारा दिये गये कनेक्शन में पानी की आपूर्ति नहीं की गई। जिससे हम ग्रामीणों को अपनी पेयजल की समस्या की पूर्ति के लिए दूसरे जगहों से जाकर पानी लाना पड़ता है। वही गांव में पीएचईडी विभाग से एक चापाकल लगा हुआ है वह भी खराब पड़ा हुआ है।

होली को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

आलमनगर,मधेपुरा आलमनगर थाना परिसर में होली को लेकर शांति समिति की बैठक अनुमंडल पदाधिकारी एस जेड हसन के अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी ने सख्त निर्देश देते हुए कहा कि होलीका दहन मे किसी का जबरदस्ती जलावन ना ले, किसी का चुराना नही है।मांग कर स्वेक्षा से ले।वहीं आयोजक के द्वारा पुर्ण रुप से आग बुझा कर हीं वहां से हटे इससे आग लगने की संभावना है।इस पर विशेष ध्यान देना है। वहीं उपस्थित लोगों को होली के दौरान आने जाने वाले राहगीर को जबरदस्त रंग मिट्टी नहीं देना है।इसके लिए सभी लोगों का जवाबदेह होगा की अपने आस-पास के लोगों को जागरूक करें। डीजे पर पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है। हुड़दंगीयों पर विशेष नजर रहेगी। आलमनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी को होली के दौरान चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मी के साथ अस्पताल में मौजूद रहने का निर्देश दिया। इस दौरान थानाध्यक्ष अखिलेश कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार, अंचल अधिकारी दिव्या कुमारी, पुलिस पदाधिकारी , सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आलमनगर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ संतोष कुमार,समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रबंधक ,स्थानीय ग्रामीण राजेश्वर राय, जदयू प्रखंड अध्यक्ष चंद्रशेखर सिंह ,विनोद अग्रवाल, सांसद प्रतिनिधि संजय सिंह, पूर्व उप प्रमुख धर्मेंद्र कुमार मंडल, पूर्व मुखिया सतीश कुमार, मुखिया प्रतिनिध राजाराम शर्मा,सुनील यादव,कुमोद सिंह, शशिनाथ पासवान,रामदेव पासवान,सहित कई वार्ड पार्षद एवं सामाजिक क्षेत्र से जुड़े हुए लोग मौजूद थे।

16 वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

मधेपुरा वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 16 वीं बैठक शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र के परिसर में हुई। बैठक का शुभारंभ अटारी के निदेशक डा. अंजनी कुमार, बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर के सहायक निदेशक डा. आरएन सिंह, जिला कृषि पदाधिकारी पूनम कुमारी एवं कृषि विज्ञान केंद्र के वरीय वैज्ञानिक डा. सुरेंद्र चौरसिया ने संयुक्त रूप से किया। बैठक में अटारी के निदेशक डा. अंजनी कुमार ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से किसानों को जागरूक करने के लिए निरंतर अभियान चलाया जा रहा है। अप्रैल 2024 से मार्च 2025 तक कार्यक्रम तय कर लिया गया है। खासकर फल व सब्जी उत्पादन अब विशेष जोर दिए जाने की जरूरत है। जिसे कृषि विज्ञान केंद्र के आगामी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि अब कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक किसानों को पोषण वाटिका को लेकर विशेष तौर पर प्रेरित करें। जिससे किसानों को सालों भर की आर्गेनिक सब्जी अपने ही घर में मिले। उन्होंने कहा कि घर के आसपास थोड़ी सी भी जमीन रहने पर उसमें निश्चित रूप से पोषण वाटिका यानि किचन गार्डन बनाने के लिए लोगों को प्रेरित करने की जरूरत है। पोषण वाटिका में लगी सब्जियां कीटनाशक रहित यानि पूरी तरह जैविक होती। इससे लोग कुपोषण से मुक्त व सेहतमंद होंगे। डा. अंजनी कुमार ने कहा कि शरीर के लिए आवश्यक संतुलित आहार का लंबे समय तक नहीं मिलना ही कुपोषण है। कुपोषण के कारण बच्चों और महिलाओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिससे वे आसानी से कई तरह की बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। पोषक तत्वों से भरा है श्री अन्न : वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर के सहायक निदेशक डा. आरएन सिंह ने कहा कि अब लोगों सेहतमंद रहने के लिए चावल गेहूं को छोड़ कर श्री अन्न का सेवन करना चाहिए। श्री अन्न पोषक तत्वों से भरा मिलेट है। उन्होंने कहा कि मोटे अनाजों को श्री अन्न का दर्जा दिया गया है। पुराने समय में यह अनाज लोगों के खानपान का प्रमुख हिस्सा था। लेकिन समय के साथ इसकी जगह गेहूं, चावल जैसे अनाजों ने ले ली। ऐसे में मोटे अनाजों के उत्पादन पर भी असर पड़ा। लोगों की थाली में एक बार फिर पोषक तत्वों से भरे अनाज को वापस लाने के लिए सरकार ने श्री अन्न के सेवन पर जारे दे रही है। मोटे अनाज में प्रोटीन, डायट्री फाइबर, विटामिन बी, कैल्शियम, आयरन, मैंगनीज, मैग्नीशियम, फास्फोरस, जिंक, पोटेशियम, कॉपर और सेलेनियम जैसे कई पोषक तत्व मौजूद होते हैं। बैठक में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डा. आरपी शर्मा,डा. सुनील कुमार,राहुल कुमार वर्मा,डा. आभा कुमारी, प्रगतिशील किसान रविन्द्र कुमार, चंदन कुमार सहित कई मौजूद थे।

काशीराम सच्चे अर्थों में बहुजन नायक, प्रखर राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक थे - किरण देव

प्रात : किरण, संवाददाता

खगडिया। काशीराम सदैव बहुजनों के अधिकार के लिए रहे संघर्षरत - उमेश ठाकुर, महापुरुषों का जयंती पुण्यतिथि मन कर उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचने के लिए संकल्पित - मुरली रविदास, काशीराम के जीवनी व्यक्तित्व विचार प्रेरणास्त्रोत - लालमणि सदा, काशीराम बहुजनों के सच्चे आदर्श - डॉक्टर कमल किशोर यादव, समकालीन राजनीति के संदर्भ में बहुजन आंदोलन आवश्यक - धर्मेंद्र कुमार, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, नारों को बुलंद करने की जरूरत - कालेश्वर ठाकुर, खगड़िया। मिशन सुरक्षा परिषद, देश बचाओ अभियान, महिला विकास सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में मान्यवर काशीराम का 90 वीं जयंती अस्पताल चौक अवस्थित संपर्क कार्यालय में मनाई गई। इस अवसर पर बहुजन नायक मान्यवर काशीराम अमर रहे, जय भीम, जय भारत, जय संविधान, नमो बुद्धाय, नारों के बीच उनके प्रतिमा पर माल्यार्पण पुष्पांजलि समर्पित कर कोटि-कोटि नमन याद किया गया। तथा उनके जीवनी व्यक्तित्व कृतित्व से सीख लेकर उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प दुहराया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता मिशन सुरक्षा परिषद के राष्ट्रीय सचिव समाजसेवी किरण देव यादव ने किया। उन्होंने संबोधन करते हुए कहा कि मान्यवर काशीराम दलित शोषित पीड़ित वंचित अल्पसंख्यक गरीबों का मसीहा थे। कार्यक्रम को परिषद के प्रदेश सचिव मुरली रविदास मधुबाला उमेश ठाकुर डॉक्टर कमल किशोर यादव धर्मेंद्र कुमार मनोज पासवान लालमणि सदा कालेश्वर ठाकुर मंचन यादव आदि ने संबोधित किया।

माह-ए-रमजान के पहले जुमा पर नमाज अदा

प्रात : किरण, संवाददाता

पुरैनी, मधेपुरा प्रखंड मुख्यालय सहित मुस्लिम बहुलीय इलाके की मस्जिदों में शुक्रवार को माह-ए-रमजान के पहले जुमा की नमाज अदा हुई। रमजान के पहले जुमे की नमाज अदा कर रोजेदारों ने अपने गुनाहों से तौबा की। साथ ही देश-दुनिया और समाज की खुशहाली की परवरदिगार से दुआ की, जिस पर रोजेदारों ने एक आवाज में आमीन कहा। डुमरैल जमै मस्जिद में कारी जिब्राइल अहमद कासमी ने जुमे की नमाज से पहले लोगों को संबोधित करते कहा कि यह मुबारक माह नफलों को फर्जों के बराबर सवाब दिलाने वाला एक फर्ज का सवाब सत्तर फर्जों के बराबर देने वाला अल्लाह ताला ने चुना है। इस मुबारक माह में जो भी मुसलमान एक फर्ज अदा करेगा, उसे सत्तर फर्जों का सवाब मलेगा। जो नफल अदा करेगा, उसे फर्जों के बराबर सवाब मिलेगा। इस अवसर पर मुसलमानों में गरीबों की सहायता के लिए दिए जाने वाले जुकात का जिक्र करते कहा कि यदि मुसलमान इसी सही रूप में दे, तो समाज में कोई व्यक्ति गरीब मोहताज दिखाई नहीं देगा। उन्होंने कहा कि हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि जिस मुसलमान के पास साढ़े 52 तोले चांदी या इसकी कीमत के बराबर सामान, सोना या किसी भी रूप में अधिक जायदाद हो, तो उसे अपनी अधिक बनत रकम पर ढाई प्रतिशत जुकात के रूप में गरीबों को देना जरूरी है। इस्लाम ने इसकी परिभाषा देते कहा कि जिसके पास यह सब कुछ सामान रूप में न हो, उसे जुकात या सदका दिया जा सकता है। मुसलमानों के लिए जरूरी है कि जुकात की सही रकम इसके सही जरूरतमंदों तक पहुंचाई जाए ताकि इस्लाम में दी गई गरीब की परिभाषा के तहत यह फर्ज अदा किया जा सके व रब्ब की कचहरी में यह कबूल हो सके। उन्होंने कहा कि बारिश का न होना या सही ढंग से इसका फायदा दुनिया में रह रहे जीवों का न मिलने संबंधी हजरत मोहम्मद ने फरमाया कि जब मुसलमान जकात देना बंद कर देंगे, तो रब्ब द्वारा बारिश रोक दी जाएगी। वहीं मुसलमानों ने रमजान के पहले जुमा को लेकर खास तैयारी की थी। रमजान मुबारक में जुमे को सबसे ज्यादा तिलावत होती है। नमाज अदा करने के बाद इफ्तार के लिए खजूर, फल और अन्य जरूरी सामान की खरीदारी को अकीदतमंदों की भीड़ बाजार में उमड़ी पड़ी।

सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में अक्षित को मिली सफलता

प्रात : किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौरः प्रखंड के मौरा पंचायत के मौरा गांव निवासी संदीप कुमार सिंह के पुत्र अक्षित सिंह ने सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में सफलता हासिल किया है। संदीप कुमार सिंह भारतीय वायु सेना में कार्यरत हैं।

उनके पुत्र अक्षित सिंह ने सैनिक स्कूल में दाखिले के लिए एनडीए द्वारा आयोजित एंट्रेंस परीक्षा पास कर अपने गांव मौरा के साथ पूरे प्रखंड का नाम रौशन किया है बता दें कि केंद्रीय विद्यालय हिंडन में वर्ग 5 में अक्षित अभी अध्ययन कर रहे हैं।अक्षित का सलेक्शन सैनिक स्कूल नालंदा में हुआ।अक्षित के पिता संदीप कुमार सिंह मौरा गांव निवासी प्रदीप कुमार सिंह के पुत्र हैं जो वर्ष 2006 से भारतीय वायु सेना में कार्यरत हैं और अक्षित के मां गीतांजली सिंह घर पर उनकी पढाई का ध्यान अच्छे से रखते हैं।

अक्षित की इस सफलता पर बाबा प्रदीप कुमार सिंह,चाचा संजीवन कुमार सिंह,भीमराज,अजीत कुमार यादव,प्रदीप कुमार सिंह, सज्जन कुमार सिंह, अनंत सिंह,बिपुल सिंह, विभाकर सिंह,सुमंत सिंह,सौरभ सिंह सहित अन्य ग्रामीणों ने बधाई दी है।

किसानों को मत्स्य पालन एवं मोती पालन का दिया प्रशिक्षण

प्रात : किरण, संवाददाता

हाजीपुर। मत्स्य पालन, पशुपालन, एवं डेयरी मंत्रालय ,भारत सरकार के राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, कौशल्या गंगा, भुवनेश्वर, उडीसा के वैज्ञानिकों के द्वारा बिहार के किसानों को मत्स्य पालन एवं मोती पालन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। जागृति कला केन्द्र के सहयोग से ममता महिला किसान क्लब के 30 सदस्यों को पॉच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण दिलाई गई। मुख्य रूप से मछली जीरा उत्पादन, मत्स्य पालन, रंगीन मछली पालन और मोती पालन के बारे में बताया गया। मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में सीफा के वैज्ञानिक डॉ सत्य नारायण साहू, जैविक जल कृषि के बारे में डॉ एस एन सेठी, जीरा उत्पादन के बारे में वैज्ञानिक स्मृति रेखा पति एवं प्रज्ञा कुमारी, तालाब निर्माण के बारे में शिव शंकर सिंह , उप निदेशक , आहार प्रबंधन के बारे में डॉ बी के चॉद, डीन, पशु एवं मत्स्य विश्व विद्यालय, पश्चिम बंगाल, ज्ञान रंजन सांमल, जिला मत्स्य पालन पदाधिकारी, भुवनेश्वर, सौम्य रंजन सहित सीफा के वैज्ञानिक डॉ राजेश कुमार, डॉ चन्दन कुमार आदि थे। केन्द्रीय मीठा जल जीव-पालन अनुसंधान संस्थान (उक्क्ष्क्ष) के निदेशक डॉ पी के साहू , एवं वैज्ञानिकों के द्वारा जागृति कला केन्द्र के सचिव डॉ अभय नाथ सिंह को सम्मानित किया गया। निदेशक ने कहा कि बिहार में मत्स्य पालन एवं जीरा उत्पादन और मोती पालन की काफी सम्भावनाये है। प्रशिक्षित किसान इस कार्य से काफी लाभान्वित होंगे। जागृति कला केन्द्र के सचिव, सह, बी पी एस कॉलेज, देसरी के सहायक प्राध्यापक डॉ अभय नाथ सिंह ने मुख्य वक्ता के रुप में कहा कि इस कार्य के लिए प्रशिक्षण बहुत जरूरी है। तालाब का निर्माण, जल प्रबंधन, मछली का चयन, बिमारी से बचाव, वैज्ञानिक तकनीक से पालन करने से काफी लाभ है। सरकार के द्वारा बीमा, अनुदान आदि की व्यवस्था की गयी है। स्वरोजगार के लिए मत्स्य पालन एक अच्छा व्यवसाय है। प्रमुख किसानों में हरिवंश नारायण सिंह, महेन्द्र सिंह, राम कृपाल सिंह, अनिता देवी, मालती देवी, विकास सहनी, विकास कुमार पासवान, वरुण यादव, सन्नी कुमार , चांदनी पासवान, दीपक कुमार सिंह आदि थे ।

अपराधियों ने महिला को हथियार के बल पर बंधक बना लूट ली लाखों रुपए की संपति

प्रात : किरण, संवाददाता

महुआ । महुआ थाना क्षेत्र के बिशुनपुर हीराराम उर्फ पहाड़पुर पंचायत के गरजौल वार्ड नंबर 1 में शुक्रवार की दोपहर चार बाइक पर सवार करीब सात से आठ हथियारों से लैस अपराधियों ने दिन दहाड़े डकैती की घटना को अंजाम देते हुए लाखों रुपए की संपत्ति लूटकर भाग निकलने में सफल रहे।घटना के बाद इलाके में दहशत फैल गई। वहीं पीड़ित परिवार ने घटना की सूचना महुआ थाने को दी। सूचना मिलते ही महुआ के थाना अध्यक्ष अरविंद पासवान अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंचकर मामले की छानबीन शुरू कर दी। वहीं घटना की गंभीरता को देखते हुए आसपास के इलाकों में सघन वाहन चेकिंग अभियान भी शुरू कर दिया गया। वही आसपास के लोगों को दिनदहाड़े डकैती की घटना का खबर मिली तो दर्जनों की संख्या में लोग पीड़ित परिवार के दरवाजे पर पहुंच गए। घटना के बाद आसपास के इलाकों में दहशत का माहौल बना हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार महुआ थाना क्षेत्र के विशुनपुर हीराराम उर्फ पहाड़पुर पंचायत के गरजौल वार्ड नंबर 1 के निवासी शिव शंकर मिश्रा उर्फ पप्पू मिश्रा के घर में शुक्रवार के दोपहर 4 बाइक पर सवार होकर आए करीब आधा दर्जन से ज्यादा अपराधियों ने हथियार के बल पर घर में घुसते ही घर के महिलाओं को बंधक बनाते हुए पिस्टल के बल पर लाखों रुपए का सामान लूट कर चलते बने। पीड़ित शिव शंकर मिश्रा उर्फ पप्पू मिश्रा की पत्नी करुणा देवी ने बताया कि शुक्रवार के दोपहर करीब 12 बजे के आसपास दरवाजे पर कुछ लोग अचानक पहुंचे। जब मैं गाड़ी की आवाज सुनकर बाहर निकली तो सभी मेरे घर में घुस गए और पिस्तौल के बल पर मुझे घर में मुंह बांधकर बंधक बना लिया और गोदरेज की चाबी मांग ली और गोदरेज समेत दीवान में रखें सभी कीमती सामान,गहने जेवर और हजारों रुपए नगद लूट कर चलते बने। पीड़ित करना देवी ने बताया कि घर में छोटे बच्चों को भी अपराधियों ने मुंह में टेप साट कर उसका मुंह बंद कर दिया ताकि वह शोरगुल नहीं मचा सके। अपराधियों के चले जाने के बाद किसी तरह घर से बाहर निकल कर जब हल्ला मचाया तो आसपास के लोगों को पता चला की डकैती की घटना को अंजाम देते हुए अपराधी आराम से भाग निकलने में सफल रहे। घटना के बाद पीड़ित परिवार ने महुआ थाने को इसकी सूचना दी सूचना मिलते ही महुआ के थाना अध्यक्ष अरविंद पासवान अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंचे और मामले की छानबीन शुरू कर दी वहीं मामले की नजाकत को देखते हुए महुआ के डीएसपी सूरभ सुमन और जिले से डी आ ई ओ की टीम ने भी मौके पर पहुंचकर पीड़ित परिवार से पूछताछ करते हुए घटनास्थल का गहन मुआयना करते हुए मामले की छानबीन शुरू कर दी है। दिनदहाड़े सुदूर देहात में डकैती घटना से पीड़ित परिवार दहशत में हैं वही के आसपास के इलाकों में भी दहशत का माहौल बना हुआ है।

राज्यस्तरीय अभियंता अजीत कुमार आजाद मेमोरियल क्रिकेट प्रतियोगिता शुरू

प्रात : किरण, संवाददाता

हाजीपुर । राज्यस्तरीय अभियंता अजीत कुमार आजाद मेमोरियल क्रिकेट प्रतियोगिता का शुक्रवार को भव्य आगाज हुआ। प्रतियोगिता का उद्घाटन प्रतियोगिता के संयोजक डॉ दामोदर प्रसाद सिंह, शिक्षाविद कृष्ण कुमार, कांग्रेस के वैशाली प्रभारी प्रदुम्न राय, कांग्रेस नेता डॉ अक्षय शुक्ला, वैशाली जिला खेल संघ के सचिव रविन्द्र प्रसाद सिंह, लोजपा नेता संतोष स्वराज, मिथिलेश कुमार सिंह, भाजपा के जिला प्रवक्ता अभिजीत कुमार विक्की,भाजपा युवा मोर्चा के जिला महामंत्री रजनीश कुमार सिंह, भाजपा क्रीड़ा मंच के जिला संयोजक रत्नेश कुमार टिंकू, परमेन्द्र कुमार सिंह, रौशन कुमार, प्रसून कुमार समेत अन्य ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया। वही मैच समाप्ति के उपरांत मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार पूर्व प्रमुख हेमंत कुमार ने दिया। वैशाली के भगवानपुर रत्ती गांव स्थित डॉ जेपी सिन्हा स्टेडियम में आयोजित मैच का टॉस बेगुसराय के कप्तान ने जीता तथा पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। 40-40 ओवरों के निर्धारित मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए बेगुसराय के खिलाड़ियों ने 09 विकेट के नुकसान पर 209 रनों के स्कोर खड़ा किया। अपने टीम के लिए कुणाल मणि ने नाबाद रहते हुए 48 रन, अभिराज कुमार ने 46 रन, राजा विशाल ने 26 रन, शांतनु सिंह ने 25 रन एवं सिद्धार्थ सिन्हा ने 19 रनों को स्कोर खड़ा किया। पटना टीम की ओर से गेंदबाजी करते हुए विनीत कुमार ने 03 विकेट, सत्यम कुमार 02 विकेट एवं सूरज कश्यप, राघवेंद्र प्रताप तथा श्यामल ने 01-01 विकेट लिए।

210 रनों के विजय लक्ष्य को प्राप्त करने उतरी पटना की टीम ने सभी विकेटों के नुकसान पर 179 रन ही बना सकी और यह मैच 30 रनों से हार गई। अपने टीम के लिए आशीष कुमार ने 64 रन, राघवेंद्र प्रताप 26 रन एवं श्यामल पांडेय ने 29 रन बनाए बाकी के बल्लेबाज कुछ खास नही कर सके। बेगुसराय टीम की ओर से शानदार गेंदबाजी करते हुए आशीष ब्राह्मण ने 05 विकेट लिए वही कुणाल मणि ने 02 विकेट लिए। विजेता टीम के कुणाल मणि को उनके बेहतरीन बल्लेबाजी एवं गेंदबाजी के लिए मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया।

अग्नि सुरक्षा को ले जागरूकता कार्यक्रम

प्रात : किरण, संवाददाता

मुरलीगंज मधेपुरा प्रखंड क्षेत्र के जोरगमा मध्य विद्यालय परिसर में अग्निशमन विभाग के कर्मियों के द्वारा आग से बचाव को लेकर जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। अग्निशमन विभाग कर्मियों ने मॉक ड्रील के माध्यम से सुरक्षा के कई महत्वपूर्ण जानकारी दिया। टीम के सदस्यों ने डेमो के जरिए लोगों को जागरूक किया। अग्निशमन दल के देवकुमार और रोहन कुमार ने बताया कि आग लगने पर खुद को अलर्ट रखें और दूसरों को भी मार्गदर्शित करें। असामान्य स्थिति में अपनी आंखे बंद करके बाहर निकलें। उन्होंने बताया कि खाना बनाते समय किचन में अतिरिक्त सावधानी बरतें। प्राथमिक उपचार कीट को हमेशा तैयार रखें। मिट्टी तेल, गैस सिलेंडर आदि ज्वलनशील वस्तुओं को बच्चों की पहुंच से दूर रखें। बच्चों को अग्नि सुरक्षा के नियम से अवगत कराते रहें। इस दौरान विद्यालय के छात्र छात्राओ और शिक्षक मौजूद रहे।

जॉब कैम्प-सह-व्यवसायिक मार्गदशन कैम्प का आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

हाजीपुर। श्रम संसाधन विभाग, बिहार सरकार, जिला नियोजनालय, वैशाली, हाजीपुर के द्वारा एक दिवसीय जॉब कैम्प-सह-व्यवसायिक मार्गदशन कैम्प का आयोजन रूडसेट संस्थान, हाजीपुर, वैशाली (जिला अतिथि गृह के पास) के प्रांगण में निजी क्षेत्र की कम्पनी द्वारा अभ्यर्थियों के योग्यतानुसार कैम्पस चयन किया गया। इस जॉब कैम्प में अभ्यथियों ने भाग लिया। कंपनियों के द्वारा कुल 50 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। इस एक दिवसीय जॉब कैम्प में कुल 85 अभ्यर्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर जिला नियोजन पदाधिकारी श्री प्रणव प्रतीक, रूडसेट, निदेशक, श्री सुनिल कुमार, उ०व०लिपिक, श्री राजकुमार प्रसाद, श्री राहुल कुमार झा, सत्येन्द्र कुमार पासवान के अलावा जिला कौशल प्रबंधक श्री विश्वजीत कुमार, श्री अमरनाथ गुंजन, श्री कुमार अभिषेक एवं जिला कौशल विशेषज्ञ श्री मुकेश कुमार उपस्थित रहे।

विचार मंथन

@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, शनिवार,16 मार्च, 2024

सम्पादकीय

पाकिस्तान बसाने को सीएए नहीं

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) की व्याख्या ही बदलने की कोशिश की है। उन्होंने कुछ सवाल उठाए हैं, जो भावोत्तेजक हैं। उनकी मंशा हिंदू-मुसलमान से आगे बढकर आर्थिक संसाधनों और स्थितियों पर केंद्रित करने की है, ताकि राजनीति की दिशा और दशा बदली जा सके। हालांकि ऐसी संभावनाएं नगण्य हैं। संयुक्त राष्ट्र नागरिकता को व्यक्तिपरक सुरक्षा का बुनियादी तत्त्व मानता है और प्रताड़ित, शोषित, मानवाधिकार कुचलन के शिकार लोगों को शरणार्थी के तौर पर किसी भी देश में प्रवेश करने को मानवीय कर्म मानता है। संयुक्त राष्ट्र ऐसे अंतरराष्ट्रीय समझौते का भी जिक्र करता है, जिसके तहत शरणार्थियों को नागरिकता भी दी जा सकती है। केजरीवाल ने उत्तेजित अवस्था में कहा है कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान के लोगों को भारत में बसाने का कानून बनाया गया है। कल हमारे देश में चोरियां, डकैतियां, बलात्कार होंगे। जगह-जगह दंगे भी भडकेंगे। देश की सुरक्षा-व्यवस्था का क्या होगा? केजरीवाल का आकलन है कि अब जो पलायन होगा, वह भारत-विभाजन से भी बड़ा और खतरनाक होगा। केजरीवाल के मुताबिक, तीनों पड़ोसी देशों से 2.5 करोड़ से अधिक लोगों का पलायन हो सकता है। भारत सरकार उन्हें कहां रखेगी? कहां घर देगी? कहां खाने को अनाज देगी? कितनी नौकरियां और रोजगार दिए जा सकेंगे? देश के आर्थिक संसाधन तो सीमित हैं। हमारे नौजवानों के लिए नौकरी, रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं हैं और भाजपा ने देश के भीतर एक और पाकिस्तान को बसाने का कानून बनाया है। केजरीवाल ने सीएए को भाजपा का वोट बैंक तैयार करने की रणनीति करार दिया है।

बहरहाल केजरीवाल के अपने तर्क और राजनीति-शास्त्र हो सकते हैं। वह सीएए पर सांप्रदायिक उन्माद फैलाने वाली भीड़ में शामिल नहीं होना चाहते, लिहाजा आर्थिक संसाधनों के आधार पर भावोत्तेजक राजनीति कर रहे हैं। विभाजन के दौर का वीभत्स और त्रासद सरकारी आंकड़ा यह है कि पाकिस्तान, पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश), अफगानिस्तान तीनों पड़ोसी देशों से 72 लाख के करीब लोगों ने पलायन किया था। हालांकि अनौपचारिक आंकड़े ये हैं कि तब 2 या 2.5 करोड़ से अधिक लोगों ने पलायन किया होगा! ये आंकड़े विभिन्न संगठनों और मीडिया प्रतिनिधियों ने जुटाए थे। भारत-विभाजन से ज्यादा खौफनाक घटनाक्रम उस दौर में कोई और नहीं हुआ।

दो रुपए की छूट और अरबों की लूट

राकेश अचल

आज भारत सरकार को धन्यवाद देने के साथ ही उसकी निंदा करने का भी दिन है। धन्यवाद इसलिए की उसने पूरे पांच साल लूटने के बाद जनता को डीजल और पेट्रोल के दामों में दो रुपए लीटर की छूट देने का ऐलान किया है और निंदा इसलिए की सरकार ने इलेक्टोरल बांड के जरिये पांच साल में 60 अरब का चन्दा ईडी की नोंक पर वसूल लिया। ये दोनों ही बातें चूंकि तथ्यात्मक हैं इसलिए इन्हें लेकर आप खुद फैसला कर सकते हैं कि आपको आने वाले दिनों में लुटेरी सरकार चाहिए या उसका कोई विकल्प। इसमें कोई दो राय नहीं की हमारी सियासत का ढांचा लोकतान्त्रिक है लेकिन इसमें लूर-खसोट की पूरी गुंजाइश है। पिछले 77 साल में जो भी सत्ता में आया उसने लोक कल्याण के साथ जितना बना देश और देश की जनता को लूटा। किसी ने कम लूटा तो किसी ने ज्यादा लूटा। किसी ने लूटने में उदारता दिखाई तो किसी ने लूटने में पूरी निर्ममता का प्रदर्शन किया। केंद्रीय चुनाव आयोग की वेब साइट पर दशार्ये गए आंकड़े गवाही दे रहे हैं कि आजादी के बाद कोई सबसे बड़ी लूट मौजूदा सत्ता ने की है। भाजपा की और मोदी की गारंटी वाली सरकार ने पांच साल में इलेक्टोरल बांड के जरिये दस-बीस लाख नहीं बल्कि पूरे 60 अरब रुपए देश के उद्योगपतियों से वसूल किये और वो भी ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) की नोंक पर। आप कहेंगे कि ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) कोई चाकू या तलवार तो नहीं है जो उसकी नोंक होती हो, लेकिन हकीकत ये है कि इस संस्था की नोक इतनी पेनी है कि जिस की भी गर्दन पर रखी गयी उसने मन से या बेमन से इलेक्टोरल बांड खरीदकर भाजपा के खाते में डाल दिए। यानि 60 अरब तो कांग्रेस छह दशक तक देश पर राज करने वाली कांग्रेस भी नहीं खोज पायी थी। केंचुआ की वेब साइट पर आयी 762 पृष्ठों की जानकारी का सार ये है कि भाजपा ने पांच साल में कुल 60 अरब रुपये से अधिक के इलेक्टोरल बॉन्ड को भुनाया है। इस मामले में दूसरे नंबर पर तृणमूल कांग्रेस है, जिसने 16 अरब रुपये से अधिक के इलेक्टोरल बॉन्ड को भुनाया है। राजनीतिक दलों के लिए सबसे ज्यादा इलेक्टोरल बॉन्ड खरीदने वाली कंपनी फ़्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज है। इस कंपनी ने कुल 1368 बॉन्ड खरीदे, जिसकी क़ीमत 13.6 अरब रुपये से अधिक रही। लुटेरों की सरताज भाजपा अब यदि रसोई गैस पर 100 रुपए की और पेट्रोल -डीजल पर आपको दो रुपए लीटर की छूट दे रही है तो ये कोई अहसान नहीं बल्कि आने वाले आम चुनावों में आपके अनमोल वोट की सबसे सस्ती कीमत है। अब यदि देश की भोली जनता इस हकीकत को नहीं समझती तो उसका मालिक भगवान ही हो सकता है, कोई राजनीतिक दल नहीं। राजनीतिक दल तो चोर-चोर मौसेरे भाई हैं, कोई छोटा लुटेरा तो कोई बड़ा लुटेरा। लूटना सभी के डीएनए में शामिल है। देश की जनता का दुर्भाग्य है कि उसे इन्हीं लुटेरों के गिरोहों में से अपने लिए चौकीदार, सेवक, संरक्षक और भाग्य विधाता चुनना है।

मेरा या किसी दूसरे लेखक/पत्रकार का अनुभव मुमकिन है कि कम हो किन्तु रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के अनुभव से ही हमें सबक लेना चाहिये। खासतौर पर सत्ता के चुनाव के समय के आचरण को देखकर। चुनाव के मौसम में आखिर जनता के ऊपर उपहारों/ रियायतों की बरसात क्यों हो रही है? सरकार इतनी विनयवत क्यों है? क्यों झुक रही है? इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास इशारों में कहते हैं कि -नवन नीच की अति दुखदाई जिमि धनु, अंकुश, उरग, बिलाई मतलब साफ है। वे उदाहरण सहित समझा गए हैं कि जैसे धनुष, अंकुश, सांप और बिल्ली झुकती है तो दुःख ही देती है अर्थात जिसके स्वभाव में नीचता है वो जब भी झुकेगा आपको ऊपर घात करेगा, इसलिये ऐसे सभी तत्वों से सावधान रहना चाहिये। हमारी सत्ता में धनुष, अंकुश, सर्प और बिल्ली किसी न किसी रूप में विद्यमान है। आज यदि सत्ता रहमदिली दिखा रही है तो समझ लीजिये कि आने वाले दिनों में यही सत्ता आपके ऊपर कहर ढाने वाली है। कहर का रूप कुछ भी हो सकता है। इसे पहचानना आसान नहीं है। ये कभी धाराओं के रूप में होगा तो कभी अध्यादेशों के रूप में। कभी एक देश, एक विधान, एक निशान, एक भाषा, एक वेश के रूप में होगा तो कभी किसी दूसरे रूप में। फिलहाल तो चुनाव इस विनय की वजह है। आप कल्पना कीजिये कि जिस सरकार ने पांच साल में अकेले इलेक्टोरल बांड से 60 अरब कमा लिए वो सरकार महंगाई के जरिये आपको भी लगातार लूटती रही और अब जब आम चुनाव सिर पर है तो आपको पेट्रोल-डीजल पर दो रुपए लीटर की छोट देकर या रसोई गैस सिलेंडर पर सौ रुपए की छूट देकर बरगलाना चाह रही है। सत्तारूढ़ दल ने चुनावी चंदे से जुटाई गयी रकम के जरिये देश भर में अपनी पार्टी के लिए 450 आधुनिक कार्यालय बना लिए, लेकिन भवन विहीन स्कूलों कि फिक्र नहीं की। अस्पताल बनाने को प्राथमिकता नहीं दी। बहरहाल आम चुनाव के जरिये कानून हमें और आपको एक अवसर देता है कि हम इस लूट-खसोट करने वाली संस्था से अपना हिसाब बराबर करें या इस लूट-खसोट को लगातार जारी रखें! इलेक्टोरल बांड के जरिये की गयी लूट के जरिये धन वसूली के मामले में तीसरे नंबर पर अखिल भारतीय कांग्रेस समिति है जिसने 14 अरब रुपये से अधिक के इलेक्टोरल बॉन्ड को भुनाया है। इसके बाद भारत राष्ट्र समिति ने 12 अरब रुपये और बीजू जनता दल ने 7 अरब रुपये से अधिक के इलेक्टोरल बॉन्ड को भुनाया है। इस मामले में पाँचवें और छठे नंबर पर द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और वाईएसआर कांग्रेस (युवासेना) रहीं। इन पार्टियों के बाद तेलुगु देशम पार्टी, शिवसेना, राष्ट्रीय जनता दल, आम आदमी पार्टी, जनता दल (सेक्युलर), सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी, जनसेना पार्टी, अध्यक्ष समाजवादी पार्टी, बिहार प्रदेश जनता दल (यूनाइटेड), झारखंड मुक्ति मोर्चा, शिरोमणि अकाली दल, ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, शिवसेना, महाराष्ट्रवादी गोमन्तक पार्टी, जम्मू और कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी का नाम शामिल है। ये आंकड़े मैंने आपको इसलिए बताये ताकि आपको फैसला करने में मदद मिले। आपसब तो केंचुआ कि वेब साइट को खंगाल नहीं सकते। चुनावी साल में राहतों की बरसात में भीगकर जनता अपने दुःख-दर्द को भूलकर क्या फैसला करती है ये तो जनता जाने लेकिन एक बात जरूर है कि देश आजादी के बाद से सबसे गंभीर दौर से गुजर रहा है। देश को गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी और शिक्षा के तमाम लक्ष्यों के साथ ही धर्मान्धता से भी जूझना पड़ रहा है।

सीएए को समझे बिना मोदी सरकार पर कीचड़ उछालना केजरीवाल की बौखलाहट है

वे एवं अन्य विपक्षी दलों के नेता सीएए रूपी उजालों पर कालिख पोतने का प्रयास करते हुए आकाश में पैबन्द लगाना चाहते हैं और सछिद्र नाव में सवार होकर राजनीति-सागर की यात्रा करना चाहते हैं। ऐसा करते हुए वे न केवल आम जनता को गुमराह कर रहे हैं, बल्कि अराजकता का माहौल निर्मित कर रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी में लाखों की संख्या में पाकिस्तान, बांगलादेश और अफगानिस्तान से हिंदू व सिख आने से चोरी, रेप और अपराध की घटनाएं बढ़ने की बात कहकर केजरीवाल ने इन लोगों की भावनाओं को आहत किया हैं। केजरीवाल के बयान भ्रामक, बेबुनियाद एवं विध्वंसात्मक इसलिये है कि सीएए नये आने वाले हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध एवं पारसी लोगों पर लागू ही नहीं होगा, बल्कि देश में वर्ष 2014 एवं उससे पहले आये ऐसे शरणार्थियों को सीएए के अन्तर्गत नागरिकता देने का कानून हैं। अब इससे नये लोगों के आने, बेरोजगारी बढ़ने एवं कानून-व्यवस्था चरमरा के प्रश्न कहां से आ गये? विपक्षी दल इस कानून के सन्दर्भ में कपट और झूठ का सहारा लेकर जिस तरह दुष्प्रचार में जुट गए हैं, वह केवल अप्रत्याशित ही नहीं, खतरनाक भी है। वोट बैंक की बेहद सस्ती, घटिया और गंदी राजनीति के चलते किया जा रहा यह खतरनाक एवं देश तोड़क दुष्प्रचार न केवल लोगों को बरगलाने, बल्कि उकसाने वाला भी है। इस तरह का विरोध समय एवं शक्ति का अपव्यय है तथा बुद्धि का दिवालियापन है। यह लोकतंत्र के मूल्यों को धुंधलाने एवं ध्वस्त करने की कुचेष्टा है। सीएए की मूल आत्मा को समझे बिना उसका विरोध करना एवं मोदी सरकार पर कीचड़ उछालना बौखलाहट का द्योतक हैं।

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं

दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल लगातार नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के लागू होने का बेहूदा, बेतुका एवं उच्छृंखल विरोध कर रहे हैं। वे एवं अन्य विपक्षी दलों के नेता सीएए रूपी उजालों पर कालिख पोतने का प्रयास करते हुए आकाश में पैबन्द लगाना चाहते हैं और सछिद्र नाव में सवार होकर राजनीति-सागर की यात्रा करना चाहते हैं। ऐसा करते हुए वे न केवल आम जनता को गुमराह कर रहे हैं, बल्कि अराजकता का माहौल निर्मित कर रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी में लाखों की संख्या में पाकिस्तान, बांगलादेश और अफगानिस्तान से हिंदू व सिख आने से चोरी, रेप और अपराध की घटनाएं बढ़ने की बात कहकर केजरीवाल ने इन लोगों की भावनाओं को आहत किया हैं। केजरीवाल के बयान भ्रामक, बेबुनियाद एवं विध्वंसात्मक इसलिये है कि सीएए नये आने वाले हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध एवं पारसी लोगों पर लागू ही नहीं होगा, बल्कि देश में वर्ष 2014 एवं उससे पहले आये ऐसे शरणार्थियों को सीएए के अन्तर्गत नागरिकता देने का कानून हैं। अब इससे नये लोगों के आने, बेरोजगारी बढ़ने एवं कानून-व्यवस्था चरमरा के प्रश्न कहां से आ गये? विपक्षी दल इस कानून के सन्दर्भ में कपट और झूठ का सहारा लेकर जिस तरह दुष्प्रचार में जुट गए हैं, वह केवल अप्रत्याशित ही नहीं, खतरनाक भी है। वोट बैंक की बेहद सस्ती, घटिया और गंदी राजनीति के चलते किया जा रहा यह खतरनाक एवं देश तोड़क दुष्प्रचार न केवल लोगों को बरगलाने, बल्कि उकसाने वाला भी है। इस तरह का विरोध समय एवं शक्ति का अपव्यय है तथा बुद्धि का दिवालियापन है। यह लोकतंत्र के मूल्यों को धुंधलाने एवं ध्वस्त करने की कुचेष्टा है। सीएए की मूल आत्मा को समझे बिना उसका विरोध करना एवं मोदी सरकार पर कीचड़ उछालना बौखलाहट का द्योतक हैं। केजरीवाल का यह कहना कि सीएए के साथ, भाजपा सरकार ने पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश से बड़ी संख्या में गरीब अल्पसंख्यकों के भारत आने के गेट खोल दिए हैं। यह 1947 से भी बड़ा माइग्रेशन होगा। क्या केजरीवाल ने सीएए का नया कानून पढ़ा है, उसमें कहीं भी ऐसी किसी स्थिति का उल्लेख है? केजरीवाल की ही तर्ज पर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को यह तो समझ नहीं आया कि नागरिकता कानून वैध है या नहीं, लेकिन उन्होंने यह ठान लिया कि वह बंगाल में उसे लागू नहीं होने देंगी। आखिर वह होती कौन हैं इस कानून को न लागू करने वाली? यह प्रश्न इसलिए, क्योंकि इस कानून का किसी राज्य सरकार से कोई लेना-देना ही नहीं। नागरिकता देना केवल केंद्र सरकार का अधिकार है। यह बुनियादी बात तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन को भी समझनी होगी, क्योंकि उनकी ओर से भी यह कहा जा रहा है कि वह इस कानून को अपने राज्य में लागू नहीं होने देंगे। यह हास्यास्पद एवं विरोधीभासी स्थिति है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल इस विचित्र नतीजे पर पहुंच गए कि नागरिकता कानून को अमल में लाकर केंद्र सरकार पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान के लोगों को भारत लाकर उन्हें नौकरियां देने और उनके लिए घर बनाने का काम करने जा रही है। जबकि सीएए पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं बांग्लादेश से किन्हीं नये अल्पसंख्यकों का भारत लाकर बसाने, उन्हें घर एवं नौकरी देने का कानून है ही नहीं। कोई भी यह समझ सकता है कि वह संकीर्ण राजनीतिक कारणों से नागरिकता कानून की मनमानी व्याख्या कर रहे हैं और इस तथ्य की जानबूझकर अनदेखी कर रहे हैं कि यह कानून उक्त तीन देशों के अल्पसंख्यकों को बुलाकर नागरिकता देने का नहीं है।

केजरीवाल के बचकाने एवं बेहूदे बयानों से हिन्दू एवं सिख शरणार्थियों में काफी गुस्सा देखा गया है। उन पर चोरी, रेप और अपराध जैसे आधारहीन आरोप लगाने से उनकी भावनाएं आहत हुई हैं, जो शरणार्थी वर्षों से न्याय होने की उम्मीद लगाये इस कानून की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन पर घटिया राजनीति के चलते तरह-तरह के वार उनको पीड़ा दे रहे हैं। केजरीवाल, ममता एवं एमके स्टालिन का मोदी-विरोध के नाम पर देश-विरोध एवं कानून विरोध पर उतर जाना उनकी स्तरहीन राजनीति को ही दर्शा रहा है। मोदी का विरोध कोई नई बात नहीं है। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि इन नेताओं की विरोध करना ही नियति हैं। आश्चर्य इस बात का है कि विरोध की तीव्रता एवं दीर्घता के बावजूद मोदी के अस्तित्व पर कोई आंच नहीं आ सकी। जहां तक सीएए के लागू होने का प्रश्न है तो यह अब एक कानून बन चुका है और उसे लागू होने से कोई नहीं रोक सकता। दिल्ली का मुख्यमंत्री होने के नाते अरविंद केजरीवाल को पाकिस्तान, बांगलादेश और अफगानिस्तान से आये हिंदू व सिख शरणार्थियों के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए, उनकी दीन दशा से परिचित होने के साथ ही उनके प्रति न्यूनतम संवेदनशीलता का भी उन्हें परिचय देना चाहिए। यदि विरोधी दलों को यह लगता है कि नागरिकता कानून ठीक नहीं तो वह उससे असहमति जताने और कांग्रेस एवं तृणमूल कांग्रेस नेताओं की तरह सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने को स्वतंत्र हैं, लेकिन इसके नाम पर उन्हें लोगों को भड़काने से बाज आना चाहिए। उनकी इसी भड़काऊ राजनीति के कारण चार साल पहले देश में जगह-जगह हिंसा हुई थी और शांतिपूर्ण विरोध के बहाने आगजनी की गई थी। दिल्ली में तो शाहीन बाग इलाके में विपक्षी दलों के सहयोग और समर्थन से एक व्यस्त सड़क घेरकर महीनों तक धरना चलाने से आम जनता पीड़ित एवं परेशान हुई। विद्वेष और वैमनस्य पैदा करने वाले इसी धरने के चलते दिल्ली में भीषण दंगा हुआ था, जिसमें 50 से अधिक लोग मारे गए थे। क्या विपक्षी दल अशांति, हिंसा एवं अराजकता की आग फैलाकर फिर से अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकना चाहते हैं? यदि नहीं तो फिर उन्हें नागरिकता कानून के विरोध में जबान संभालकर बोलना चाहिए। विरोध का भी कोई उद्देश्य और स्तर होता है। निरुद्देश्य एवं स्तरहीन विरोध, विरोधी खेमे की स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति, ईर्ष्या एवं विध्वंस की नीति का ही स्वयंभू प्रमाण है। सीएए लागू होने को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच राजनीति तेज होने लगी है, यह आगामी लोकसभा चुनाव का एक मुख्य मुद्दा होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। भाजपा नेता इसे नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा उठाया गया ऐतिहासिक कदम बता रहे हैं तो वहीं विपक्ष इसका विरोध कर रहा है। लेकिन मोदी सरकार का यह कदम ऐतिहासिक एवं साहसिक तो है, क्योंकि आजादी के बाद से अब तक शरणार्थियों ने जो तकलीफें झेली हैं, जो कष्ट एवं उपेक्षाओं का जीया है, वह उन्हें नागरिकता मिलने से ही दूर हो सकती है। अब उन्हें नागरिकता मिलने का रास्ता साफ हो गया है तो उसका स्वागत होना चाहिए। केजरीवाल तो शरणार्थियों को मिल रही नागरिकता की स्वतंत्र सांसों का स्वागत की बजाय विरोध कर रहे हैं, यह कैसी राजनीति है? यह कैसे राजनेता है? यह कैसा राजनीतिक चरित्र है? केजरीवाल एवं ममता की मानें तो सीएए लागू होने के बाद अगर पड़ोसी देशों के डेढ़ करोड़ अल्पसंख्यक भी भारत आ गए तो यह स्थिति खतरनाक हो जाएगी। कोई उनसे पूछे कि इस कानून में ऐसा कहा लिखा है? यह गन्दी गैर-जिम्मेदाराना राजनीति का द्योतक है, जिसका जबाव आम-जनता आगामी लोकसभा चुनाव में देगी। इन नेताओं ने मोदी के खिलाफ एवं राष्ट्रहीत की नीतियों एवं योजनाओं पर कीचड़ उछालने की जो हरकतें की हैं, सीएए तक पहुंच कर वे पराकाष्ठा तक पहुंच गयी हैं। पर इससे मोदी का वर्चस्व कभी धूमिल होने वाला नहीं हैं। क्योंकि उनकी नीति विशुद्ध है और सैद्धान्तिक आधार पुष्ट है।

घातक हो सकता है मायावती का अकेले लोकसभा चुनाव लड़ने का निर्णय

मायावती इसके पहले भी कई बार लोकसभा चुनाव के लिए किसी भी तरह के गठबंधन में शामिल होने से इंकार करती रही हैं। उन्होंने चुनाव के लिए अभी तक प्रत्याशियों की घोषणा भी नहीं की है जिसके कारण उनके इंडिया गठबंधन में शामिल होने के कयास लगाए जा रहे हैं। 2024 के आम चुनाव में राजनीतिक लिहाज से उत्तर प्रदेश जैसे अहम राज्य में हर राजनीतिक दल अधिक से अधिक सीटें हासिल करना चाहता है। इसलिए एनडीए और इंडिया गठबंधन में छोटे-बड़े दल शामिल होकर अपना राजनीतिक कद और हैसियत बढ़ाना चाहते हैं। ऐसे में मायावती का किसी गठबंधन का हिस्सा नहीं बनना कई प्रश्न खड़े करता है। प्रश्न यह है कि क्या अकेले चुनाव लड़कर मायावती एनडीए और इंडिया गठबंधन को चुनौती दे पाएंगी? क्या मायावती को भरोसा है कि उनका कोर वोट बैंक पूरी तरह उनका साथ देगा? क्या मायावती को लगता है कि त्रिकोणीय मुकाबले में बसपा हावी रहेगी? क्या मायावती को इस बात का भरोसा है कि इंडिया गठबंधन की बजाय मुस्लिम मतदाता उनके साथ मजबूती से खड़े होंगे? क्या मायावती चुनाव नतीजों के हिसाब से रणनीति का खुलासा करेगी? क्या मायावती एकला चलो की राह पर हैं या फिर वो जिस तरह से खामोश हैं उसके पीछे कोई बड़ा प्लान है? बसपा प्रमुख ने पिछले छह-सात महीने में अकेले चुनाव लड़ने की बात कई बार कही है, साथ ही यह भी कहा कि गठबंधन करने से उनको नुकसान होता है।

डॉ. आशीष वशिष्ठ
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।

बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती ने फिर एक बार आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर घोषणा की है कि बहुजन समाज पार्टी अकेले लोकसभा चुनाव लड़ेगी। मायावती इसके पहले भी कई बार लोकसभा चुनाव के लिए किसी भी तरह के गठबंधन में शामिल होने से इंकार करती रही हैं। उन्होंने चुनाव के लिए अभी तक प्रत्याशियों की घोषणा भी नहीं की है जिसके कारण उनके इंडिया गठबंधन में शामिल होने के कयास लगाए जा रहे हैं। 2024 के आम चुनाव में राजनीतिक लिहाज से उत्तर प्रदेश जैसे अहम राज्य में हर राजनीतिक दल अधिक से अधिक सीटें हासिल करना चाहता है। इसलिए एनडीए और इंडिया गठबंधन में छोटे-बड़े दल शामिल होकर अपना राजनीतिक कद और हैसियत बढ़ाना चाहते हैं। ऐसे में मायावती का किसी गठबंधन का हिस्सा नहीं बनना कई प्रश्न खड़े करता है। प्रश्न यह है कि क्या अकेले चुनाव लड़कर मायावती एनडीए और इंडिया गठबंधन को चुनौती दे पाएंगी? क्या मायावती को भरोसा है कि उनका कोर वोट बैंक पूरी तरह उनका साथ देगा? क्या मायावती को लगता है कि त्रिकोणीय मुकाबले में बसपा हावी रहेगी? क्या मायावती को इस बात का भरोसा है कि इंडिया गठबंधन की बजाय मुस्लिम मतदाता उनके साथ मजबूती से खड़े होंगे? क्या मायावती चुनाव नतीजों के हिसाब से रणनीति का खुलासा करेगी? क्या मायावती एकला चलो की राह पर हैं या फिर वो जिस तरह से खामोश हैं उसके पीछे कोई बड़ा प्लान है? बसपा प्रमुख ने पिछले छह-सात महीने में अकेले चुनाव लड़ने की बात कई बार कही है, साथ ही यह भी कहा कि गठबंधन करने से उनको नुकसान होता है। इसमें कोई गलत बात नहीं है कि कोई पार्टी गठबंधन नहीं करे और चुनाव अकेले लड़े। लेकिन पार्टी लड़ते हुए तो दिखाई दे! मायावती की बहुजन समाज पार्टी बीजेपी और समाजवादी पार्टी दोनों के साथ गठजोड़ कर चुकी है। लेकिन बीते ढाई दशकों से बसपा का भाजपा के बीजेपी के प्रति ज्यादा रुझान देखा गया है। मायावती तीन बार भाजपा के सहयोग से यूपी की मुख्यमंत्री भी बन चुकी हैं। बसपा ने पिछला लोकसभा चुनाव समाजवादी पार्टी के साथ मिल कर लड़ा था लेकिन सपा की सहायता से शून्य से 10 सीट पर पहुंचने के बाद ही उन्होंने तालमेल समाप्त कर दिया था। इसमें कोई दो राय नहीं है कि बसपा का वोट बैंक भी खिसक रहा है। बसपा सुप्रीमो भले ही कहें कि गठबंधन से उनकी पार्टी को नुकसान होता है लेकिन सच्चाई तो ये है कि पिछले लोकसभा चुनाव में गठबंधन का सबसे ज्यादा लाभ बसपा को ही हुआ था। वर्ष 1996 में बसपा ने 6 लोकसभा सीटों पर जीत हासिल की थी, तब बसपा को 20.6 प्रतिशत मत मिले थे। वर्ष 1998 में बसपा को चार सीटें मिलीं और वोट प्रतिशत बढ़कर 20.9 प्रतिशत हो गया। वर्ष 1999 में बसपा को 14 सीटें मिलीं और मत 22.08 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2004 में सीटें बढ़कर 19 हो गईं और 24.67 प्रतिशत मत मिले। बसपा ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन वर्ष 2009 में किया जब पार्टी को 20 लोकसभा सीटों पर जीत हासिल हुई और 27.42 प्रतिशत मत मिले। बसपा की स्थिति साल 2014 से बदलती चली गई। बीस सांसदों वाली बसपा को इस चुनाव में एक भी सीट हासिल नहीं हो पाई और उसका मत प्रतिशत भी गिरकर 19.77 प्रतिशत पर आ गया। बसपा के वोट में लगभग आठ प्रतिशत की गिरावट आई। 1996 के बाद बसपा का ये सबसे बुरा प्रदर्शन था। वर्ष 2019 में बसपा ने सपा के साथ गठबंधन किया। जिसका बसपा को भरपूर लाभ हुआ और शून्य सीटों वाली बसपा ने दस सीटों पर विजय प्राप्त की। जबकि उसका मत और कम हुअ। इस चुनाव में बसपा को सपा के साथ गठबंधन कर 19.43 प्रतिशत ही मत मिले। विधानसभा में बसपा का केवल एक विधायक है। एक वो समय था जब बसपा चुनाव से काफी समय पहले ही उम्मीदवार घोषित कर देती थी। सबसे पहले संभवतः बसपा ने ही चुनाव से महीनों पहले उम्मीदवार घोषित करने शुरू किए थे। लेकिन अब चुनाव बिल्कुल सिर पर आ चुके हैं और बसपा उम्मीदवारों की घोषणा की बजाय अकेले चुनाव लड़ेंगे का पुराना रिकॉर्ड बजाए जा रही है। जबकि भाजपा, सपा, रालोद और सुभासपा कई सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर चुके हैं। बड़ी मशक्कत के बाद बीते 10 मार्च को बसपा ने यूपी की मुरादाबाद सीट से मो. इरफान सैफी को अपना पहला प्रत्याशी घोषित किया है। पिछले एक दशक में मायावती के कई भरोसेमंद सिपहसालार दूसरी पार्टियों में शामिल होते चले गए। बीते चुनाव में जीते 10 सांसद भी नई सियासी संभावनाएं तलाश रहे हैं। इसमें अंबेडकर नगर से सांसद रितेश पांडे बीजेपी में शामिल हो चुके हैं। उन्हें बीजेपी ने टिकट भी दे दिया है। वहीं गाजीपुर सांसद अफजाल अंसारी को सपा उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। वहीं, अमरोहा से दानिश अली अब कांग्रेस के खेमे में हैं। जौनपुर से सांसद श्याम सिंह यादव भी कांग्रेस की ओर कदम बढ़ा चुके हैं। बिजनौर से सांसद मलूक नागर और लालगंज लोकसभा सीट से सांसद संगीता आजाद के भी पाला बदलने के कयास लगाए जा रहे हैं। यूपी समेत देश के अन्य राज्यों में बीएसपी का सियासी ग्राफ चुनाव दर चुनाव गिरता ही जा रहा है। पिछले वर्ष विधानसभा चुनावों में आकाश आनंद छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्य प्रदेश और तेलंगाना में पार्टी का चुनावी अभियान संभाल रहे थे, जहां पार्टी ने पिछले चुनाव की तुलना में काफी खराब प्रदर्शन किया है। राजस्थान छोड़कर किसी भी राज्य में बसपा का खाता तक नहीं खुला और वोट फीसदी में भी गिरावट आई। बसपा अब उत्तर प्रदेश और बाहर के राज्यों में हर जगह कमजोर दिखाई दे रही है। मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली समेत उत्तर भारत के राज्यों में पार्टी संगठन लचर हाल में है। पार्टी अपने कोर दलित वोटरों को भी एकजुट करने में सफल नहीं हो पाई है।

विष्णु सरकार के फैसलों से किसानों के खिले चेहरे

नसीम अहमद खान

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में गठित छत्तीसगढ़ द्वारा मात्र तीन माह की अल्पावधि में राज्य के किसानों के हित में लिए गए फैसले से राज्य भर के किसान बेहद खुश है। उनके चेहरे खिल गए हैं और मन में एक नई उम्मीद जागी है। प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की समर्थन मूल्य पर खरीदी तथा दो साल के बकाया धान बोनस की राशि 3716 करोड़ रूपए का भुगतान होने से किसान खुश हैं। किसानों संगठनों के पदाधिकारियों का कहना है कि उन्होंने यह सोचा नहीं था कि धान खरीदी और बकाया बोनस को लेकर विष्णु देव सरकार इतनी तेजी से फैसला लेकर उसे लागू भी कर देगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी में शामिल किसानों के हित से जुड़े मामलों को जिस तेजी से छत्तीसगढ़ सरकार ने अमल में लाया है, यह स्वागत योग्य है। छत्तीसगढ़ की जनता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी पर भरोसा जताया है। इस भरोसे को राज्य सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। राज्य सरकार ने राज्य के 18 लाख से अधिक पात्र परिवारों को प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति दी है। किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी की गई है। किसानों का मानना है कि राज्य सरकार के अब तक के फैसलों से यह स्पष्ट हो गया है कि यह सरकार किसानों की हितैषी है। राज्य के किसान भाईयों को 2183 रूपए प्रति क्विंटल के मान से समर्थन मूल्य का भुगतान 48 घण्टे के भीतर उनके बैंक खातों में किया गया है। किसानों को उनकी उपज का वाजिब मूल्य दिलाने के लिए राज्य सरकार ने कृषक उन्नति योजना के माध्यम से 24.72 लाख किसानों को धान के मूल्य के अंतर की राशि 13320 करोड़ रूपए का भुगतान का प्रदेशव्यापी शुभारंभ भी हो चुका है। भारत कृषि प्रधान देश है। देश की जीडीपी में कृषि का बड़ा योगदान है। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था का मूल आधार भी कृषि ही है और यह राज्य धान का कटोरा कहलाता है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय कहते है कि एक दौर ऐसा था जब किसानों के पास उन्नत और बेहतर खेती के लिए पूंजी नहीं होती थी। किसानों को साहूकारों से ऊंची ब्याज दर पर रकम लेकर खेती-किसानी करनी पड़ती थी। किसान हमेशा कर्ज में फंसे रहते थे। इस स्थिति को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने किसानों के हित में सबसे बड़ा कदम उठाया और किसान क्रेडिट कार्ड की योजना लागू की। इससे किसानों को कम दर पर सोसायटियों एवं बैंकों से कर्ज मिलने लगा। छत्तीसगढ़ में वर्ष 2003 में छत्तीसगढ़ में डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में पहली बार भाजपा की सरकार बनी, उस समय सहकारी बैंकों से किसानों को रियायती ब्याज दर पर खेती के लिए कर्ज मिलता था, जिसे धीरे-धीरे घटाकर शून्य प्रतिशत कर दिया गया। किसानों को बिना ब्याज के खेती-किसानी के लिए ऋण देने का काम छत्तीसगढ़ की रमन सरकार के दौर में शुरू हुआ था। आज भी किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर खेती के लिए लोन मिल रहा है। फसल बीमा जिसका लाभ पूरे देश के किसानों को सहजता से मिल रहा है। इसका श्रेय भी तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी को जाता है। उनके कार्यकाल में ही फसल बीमा योजना का सरलीकरण किया गया। छत्तीसगढ़ में किसानों को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रधानमंत्री सिंचाई योजना लागू की गई है। सौर सुजला योजना के माध्यम से सरकार ने दूरस्थ वनांचल में, जहां बिजली की सुविधा नहीं है, वहां किसानों के खेतों में भी इस योजना के माध्यम से सौर सुजला सिंचाई पंप स्थापित कर सिंचाई की व्यवस्था की गई है। राज्य में सिंचाई रकबे में विस्तार के लिए नवीन सिंचाई योजना के लिए 300 करोड़ रूपए, लघु सिंचाई की चालू परियोजनाओं के लिए 692 करोड़ रूपए, नाबार्ड पोषित सिंचाई परियोजनाओं के लिए 433 करोड़ रूपए एवं एनीकट तथा स्टाप डेम निर्माण के लिए 262 करोड़ रूपए का बजट प्रावधान छत्तीसगढ़ सरकार ने किया है। छत्तीसगढ़ में किसानों एवं भूमिहीन मजदूरों की स्थिति में सुधार, कृषि एवं सहायक गतिविधियां के लिए समन्वित प्रयास पर राज्य सरकार का फोकस है।

संक्षिप्त खबरें

फांसी के फंदे पर लटका मिला युवती का शव, जांच में जुटी पुलिस

डिडौली। कोतवाली इलाके में एक युवती ने सुसाइड कर लिया। युवती ने घर के कमरे में पंखे से लटककर अपनी जान दे दी। ग्रामीणों को उसका शव रस्सी के सहारे लटका मिला। उधर, सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर आ गई। फिलहाल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम को भेजा है। सुसाइड का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। जबकि गांव में सुसाइड किए जाने की एक चर्चा है डिडौली कोतवाली क्षेत्र के गांव सिनौरा जलालाबाद गांव में मजदूर पप्पू सिंह का परिवार रहता है। परिवार में दो बेटे, दो बेटी तथा पत्नी ओमवती देवी हैं। शुक्रवार को दूसरे नंबर की 22 वर्षीय बेटी अन्नू ने घर में जा कर गले में फंदा लगाकर जीवन लीला समाप्त कर ली। दरवाजा बंद देख मां ओमवती देवी ने आवाज लगाई आवाज पर नहीं उठने पर दरवाजा तोड़कर अन्दर देखा तो बेटी छत में लगे पंखे पर लटकी हुई देख चीख निकल गई।घटना के बाद मोहल्ले के लोग एकत्र हो गये। शव को फंदे से उतार कर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। साथ ही पुलिस सुसाइड का कारण जानने के लिए मामले की गहनता से जांच कर रही है।

घर में घुसकर मारपीट और छेड़छाड़ में पिता-पुत्र समेत तीन पर केस

अमरोहा। घर में घुसकर मारपीट और छेड़छाड़ के मामले में पुलिस ने पिता-पुत्र समेत तीन लोगों पर रिपोर्ट दर्ज की। नौगावां सादात थाना क्षेत्र के एक गांव में दो पक्षों के बीच जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। एक पक्ष का आरोप है कि बीती आठ जनवरी को आरोपियों ने उनके खेत की मेड़ काट ली। विरोध पर आरोपी घर में घुस आए और लाठी-डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया। पत्नी के साथ भी मारपीट और छेड़छाड़ की। शोर मचाने पर आसपास लोगों की भीड़ जमा हो गई। आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। पीड़ित पक्ष ने शिकायत थाना पुलिस स्तर पर की, लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। अब पीड़ित पक्ष ने कोर्ट की शरण ली। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर आरोपी राम प्रकाश और उनके बेटे विनीत एवं हिमांशु के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की है। प्रभारी निरीक्षक सुधीर कुमार सिंह ने निष्पक्ष जांच व कार्रवाई की बात कही।

टीएमसी ने केंद्र के विज्ञापनों के खिलाफ निर्वाचन आयोग में शिकायत की

तृणमूल कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग में एक शिकायत दर्ज कराते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत केंद्र सरकार के उन विज्ञापनों पर आपत्ति जतायी है जिसमें उसने विभिन्न केंद्रीय योजनाओं के लिए पश्चिम बंगाल को निधि आवंटित करने का दावा किया है। पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) को बृहस्पतिवार को लिखे एक पत्र में टीएमसी ने कहा कि केंद्र सरकार ने सरकारी खजाने से कुछ अखबारों में दिए विज्ञापनों में कहा है कि राज्य को कितना धन दिया गया है और उसने पीएमएवाई, मनरेगा जैसी केंद्रीय योजनाओं से जुड़े कुछ बिन्दुओं का भी हवाला दिया है। विज्ञापन में कहा गया है कि केंद्र ने पिछले पांच वर्ष में पश्चिम बंगाल को 5.36 लाख रुपये जारी किए हैं और वह राज्य के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उसने राज्य सरकार द्वारा भ्रष्टाचार को खत्म करने तथा उचित लाभार्थियों तक लाभ पहुंचाने के लिए दिए दिशा निदेर्शों का पालन न करने का भी जिक्र किया है। पत्र में टीएमसी द्वारा शुरू किए एक अभियान का भी उल्लेख किया गया है जिसमें राज्य में भाजपा शासित सरकार न होने के कारण विभिन्न केंद्रीय योजनाओं के तहत केंद्र द्वारा निधि न जारी करने और पश्चिम बंगाल को उसके हक से वंचित करने की बात कही गयी है। टीएमसी ने कहा कि जनता के पैसों से दिए सरकारी विज्ञापनों की आड़ में ये दावे भाजपा के राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ाने और पश्चिम बंगाल सरकार के बारे में नकारात्मक धारणा बनाने के लिए किए गए हैं। पार्टी ने मांग की कि इसके खिलाफ उचित दिशा निर्देश पारित कर आवश्यक और तत्काल कदम उठाए जाएं।

गोवा में पत्रकार को धमकी देने के आरोप में दो के खिलाफ मामला दर्ज

पुलिस ने दक्षिण गोवा में रेत तस्करी को लेकर पड़ताल कर रहे एक पत्रकार को कथित तौर पर धमकी देने के आरोप में दो लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस उपाधीक्षक (कैनाकोना) टीकम सिंह वर्मा ने बताया कि बृहस्पतिवार की रात को हुई घटना के लिए कथित आरोपियों- वीरेंद्र नाइक और नरेश नाइक झ के खिलाफ भारतीय दंड विधान की धारा 341 (गलत तरीके से रोकना), 509 (गरिमा को ठेस पहुंचाना) और 506 (आपराधिक धमकी) के तहत मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि शिकायत के अनुसार, दोनों ने पत्रकार को धमकी दी, जो गोवा-कर्नाटक सीमा पर पोलेम चेकपोस्ट पर रेत तस्करी को लेकर पड़ताल कर रहे थे। अधिकारी ने कहा कि अगर आरोपी जांच अधिकारी के साथ सहयोग नहीं करेंगे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

बसपा ने मनाई कांशीराम की जयंती, आगामी आम चुनाव की तैयारी के लिए कार्यकर्ता जुटे

लखनऊ, एजेंसी

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए जिला स्तर पर अपने कार्यकर्ताओं को एकजुट करते हुए शुक्रवार को पार्टी के संस्थापक कांशीराम की 90 वीं जयंती मनाई। बसपा सुप्रीमो मायावती ने यहां कांशीराम को श्रद्धांजलि दी। हालांकि, चुनाव नजदीक आने के कारण पार्टी की परंपरा के अनुसार इस अवसर पर जश्न मनाने के कार्यक्रम आयोजित नहीं किए गए, लेकिन उनके अनुयायियों और पार्टीजनों ने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके मिशन को पूरा करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर कार्यकताओं ने मान्यवर कांशीराम का मिशन अधूरा, बसपा करेगी पूरा के नारे भी लगाये। पार्टी के एक नेता ने कहा, इस दिन को मनाने के लिए पूरे राज्य में कार्यक्रम आयोजित किए गए और पार्टी कार्यकताओं को संभावित पार्टी उम्मीदवारों/प्रभारियों से परिचित कराया गया ताकि वे एक-दूसरे को जान सकें। उन्होंने कहा कि आगामी चुनाव में पार्टी की जीत सुनिश्चित करने का संकल्प लेने के लिए पूरे राज्य में जिला स्तर पर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। उन्होंने कहा कि इस अवसर का उपयोग पार्टी कार्यकताओं को एकजुट करने और उत्साहित करने के लिए किया गया है। मायावती ने इस मौके पर अपील जारी कर कहा कि गुलाम मानसिकता वालों से अलग अपनी आपसी एकजुटता एवं बेहतर समझबूझ के जरिए मान्यवर श्री कांशीराम जी आपका मिशन अधूरा, बीएसपी करेगी पूरा के संकल्प को खासकर लोकसभा चुनाव में सफल बनाने हेतु पूरे जी-जान से प्रयास करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जातिवादी शक्तियों के अनेकों षड़यंत्र से बचते-बचाते बहुजन समाज को केन्द्र एवं राज्यों की सत्ता अपने हाथ मे लेने का चुनावी प्रयास हर हाल में जारी रखना है तभी यहाँ सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक मुक्ति आन्दोलन की सफलता संभव है। पार्टी ने एक बार फिर काशीराम को भारतरत्न की उपाधि से सम्मानित करने की माँग सरकार से की। बसपा ने पिछला लोकसभा चुनाव कट्टर प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में लड़ा था और उत्तर प्रदेश में भगवा लहर के बावजूद 10 सीट हासिल की थीं। मायावती की पार्टी ने इस बार राजग के साथ-साथ विपक्षी गठबंधन से दूरी बनाए रखने और उप्र में आगामी आम चुनाव में अकेले लड़ने का फैसला किया है। रिपोर्टों से पता चलता है कि कांग्रेस चाहती थी कि बसपा विपक्षी गठबंधन के साथ रहे लेकिन सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस संबंध में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। सपा ने उनकी जगह एक अन्य दलित नेता आजाद समाज पार्टी के चन्द्रशेखर को अपने साथ जोड़ लिया है। इससे पहले बसपा सुप्रीमो ने एक्स के जरिए कांशीराम को याद किया था और उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। मायावती ने एक्स पर लिखा, परमपूज्य बाबा साहेब डा. भीमराव आंबेडकर के परिनिर्वाण के बाद लंबे समय तक तिरस्कृत एवं बिखरे पड़े उनके आत्म-सम्मान एवं स्वाभिमान के कारवां को देश की राजनीति में नई मजबूती एवं बुलंदी देने का युगपरिवर्तनीय कार्य करने वाले मान्यवर कांशीराम जी को उनकी 90वीं जयंती पर अपार श्रद्धा-सुमन। उन्होंने कहा कि बामसेफ (अखिल भारतीय पिछड़ा एवं अल्पसंख्यक समुदाय कर्मचारी महासंघ), डीएस4 (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) और बहुजन समाज पार्टी की स्थापना कर एवं अपने अनवरत संघर्ष के जरिए उत्तर प्रदेश में सत्ता की ह्यमास्टरह्ल चाबी हासिल कर बहुजन समाज हेतु सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक तरक्की का जो मिशनरी लक्ष्य उन्होंने हासिल किया, वह ऐतिहासिक एवं अतुलनीय है और इसके कारण वह बहुजन नायक बने व अमर हो गए। एक बयान में, मायावती ने कहा कि आज पार्टी संस्थापक को पुष्पांजलि अर्पित की गई और भारत रत्न से सम्मानित करने की भी मांग की गई। उन्होंने कहा कि देश के खासकर बहुजन समाज के लोगों को जातिवादी एवं धन्नासेठ समर्थक विरोधी पार्टियों की साजिश एवं इनके हवाहवाई दावों और वादों से बच-बचाकर आगे चुनाव में सक्रियता एवं कार्रवाई करने की जरूरत है, क्योंकि अब और इनके भरोसे रहना आत्मघाती होगा।

नारी शिक्षा नारी सशक्तिकरण जन जागरूकता अभियान चलाया

प्रात: किरण संवाददाता, मनोज शर्मा

रहरा। राजकीय महाविद्यालय गंगेश्वरी रहरा मैं राष्ट्रीय सेवा योजना प्रथम इकाई द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय रहरा में आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर के चतुर्थ दिवस में नारी शिक्षा एवं नारी सशक्तिकरण हेतु जन जागरूकता अभियान चलाया गया आज का मुख्य विशेष बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ रहा स्वयं सेबको न प्रतिदिन की भांति सर्वप्रथम स्वच्छता का अभियान चलाया इसके बाद राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य गीत का समूह गान किया इसके बाद स्वयं सेवकों ने घर-घर जाकर महिलाओं के साथ जन संवाद किया तथा भ्रूण हत्या घरेलू हिंसा तथा बाल विवाह जैसे गंभीर मुद्दों पर चर्चा की कार्यक्रम अधिकारी डॉ पूनम शर्मा के नेतृत्व में रैली निकालकर नारे और बैनर पोस्टर के माध्यम से महिला सुरक्षा एवं महिला सहशक्तिकरण हेतु बनाए गए कानून का प्रसार प्रचार किया मुख्य वक्ता के रूप में प्रधानाचार्य डॉक्टर पुष्पेंद्र कुमार ने अपने विचार रखें। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ पूनम शर्मा डॉ वंदना भारद्वाज डॉ दिलीप कुमार विजेंद्र सिंह धर्मेंद्र सिंह तोताराम अजय कुमार आदि स्टाफ मौजूद रहा।

जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर ने अमरोहा को दी 47 करोड़ की सौगात

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर जी ने कमाल पैलेस, हसनपुर, में जिला पंचायत अमरोहा द्वारा हसनपुर विधान सभा क्षेत्र में विभिन्न गाँवों में किए गए विकास कार्यों का शिलान्यास/लोकार्पण किया। इन कार्यों की अनुमानित लागत 12 करोड़ 90 लाख रुपये है। यह सामाजिक उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है और स्थानीय जनता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान की दिशा में एक प्रेरणास्त्रोत बनेगा। इसके पश्चात विधानसभा नौगांवा क्षेत्र के अतरासी रोड पर स्थित अर बैंकट हाल में जिला पंचायत अमरोहा द्वारा कराए जा रहे अनुमानित 15 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण/शिलान्यास किया। इन विकास कार्यों से अमरोहा के विकास को रफ्तार मिलेगी। मूलभूत सुविधाओं की इन परियोजनाओं से समाज के सभी वर्गों को बुनियादी सुविधाओं का लाभ मिलेगा।तत्पश्चात माननीय जिला पंचायत ललित तंवर जी ने विधान सभा अमरोहा में जोया रोड पर स्थित शिवानी बैंकट होटल, अमरोहा में जिला पंचायत अमरोहा द्वारा लगभग 5 करोड़ की लागत से कराए गए विकास कार्यों का लोकार्पण किया। कल देर शाम माननीय जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर जी ने गजरौला धनौरा रोड पर स्थित रॉयल पैलेस, गजरौला में विधान सभा क्षेत्र धनौरा में लगभग 14 करोड़ की लागत से कराये गये विकास कार्यों का शिलान्यास किया इस अवसर पर प्रिय क्षेत्रवासियों और देवतुल्य कार्यकताओं द्वारा आत्मीय स्वागत से धन्य हुआ। सबका हृदय से धन्यवाद ! आभार ! इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष श्री उदय गिरि गोस्वामी, माननीय राज्य मंत्री व माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोला जी, अमरोहा से नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमति शशि जैन, ब्रजेश चौधरी, गिरीश त्यागी, युद्धवीर सिंह, जिला पंचायत के सभी सदस्य गण, ब्लॉक प्रमुख गण, नगर पालिका अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, व भारतीय जनता पार्टी के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता व मातृ शक्ति इत्यादि की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में क्षेत्र वासियों द्वारा प्राप्त आत्मीय एवं पारंपरिक स्वागत व अभिनंदन हेतु आप सभी का हृदयपूर्वक आभार एवं धन्यवाद।

अखिल भारतीय किसान सभा ने किया एक दिवसीय धरना प्रदर्शन, सौंपा ज्ञापन

प्रात: किरण संवाददाता

स्योहारा। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की किसान शाखा अखिल भारतीय किसान सभा ने किसानों के हित मे नाला निर्माण के लिए नगर पालिका परिषद के में एक दिवसीय धरना, प्रदर्शन करते हुए चेयरमैन फैसल वारसी को ज्ञापन सौंपा।ज्ञापन में उल्लेख करते हुए कहा गया कि भारतीय किसान भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की माना जाता है। परंतु आज सबसे ज्यादा किसान ही परेशान नजर आता है। कोरोना कल में जब सारी दुनिया में हाहाकार मचा था उसे समय किसानों ने ही देश की अर्थव्यवस्था को बचाया था और ऐसे कठिन समय में देश का सहयोग किया था।आपको पहले भी एक प्रार्थना पत्र के माध्यम से अवगत कराया जा चुका है। वार्ड नंबर 7 में नगर पालिका का एक नाला है उसका पानी लगातार किसानों के खेतों में भरता रहता है और खेत तालाब में तब्दील हो चुके हैं और उनके सामने रोजी-रोटी की समस्या खड़ी होने लगी है। उपरोक्त समस्या का जल्द से जल्द समाधान कराकर निस्तारण कराये। ज्ञापन देने वालों मुख्य रूप से कामरेड इसरार अली एडवोकेट, चौधरी मशकूर अली एडवोकेट, चौधरी जरीफ अहमद, शफीक अहमद, रिफाकत हुसैन, हरपाल सिंह, अतीक अहमद, नईम अहमद, भूरे सिंह, नजाकत हुसैन ,मतलब जलील, आरिफ मास्टर, इकराम हुसैन ,जाबिर मलिक, कन्हैया सिंह मुन्नेखा आदि रहे।

अविनाश अहलावत बनेंगे सी.आई. एस.एफ में असिस्टेंट कमांडेंट

प्रात: किरण संवाददाता

स्योहारा।बहुत जमाने से सुनते चला रहे आ रहे हैं कि प्रतिभा अपना लोहा मनवा ही लेती है। और किसी भी दशा और कहीं भी छुपती नहीं है और अपने मां-बाप अपने गांव, शहर का नाम रोशन करती है ऐसा ही कर दिखाया है ग्रामीण परिवेश के ग्राम नियामताबाद निवासी अवनीश अहलावत पुत्र देवेन्द्र सिंह अहलावत नें। उन्होंने यू.पी.एस.सी. द्वारा अयोजित सी.आई.एस.एफ. असिस्टेंट कमांडेंट की परीक्षा में द्वितीय रैंक हासिल कर अपने मां बाप पर गांव का नाम रोशन कर दिया है अवनीश अहलावत की प्रारंभिक शिक्षा आरएसपी इंटर कॉलेज स्योहारा से हुई उसके बाद उन्होंने बीआईटी मुजफ्फरनगर से अपनी इंजीनियरिंग पूरी की। शिक्षा पुर्ण होने पर अवनीश अहलावत 2015 में सीआईएसएफ में उपनिरक्षक के पद पर नियुक्त हुए और अध्ययन जारी रखा। वर्तमान में अवनीश की तैनाती केरल के तिरुवनंतपुरम में है । उन्होने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता पिता एवं गुरूजनों को दिया है कसीआईएसएफ असिस्टेंट कमांडेंट अवनीश अहलावत को क्षेत्र के वरिष्ठ समाजसेवी एवं प्रसिद्ध डॉक्टर डॉ. मनोज कुमार वर्मा आदि सहित उनके शुभचिंतक को मित्रों रिश्तेदारों ने ने शुभकामनाएं दी। अविनाश अहलावत के परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गांव और परिवार में खुशी का बना हुआ है।आपको बताते चले कि अविनाश अहलावत किसान नेता देवेंद्र सिंह अहलावत के सुपुत्र हैं देवेंद्र सिंह अहलावत भी किसानो की समस्याओं का निस्तारण कराने के लिए दिन-रात समाज सेवा में लगे रहते हैं।

पेपर लीक मामले में तीन मुख्य साजिशकर्ता गिरफ्तारं

लखनऊ, एजेंसी

उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) ने शुक्रवार को कहा कि 17 और 18 फरवरी को प्रदेश भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक करने के तीन मुख्य साजिशकताओं को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने पेपर लीक मामले में अब तक कुल 54 लोगों को गिरफ्तार किया है। बड़े पैमाने पर परीक्षा का पेपर लीक होने की रिपोर्ट के बाद राज्य सरकार को परीक्षा रद्द करनी पड़ी थी। यहां पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार ने पत्रकार वार्ता में कहा, ह्य उत्तर प्रदेश पुलिस और एसटीएफ (स्पेशल टास्क फोर्स) की कई टीम की गहन जांच के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि परीक्षा का पेपर इन तीन व्यक्तियों द्वारा लीक किया गया था। कुमार ने कहा, ह्यजब परीक्षा का पेपर प्रिंटिंग प्रेस से स्ट्रांग रूम में ले जाया जा रहा था, तभी आरोपियों ने पेपर लीक कर दिया। उनके अनुसार गिरफ्तार आरोपियों की पहचान प्रयागराज के मूल निवासी अभिषेक कुमार शुक्ला, मिर्जापुर निवासी शिवम गिरी और भदोही जिले के निवासी रोहित कुमार पांडे के रूप में हुई। कुमार ने कहा कि तीनों को बृहस्पतिवार को गाजियाबाद में एसटीएफ की एक टीम ने गिरफ्तार किया। आरोपी भर्ती परीक्षाओं के प्रश्न पत्र लीक करने वाले एक अंतरराज्यीय गिरोह का हिस्सा हैं। डीजीपी ने कहा, ह्यआरोपियों ने पहले मुद्रित प्रश्न पत्रों की ढुलाई में शामिल परिवहन कंपनी के साथ काम किया था। आरोपी फरवरी के पहले सप्ताह में अहमदाबाद के एक गोदाम से पेपर लीक करने में कामयाब रहे, जहां प्रश्न पत्र रखे गए थे। डीजीपी ने कहा कि पेपर लीक में शामिल कुछ अन्य अभियुक्तों के बारे में जल्द ही खुलासा किया जाएगा। उत्तर प्रदेश पुलिस और एसटीएफ ने विभिन्न जिलों में परीक्षा पेपर लीक के मामले में 12 प्राथमिकियां दर्ज की हैं।

होली के अवसर पर उप्र राज्य सड़क परिवहन निगम, विशेष बसें चलाएगा

लखनऊ, एजेंसी

होली के अवसर पर उत्तर प्रदेश के निवासियों को घर आने जाने के लिए हर मार्ग पर पर्याप्त संख्या में बसें उपलब्ध रहेंगी। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम 22 मार्च से एक अप्रैल तक होली स्पेशल बसों का संचालन करने जा रहा है। अधिकारियों ने इसकी जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि होली विशेष बसें एक अप्रैल तक चलेंगी, जिससे यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी। उन्होंने बताया कि इस बार होली 24 और 25 मार्च को होनी है। इसके बाद गुड फ्राइडे, शनिवार और रविवार की छुट्टी है और ऐसे में पूरे सप्ताह भर के लिए ही लोग अपने घरों को आने-जाने के लिए बसों को प्राथमिकता देंगे। उन्होंने बताया कि इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने होली विशेष बसें चलाने का निर्णय किया है। उन्होंने बताया कि इस दौरान परिवहन निगम चालक और परिचालकों को प्रोत्साहन भत्ता भी प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि 10 दिन तक अधिकारियों और कर्मचारी की छुट्टियां भी रद्द कर दी गई हैं। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने एक बयान में बताया कि प्रोत्साहन अवधि के दिनों में दिल्ली से पूर्वी दिशा के यात्रियों को ले जाने के लिए अधिक से अधिक संख्या में बसें चलाई जाएंगी जो होली पर्व की शाम तक यात्रियों को उनकी मंजिल तक पहुंचाती रहेंगी। उन्होंने बताया कि ऐसी ही व्यवस्था लखनऊ और कानपुर नगरों में यातायात प्रबंधन के लिए की जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रोत्साहन योजना अवधि में शत प्रतिशत परिवहन निगम की बसों को सडक पर उतारा जाये और लगातार इनका संचालन हो। परिवहन निगम के प्रधान प्रबंधक (संचालन) मनोज कुमार की तरफ से दिए गए निदेर्शों में जिक्र है कि क्षेत्रीय प्रबंधक गाजियाबाद, लखनऊ और कानपुर यातायात व्यवस्था पर नजर रखेंगे।

मुंबईः तटरक्षक बल के दो कर्मचारी अपने सहकर्मी की बेटी से बलात्कार करने के आरोप में गिरफ्तार

मुंबई, एजेंसी

भारतीय तटरक्षक बल के दो कर्मचारियों को मुंबई में अपने सहकर्मी की 15 वर्षीय बेटी के साथ कथित तौर पर बलात्कार करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि यह घटना पिछले साल 17 अक्टूबर को महानगर के एक उत्तरी उपनगर में इन दोनों आरोपियों में से एक के घर पर हुई। अधिकारी ने बताय कि पीड़िता दसवीं कक्षा की छात्रा है जबकि आरोपियों की उम्र 30 और 23 साल है। कथित यौन उत्पीड़न वाले दिन पीड़िता अपनी कोचिंग क्लास से लौटी थी और उस दौरान वह अपने घर पर अकेली थी क्योंकि उसकी मां, छोटी बहन और भाई एक समारोह में गए हुए थे, जबकि उसके पिता रात की ड्यूटी पर थे। उसी आवास परिसर में रहने वाला 30 वर्षीय आरोपी कथित तौर पर उसके घर आया और पीड़िता से कहा कि उसकी पत्नी ने उसे कुछ काम के लिए अपने घर बुलाया है। आरोपी के बुलाने पर छात्रा को भी थोड़ा भी संदेह नहीं हुआ क्योंकि दोनों परिवार एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते थे और उनके बीच अच्छे संबंध थे। अधिकारी ने बताया कि जब पीड़िता आरोपी के फ्लैट में पहुंची तो पहले से ही वहां मौजूद दूसरा व्यक्ति पीड़िता का मुंह बंद करके उसे कक्ष में ले गया। अधिकारी ने बताया कि इसके बाद दोनों ने कथित तौर पर लड़की के साथ बलात्कार किया। उन्होंने बताया कि बाद में दोनों आरोपियों ने नाबालिग को घटना के बारे में किसी को बताने पर उसे और उसके पिता को जान से मारने की धमकी दी। अधिकारी ने बताया कि जब भी वह अकेली होती थी तो 30 वर्षीय आरोपी उसके घर आता था। पीड़िता इस आघात के चलते अवसाद में चली गई और उसे उपचार की जरूरत पड़ी। कथित बलात्कार की घटना के दो महीने से अधिक समय बाद पीड़िता ने हिम्मत जुटाई और अपनी मां को अपनी आपबीती सुनाई। पीड़िता की मां ने अपने पति को इस बारे में बताया जिसके बाद उसने भारतीय तटरक्षक में एक आंतरिक शिकायत दर्ज कराई। पीड़िता ने आठ मार्च को तटरक्षक के वरिष्ठ अधिकारियों को इस बारे में जानकारी दी, जिन्होंने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराने में उसकी मदद की और दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। अधिकारी ने बताया कि दोनों व्यक्तियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 376 डीए और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पोक्सो) अधिनियम के तहत एक मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि दोनों अरोपी फिलहाल पुलिस हिरासत में हैं।

मेरा तात्पर्य था कि ममता बनर्जी को धक्का लगने का एहसास हुआ होगा: चिकित्सक

कोलकाता, एजेंसी

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को कालीघाट स्थित उनके आवास में पीछे से कोई धक्का लगने के कारण उनके माथे और नाक पर चोट आने संबंधी बयान देने के एक दिन बाद, एसएसकेएम अस्पताल के निदेशक मणिमोय बंद्योपाध्याय ने शुक्रवार को स्पष्ट किया कि उनका तात्पर्य था कि मुख्यमंत्री को धक्का लगने का एहसास हुआ होगा। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) प्रमुख ममता बनर्जी (69) बृहस्पतिवार शाम को कालीघाट स्थित अपने आवास में गिर गई थीं जिसके कारण उनके माथे और नाक पर गंभीर चोट लग गई। इसके बाद उन्हें सरकारी एसएसकेएम (सेठ सुखलाल करनानी मेमोरियल) अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें कुछ टांके लगाए गए और उनकी चिकित्सकीय जांच की गई। बाद में चिकित्सकों ने उन्हें छुट्टी दे दी। बंद्योपाध्याय ने कहा, वह पीछे से धक्का लगने के अहसास के कारण (मुख्यमंत्री बनर्जी) गिरीं। हमारा काम इलाज करना है और हमने वह किया है। मैंने कल शाम जो कहा, उसका गलत मतलब निकाला गया। एसएसकेएम के निदेशक ने बृहस्पतिवार शाम को कहा था कि ममता बनर्जी ह्यह्लपीछे से कोई धक्का लगने के कारण अपने आवास में गिर गई थीं। बंद्योपाध्याय के पीछे से धक्का लगने की बात ने तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो के गिरने के कारण को लेकर बड़े पैमाने पर भ्रम और अटकलों को जन्म दे दिया। ममता बनर्जी के माथे पर तीन टांके और नाक पर एक टांका लगाया गया। अस्पताल में उनके मस्तिष्क की रेडियो इमेजिंग और ईसीजी सहित आवश्यक चिकित्सकीय जांच किए जाने के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई। एसएसकेएम अस्पताल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि ममता बनर्जी को आराम करने की सलाह दी गई है और आज सुबह उनकी स्थिति चिकित्सकीय रूप से स्थिर बताई गई जिसके बाद चिकित्सकों ने कहा कि वे दिन में उनकी कुछ नियमित जांच करेंगे। अधिकारी ने कहा, ह्यह्लउनका स्वास्थ्य स्थिर है। उन्हें रात में अच्छी नींद आई और वरिष्ठ चिकित्सकों ने इस दौरान उनकी स्थिति पर नजर रखी। उनके स्वास्थ्य की दोबारा जांच की जाएगी। मुख्यमंत्री के गिरने के कारण को लेकर लगाई जा रही अटकलों के बारे में सवाल किए जाने पर एक पुलिस अधिकारी ने कहा, मुख्यमंत्री के गिरने के संबंध में अभी तक कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है, लेकिन हमने बनर्जी के आवास और उसके आसपास सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी है। बनर्जी को जेड प्लस श्रेणी की सुरक्षा मिली हुई है और अधिकारियों का एक विशेष दल उनकी सुरक्षा और यहां तक कि उनके आवास की निगरानी करता है। टीएमसी ने बृहस्पतिवार शाम को कुछ तस्वीरें साझा की थीं, जिनमें बनर्जी के माथे से खून बहता दिख रहा है। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और ममता के भतीजे अभिषेक बनर्जी ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया।

ईडी ने झारखंड की एक कांग्रेस विधायक को पीएमएलए मामले में अगले महीने पूछताछ के लिए बुलाया

रांची, एजेंसी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने धनशोधन मामले में झारखंड की कांग्रेस विधायक अंबा प्रसाद और उनके भाई को अगले महीने पूछताछ के लिए तलब किया है। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि 36 वर्षीय प्रसाद को चार अप्रैल को पेश होने के लिए कहा गया है जबकि उनके भाई अंकित साव को उसके अगले दिन पांच अप्रैल को बुलाया गया है। प्रसाद झारखंड विधानसभा में बड़कागांव निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। सूत्रों ने बताया कि ईडी धनशोधन रोकथाम अधिनियम के प्रावधानों के तहत उनका बयान दर्ज कराना चाहती है। प्रवर्तन निदेशालय ने कथित रंगदारी, लेवी वसूली, अवैध बालू खनन और जमीन हड़पने के सिलसिले में अपनी जांच के तहत इस सप्ताह के प्रारंभ में प्रसाद, उनके पिता और पूर्व मंत्री योगेंद्र साव एवं अन्य के परिसरों पर छापा मारा था। इस जांच एजेंसी ने बृहस्पतिवार को कहा था कि इन छापों के दौरान उसने ह्यबिना लेखा-जोखाह्ल के 35 लाख रुपये नकद और दस्तावेज जब्त किये थे। यह मामला साव, उनके परिवार के सदस्यों एवं उनके सहयोगियों के खिलाफ भादंस एवं हथियार कानून के तहत झारखंड पुलिस द्वारा दर्ज की गयी 15 प्राथमिकियों पर आधारित है।

संक्षिप्त खबरें

मैराथन दौड़ की विजेता गुड़िया को सम्मानित करने का लगा तांता

नोखा (रोहतास)। स्थानीय थाना परिसर में बिहार व उत्तर प्रदेश में मैराथन में प्रथम स्थान पर रहने वाली गुड़िया कुमारी को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर थानाध्यक्ष दिनेश कुमार मालाकार दरोगा अंशु माला और अभिलाषा कुमारी मौजूद रही। वहीं नोखा बाजार समिति के मैदान में भी मैराथन जीतने वाली गुड़िया कुमारी को बजाए समिति के मैदान में पूर्व व्यापार मंडल अध्यक्ष अरविंद कुमार, अनूप कुमार, श्याम लाल सिंह ने पुरस्कृत किया।

बीडीओ ने मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

नोखा (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के मोंडिहा और कदवा पंचायत में मतदान केंद्रों का बीड़ीओ ने निरीक्षण किया। जहां लोकसभा चुनाव से जुड़ी विशेष दिशा निर्देश दिया। बीड़ीओ अतुल गुप्ता ने बताया कि आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर के नोखा प्रखंड के कदवा और मोंडिहा पंचायत के मतदान केंद्र निरीक्षण किया गया। मौके पर सेक्टर मजिस्ट्रेट सहित कई लोग मौजूद रहे।

कार व बाइक में जोरदार टक्कर, जख्मी

काराकाट(रोहतास)। शुक्रवार को एनएच 120 डेहरी-बिक्रमगंज मुख्य मार्ग पर नगर पंचायत काराकाट गोड़ारी त्रिदंडी पथ के समीप कार और मोटरसाइकिल में जबरदस्त टक्कर होने की सूचना है। सूत्रों के अनुसार जिसमें बाइक पर सवार दो लोग बुरी तरह से जख्मी बताए जा रहे है। दोनों को प्राथमिक इलाज के लिए काराकाट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोड़ारी में भेजा गया। उक्त अस्पताल के चिकित्सकों ने प्राथमिक इलाज कर बेहतर इलाज के लिए सरफराज खान 22 वर्ष पिता सरताज खान को हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। डॉ०. संजीत कुमार ने बताया कि सरफराज खान को काफी गंभीर चोटें आई है। चिकित्सक के अनुसार उसके बाएं साइड में ज्यादा चोट है। जिसका प्राथमिक इलाज कर हायर सेंटर रेफर किया गया है। वहीं दूसरा जख्मी छोटू कुमार 15 वर्ष पिता विंध्याचल प्रसाद को गोड़ारी में ही प्राथमिक इलाज किया जा रहा है। दोनों घायल इटिम्हा कर्मा का रहने वाला बताया जाता है।

विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के द्वारा बंदर का अंतिम संस्कार किया गया

आरा। हनुमान जी के रूप में बंदर सपना सिनेमा पर मृत्यु हो गिरा मिला जिसका सूचना महापौर प्रतिनिधि प्रेम पंकज ललन द्वारा विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल आरा को मिला अविलंब कार्यकर्ता सपना सिनेमा पहुंच कर बंदर का लेकर फूल माला राम वस्त्र और राम नाम सत्य हैं के साथ पूरे विधिवत अंतिम संस्कार किया गया जिसमे उपस्थित विश्व हिंदू परिषद नगर मंत्री श्याम किशोर पाठक बजरंग दल नगर संयोजक जतिन गोस्वामी ऋतिक वार्ड 08 संयोजक जतिन जी वार्ड08 सह संयोजक अन्य कार्यकताओं द्वारा ये पुनीत कार्य किया गया सबने पार्थन कर उनका श्रद्धांजलि अर्पित किया हमारे धर्म में बंदर का बहुत बड़ा स्थान हैं ये बजरंग बली के रूप हैं और इनका सेवा करना हमारा कर्तव्य हैं

पुलिस ने प्राथमिकी अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा

चांद। पुलिस ने काण्ड संख्या 46/24 दिनांक14/3/24 धारा341/323/307/34 भा द वि के प्राथमिकी अभियुक्त विनोद कुमार यादव पिता स्व बलिराम यादव सूरज यादव पिता विनोद यादव दोनों गांव विरभानपुर थाना चांद रिशम यादव पिता राजेंद्र प्रसाद यादव सत्येंद्र सिंह पिता अवध नारायण सिंह दोनों ग्राम मुगलसराय उत्तर प्रदेश गिरफ्तार कर पुलिस ने न्यायालय में हाजिर किया। इस संबंध में थाना प्रभारी मो इरफान रजा ने कहा चारो अपराधी फरार चल रहे थे। उन्होंने ने कहा चारो को पुलिस ने उनके निवास स्थान से गिरफ्तार किया।

मुसहरवा बाबा के बीच ट्रैक्टर पलटने से चालक की मौत

कैमूर। भभुआ अधौरा पथ पर धरती माता और मुसहरवा बाबा के बीच ट्रैक्टर पलटने से चालक की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक चैनपुर थाना क्षेत्र के जगरिया गांव निवासी रूपन पासवान के 32 वर्षीय पुत्र उमेश पासवान बताया जाता है। पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे परिजनों ने बताया कि अधौरा से एफसीआई का खाद्यान्न ताला गांव पीडीएस दुकान से उतार कर वापस लौट रहा था। तभी धरती माता और मुसहरवा बाबा के बीच सड़क दुर्घटना में उसकी मौत हुई है। लेकिन परिजनों का कहना है कि किसी अज्ञात वाहन की जोरदार टक्कर से ट्रैक्टर पलटा जिसमें चालक की दबकर मौत हो गई है। आगे बताया कि लगभग शुक्रवार की रात्रि 12:00 की घटना बताई जाती है। किसी तरह वहां से परिजनों को सूचना मिला तो परिजन घटनास्थल पहुंचे। वही ट्रैक्टर में दबे चालक को बाहर निकाला गया और उसके बाद परिजन शव को गांव ले गया।

चुनाव को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी ने बूथ केंद्रों का किया निरीक्षण

विभागीय पदाधिकारियों को दिया सख्त दिशा-निर्देश, सीएपीएफ आवासन के लिए चयनित हुई जगह

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर जहां एक तरफ जहां राजनैतिक दल पार्टियों की सरगर्मी तेज हुई है। वही दूसरी ओर स्थानीय प्रशासन भी प्रस्तावित इन चुनावों के लिए खुद को तैयार करता नजर आ रहा है। इसी परिपेक्ष्य में शुक्रवार को बिक्रमगंज अनुमंडलीय पदाधिकारी एसडीएम अनिल बसाक के द्वारा लोकसभा चुनाव 2024 के लिए निर्धारित बूथ केन्द्रों पर तैयारियां को लेकर सघन निरीक्षण किया गया।

इस संबंध एसडीएम ने बताया कि भूमि सुधार उप-समाहर्ता के साथ संयुक्त रूप से आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर सीएपीएफ के आवासन स्थल अंतर्गत पटेल कॉलेज, बिक्रमगंज, इंदु तपेश्वर कॉलेज, बिक्रमगंज, समता कॉलेज, दिनारा सहित उत्क्रमित मध्य विद्यालय बेलवैया, दिनारा का चयन किया गया है। जिसको लेकर 50 स्नान घर, शौचालय 10 सहित दो वाशरूम को चुनाव संपन्न होने तक अस्थाई तौर पर निर्मित कराएं जायेंगे। वही होने वाली लोकसभा चुनाव में सीएपीएफ तहत तीन से चार फोर्स कंपनी की टुकड़ी तैनात होगी। जिसमें 80 से 100 पुलिस जवान एक टीम में शामिल रहेंगे। साथ ही दिनारा थाना क्षेत्र के नटवार बाजार समिति स्थित ईवीएम मशीन की निगरानी को लेकर डिस्पैच सेंटर यानी प्रेषक केंद्र बनाएं जायेंगे। साथ ही निर्धारित गोदाम भी उपलब्ध होंगे।

जबकि निरीक्षण उपरांत विभिन्न विभागीय पदाधिकारी को आवश्यक निर्देश देते हुए बूथ केंद्रों पर चुनाव के समय विद्युत व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था के साथ ही बुजुर्गो के लिए मतदान केंद्रों पर मतपेटी तक पहुंचने के लिए रैम्प बनाने के लिए भी निर्देश दिया। साथ ही निर्वाचन से जुड़ी कार्यों में लापरवाही किए जाने पर संबंधित पदाधिकारी व कर्मचारी के विरुद्ध कार्यवाही करने के भी संकेत एसडीएम बसाक के द्वारा दी गई है।

मंत्री बनने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने एमएलसी संतोष सिंह को दी बधाई

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) शुक्रवार को रोहतास, कैमूर क्षेत्र से एमएलसी संतोष कुमार सिंह के बिहार सरकार मंत्री मंडल में शामिल होने की घोषणा सुनते ही लोगों ने दी बधाई। जहां देर शाम भाजपा कार्यकताओं ने काराकाट विधानसभा क्षेत्र में उनके मंत्री बनने पर एक दूसरे को बधाइयां देते हुए मिठाइयां खिलाया। वही खबर को सुनकर एनडीए कार्यकताओं में भी खुशी व्याप्त है। इस अवसर पर एमएलसी संतोष कुमार सिंह बधाई देते हुए भाजपा शिक्षक प्रकोष्ठ प्रदेश महामंत्री डॉ. मनीष रंजन ने उन्हें बधाई देते हुए कहा कि संतोष कुमार बिहार प्रदेश के एक मुख्य राजनीतिक विशेषज्ञ के रूप में प्रख्यात है। जिन्होंने अपने जीवन काल की राजनीति में भाजपा एमएलसी और सामाजिक कार्यकर्ता स्वरूप गरीबों का मसीहा दिन-रात उनके मदद में लगे रहते हैं। साथ ही क्षेत्रो में विकास हित में आम जन की समस्याओं का निष्पादन करना ही उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य है। इस मौके पर बिक्रमगंज व्यापार मंडल अध्यक्ष सिद्धनाथ उर्फ जवाहर सिंह, भाजपा कार्यकर्ता - अजीत सिंह, ललित मोहन, सुनील कुमार सिंह, नागेश्वर कुशवाहा, सतेंद्र पाठक, विनोद पासवान, सुनील सिंह, संजीव पटेल, ललन चौरसिया, मदन प्रसाद वैश्य, लाल बिहारी सिंह, वीरेंद्र चौधरी, विनोद पांडे, मनोज तिवारी सहित सैकड़ों लोगों ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड नंबर 24 में नाले का हुआ शिलान्यास

नोखा (रोहतास) नगर परिषद नोखा द्वारा वार्ड नंबर 24 में नाला एवं स्लैप का निर्माण को लेकर के शिलान्यास किया गया। अवसर पर नारियल फोड़ पूजन की गई। नगर परिषद के सभापति राधेश्याम सिह उपसभापति धनजी सिंह ने बताया कि विकास कार्यों में एक और कड़ी जोड़ दी। नगर परिषद सभापति ने बताया कि वार्ड नंबर 24 बायपास रोड में नाला निर्माण जरूरी था। ताकि बरसात का पानी और घर उसे निकालने वाले गंदा पानी को निकाला जा सके। जिसको लेकर के नाले का निर्माण किया जा रहा है और संवेदक से कहा कि जल्द से जल्द बनाकर पूरा करे। मौके पर उपसभापति धनजी सिह ने कहा कि नाला निर्माण की गुणवत्ता में कमी नहीं बरतनी होगी और लोगों की सुविधा को देखते हुए यह नल का निर्माण किया जा रहा है। इस मौके पर धनजी सिंह विनोद कुमार सहित कई लोग उपस्थित रहे।

आहार युक्त मोटे अनाज की गुणवत्ता पर दी गई प्रशिक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) नोखा प्रखंड मुख्यालय स्थित ई किसान भवन में मोटे अनाज को लेकर के एकदिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। जहां पर उपस्थित महिला कृषकों को प्रशिक्षण देते हुए कृषि विभाग के तकनीकी प्रबंधक श्रीकांत कुमार, कृषि बिशेषज्ञ राजू कुमार और अशोक कुमार द्वारा बताया गया की मोटे अनाज से क्या-क्या फायदे हैं इसकी वैरायटी कौन-कौन सी है। मोटे अनाज की प्रमुख प्रकार के बीज क्वालिटी के मिलेट जवार, बाजरा, रागी, जवार बीज को छोड़कर दूसरे प्रकार के मिलेट बाजरा बीज को छोड़कर कैनरी बीज के अलावा कदन्न फसल एक पोषण तत्वों से भरपूर अनाज है।

जिसके कारण इसको न्यूट्रो अनाज भी कहते हैं। भारत में मोटे अनाज आधारित चीजों की खाने की माग बढ़ रही है। आमतौर से मिलेट को गरीबों का भोजन के रूप में पहचाना जाता है। जो आर्थिक रूप से संपन्न लोग इसको खाने से हिचकते रहे हैं। जो लगातार बढ़ रही शारीरिक बीमारियों से उपजी चिंता के बाद दुनियाभर में भोजन पर एक बार फिर से गंभीरता से मंथन शुरू हुआ है। अतः यह आज उपलब्ध अनाजों में सबसे स्वास्थ्यप्रद अनाज है।

हर एक कदन्न फसलों का अपना-अपना महत्व हैं, जैसे- रागी और बाजरा कैल्शियम और लौह तत्वों से भरपूर होता है। ज्वार में पोटैशियम और फास्फोरस होता है, जबकि कोदो लौह तत्वों से भरपूर होता है। साथ ही सारे कदन्न फसलों में आहारीय रेशा बहुतायक मात्रा में होती है। इसलिए हमें सभी तरह के कदन्न फसलों को खाते रहना चाहिए। इसमे प्रोटीन, विटामिनबी-कम्पलेक्स, कैल्शियम, आयरन, मैंगनीज, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस जिंक, पौटेशियम, ताँबा और सेलेनियम सहित बहुत से पोषक तत्व होते हैं। इनमें एंटी-ऑक्सीडेंट फ्लेवोनॉइड्स, पिगमेंट, एंथोसायनिन, सैपोनिन और लिगनिन्स भी पाये जाते है। जो स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है। मौके पर कृषक सहित महिला उपस्थित थीं।

बस की टक्कर से स्कूटी सवार दो युवकों की दर्दनाक मौत

प्रात : किरण संवाददाता

दुर्गावती। मोहनिया थाना क्षेत्र के डिलखिली समेकित चेकपोस्ट पर बस और स्कूटी के बीच भीषण टक्कर हो गयी जिस हादसे में स्कूटी सवार दोनो युवकों की दर्दनाक मौत हो गयी। सूचना मिलते ही मौके पर एन एच ए आई विभाग व मोहनिया पुलिस पहुंच गई। वही कागजी प्रक्रिया पूरी कर पुलिस के द्वारा शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भभुआ भेज दिया गया। मृतकों की पहचान दुर्गावती थाना क्षेत्र के दहियाव गांव निवासी अमरेंद्र कुमार पिता स्वर्गीय चंद्रभान राम व रोहित कुमार पिता राजकुमारी राम उर्फ राजगृही राम के रूप में की गयी। जानकारी के अनुसार दोनो युवक अपने घर से मोहनिया बाजार के लिए अपनी स्कूटी पर सवार होकर निकले थे। बाजार से दोनो युवक खरीददारी करने के बाद अपने घर आ रहे थे इसी दौरान समेकित चेकपोस्ट के पास वाराणसी की तरफ से रॉन्ग साइड आ रही एक यात्री बस ने मोहनिया की तरफ से आ रहे स्कूटी सवारो को टकर मार दी जिससे कारण दोनो युवकों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना पर पहुंची मोहनिया थाने की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आगे की कार्यवाही में जुटी गई। वही बस चालक मौके से फरार हो गया। घटना की सूचना जैसे ही परिजनों को मिली तो परिजनों में चीख पुकार मच गया एवं मातम छा गया। परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया।

आरा रेलवे स्टेशन पर पीडब्ल्यूआई के खिलाफ रेल कर्मियों ने किया जोरदार प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। ईस्ट सेंट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन बक्सर शाखा के द्वारा आज आरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या एक पर यूनियन से जुड़े कर्मचारियों ने जोरदार प्रदर्शन किया आरा रेलवे स्टेशन पर कार्यरत पीडब्ल्यूआई प्रमोद कुमार के तानाशाही रवैया से नाराज कर्मचारियों ने रेलवे स्टेशन पर जोरदार प्रदर्शन किया इस दौरान उन लोगों ने प्रमोद कुमार पर रेलवे कर्मचारियों को मानसिक रूप से परेशान करने एवं प्रताड़ित करने का गंभीर आरोप लगाया साथी साथ उन लोगों ने पीडब्ल्यूआई के तबादले के बाद भी यहां डेढ़ वर्षों से जमे रहने के खिलाफ संघर्ष का ऐलान करते हुए कहा की जिस तरह से प्रमोद कुमार लगातार रेल कर्मियों को टारगेट कर निशाना बना रहे हैं और अपने चहेते कर्मियों का एक अलग गैंग बनाकर अलग तरीके से समानांतर सरकार चला रहे हैं वह बर्दाश्त के काबिल नहीं है और अगर आने वाले दिनों में रेल प्रबंधक इनके ऊपर कोई कार्रवाई नहीं करती है तो रेलकर्मी कुछ भी करने को तैयार हैं ईस्ट सेंट्रल कर्मचारी रेल यूनियन के बक्सर शाखा मंत्री नीरज कुमार सिंह ने बताया कि पीडब्ल्यूआई के मनमानी से रेल कर्मी काफी तनाव में काम करने को मजबूर हैं वही इन लोगों की 6 सूत्री मांग शामिल है जिसमें मुख्य रूप से ट्रैकमैन को 16 किलोमीटर पर टीए का भुगतान किया जा रहा है जबकि 8 किलोमीटर पर इनका भुगतान करने का नियम है वही बिना किसी कारण और दोष के यूनिट नंबर ल1 के ट्रैकमैन का तबादला आरा से अन्यत्र स्टेशन कर दिया गया आरा के पीडब्ल्यूआई प्रमोद कुमार का तबादला 3.10.2022 को ही आरा से कर दिया गया है लेकिन अभी तक इनको विरमित नहीं किया गया है वहीं जूनियर ट्रैकमैन के रहते कीमैनसे काम जबरदस्ती कराया जा रहा है यह गलत है यूनिट नंबर 1 से 8 तक वैकेंसी को रखकर एक अलग से यूनिट बनाया गया है जो कि नियम के विरुद्ध है।

वही ट्रैकमैन साथियों के बीच खौफ को पैदा करके उनसे काम लेना और बेवजह उनका हाजिरी काटना इनकी नियति बन गई है इसको लेकर उन लोगों ने आज यह प्रदर्शन किया है और आने वाले दिनों में अगर इस पर कोई कार्रवाई नहीं होती है तो कर्मचारी यूनियन कोई भी निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होगाइस मौके पर उपस्थित लोगों में रेल कर्मचारी यूनियन के नेता मनोज कुमार पांडेय नीरज कुमार सिंह अशोक कुमार आरके सिंह अजय कुमार राजेश कुमार सिंह एसबी राय त्रिपाठी जी समशान अख्तर मंजि यादव एसके दुबे मनोज मिश्रा समय दर्जनों की संख्या में कर्मचारी शामिल थे।

केन्द्रीय मंत्री शनिवार को विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शनिवार को आरा सांसद सह केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री आर के सिंह अपने लोकसभा क्षेत्र के विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे।

केन्द्रीय मंत्री द्वारा पूर्व मे की गई पीरो पड़ाव मैदान का सौंदर्यीकरण और जगदीशपुर मे बाबु कुंवर सिंह प्रवेश द्वार का शिलान्यास करेंगे। इसके साथ आरा मे हीत नारायण क्षत्रिय विद्यालय के जीणोद्धार का भी उद्घाटन करेंगे। जिलाध्यक्ष दुर्गा राज ने बताया कि पीरो मे ऐतिहासिक पड़ाव मैदान का सौंदर्यीकरण की घोषणा माननीय केन्द्रीय मंत्री सह आरा सांसद आर के सिंह द्वारा की गई थी। शनिवार को 11 बजे उस योजना का शिलान्यास किया जाएगा। जिससे पीरो क्षेत्र के जनता मे खुशी का माहोल है। सभी ने केन्द्रीय मंत्री को बधाई दी है। जिलाध्यक्ष ने बताया कि पीरो क्षेत्र के लोगो की बहुप्रतीक्षित मांग पर आरा- राँची एक्सप्रेस का ठहराव पीरो मे केन्द्रीय मंत्री के प्रयास से सफल हो रहा है। उक्त गाड़ी का ठहराव पीरो मे 17 मार्च से शुरू हो जाएगा। निर्वाचन आयोग द्वारा संभावित आचार संहिता लागु होने के कारण उक्त गाड़ी का शुभारंभ कार्यक्रम नही हो पाएगा। आरा-राँची एक्सप्रेस ट्रेन पीरो क्षेत्र के यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण सौगात है, जिसे पा कर क्षेत्र के लोगो ने अपने सांसद आर के सिंह सहित केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार व्यक्त किया है। वहीं सांसद प्रतिनिधि ई. धीरेन्द्र सिंह ने बताया कि केन्द्रीय मंत्री द्वारा शनिवार को ही महान स्वतंत्रता सेनानी बाबु कुंवर सिंह के स्मृति मे जगदीशपुर मे भव्य बाबु कुंवर सिंह प्रवेश द्वार का आधारशिला 12:15 बजे रखा जाएगा।

इसके साथ आरा मे केन्द्रीय मंत्री द्वारा हित नारायण क्षत्रिय विद्यालय का जीणोद्धार कराया गया है, जिसका उद्घाटन 1:15 दिन मे केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री सह आरा सांसद आर के सिंह के कर कमलो द्वारा किया जाएगा।

केन्द्रीय मंत्री द्वारा पीरो, जगदीशपुर और आरा मे बहुमूल्य सौगात देने पर भारतीय जनता पार्टी भोजपुर के नेताओं और कार्यकताओं ने खुशी व्यक्त करते हुए आभार व्यक्त किया है।

आभार व्यक्त करने वालो मे जिलाध्यक्ष, सांसद प्रतिनिधि सहित मिथिलेश कुशवाहा, उदय प्रताप सिंह, वंदना राजवंशी, मीरा यादव, प्रेम पंकज ललन, कौशल यादव, सतीश भट्ट, नरेन्द्र तिवारी, पुनम कुशवाहा, राकेश सिंह, विजय सिंह, सीडी शर्मा, मदन स्नेही, मधु मिश्रा, संजय कुमार सिंह, संतोष चंद्रवंशी, रानी राय, राज कुमार कुशवाहा, अरविंद पांडेय, रंजना श्रीवास्तव, विनय बेलाऊर, सुनील कुमार, रमेश कुमार कर्ण, नवीन सिंह, संतोष तिवारी, धीरज सिंह, राजेश सिंह, निशांत सिंह सेंगर विभु जैन, कलामुद्दीन सहित वरिष्ठ नेतागण और कार्यकर्ता थे।

चैनपुर पुलिस ने 63 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ एक गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

चैनपुर। थाना क्षेत्र के घटमापुर मे गुप्त सूचना के आधार पर वाहन चेकिंग के दौरान चैनपुर पुलिस के द्वारा 63 लीटर देसी शराब के साथ एक अभिव्यक्त को गिरफ्तार किया गया। स्थानीय पुलिस ने घटमापुर के समीप वाहन चेकिंग अभियान के दौरान एक बाइक सवार को 63 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया वही शराब को लेकर जा रहे बाईक चालक को भी पुलिस के द्वारा खदेड़ा गया जहा बाईक सवार भागने में सफल हुआ। गिरफ्तार अभियुक्त की पहचान घटमापुर निवासी लखन बिंद का पुत्र सिघासन बिंद बताया गया। बताते चलें कि आगामी होली पर्व को लेकर शराब कारोबारीयों के विरुद्ध कैमूर पुलिस अलर्ट है। जिले के सभी विभिन्न जगहों पर पुलिस के द्वारा शराब कारोबारियों की गिरफ्तारी को लेकर लगातार वाहन जांच की जा रही है। इसी क्रम में चैनपुर पुलिस को एक बार फिर सफलता हाथ लगी है जहां उत्तर प्रदेश की ओर से आ रहे एक बाईक से वाहन जांच के दौरान 63 लीटर शराब को बरामद किया गया है। वहीं इससे संबंधित जानकारी देते हुए चैनपुर थाना प्रभारी विजय प्रसाद के द्वारा बताया गया कि गिरफ्तार अभियुक्त पहले भी शराब के मामले में जेल जा चुका है वही फिलहाल अभियुक्त को मेडिकल जांच के बाद भभुआ न्यायिक रियासत में भेज दिया गया।

पदाधिकारी द्वारा अमर्यादित बयान पर किसानों ने दिया धरना प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

भभुआ समाहरणालय पर भूमि अधिग्रहण मामले में भू अर्जन पदाधिकारी द्वारा अमर्यादित बयान समाचार पत्रों में देने पर किसानों ने समाहरणालय के मुख्य गेट पर धरना प्रदर्शन दिया है। किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष विमलेश पांडेय ने बताया कि भारतमाला एक्सप्रेसवे में सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण की जा रही है। जो की सरकार उसका उचित मुआवजा नहीं दी जा रही है। वही एक तरफ भू अर्जन पदाधिकारी द्वारा समाचार पत्रों में अमर्यादित बयान दिया गया। उसी के विरोध में समाहरणालय के मुख्य गेट पर धरना प्रदर्शन दिया गया है। अगर सरकार और पदाधिकारी द्वारा हम लोग के साथ ऐसा ही दुव्यवहार हुआ तो हम लोग आने वाले लोकसभा चुनाव के वोट का भी बहिष्कार करेंगे। इस संबंध में एसडीएम विजय कुमार ने बताया कि नियमा अनुसार भू अर्जन पदाधिकारी द्वारा कहा गया था कि जो किसान अपने भूमि का मुआवजा नहीं लेते हैं तो उनका पैसा कोर्ट में सिरेंडर कर दिया जाएगा और उसके बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी। इसी मामले में किसानों ने अपने उचित मुआवजा की मांग को लेकर धरना प्रदर्शन दिया है। जो इनके मांगों को लेकर आगे की कार्रवाई की जाएगी। मौके पर पशुपतिनाथ सिंह अभय सिंह रोहित कुमार अभिमन्यु सिंह एवं कई किसान मौजूद रहे।

एसआई की ईमानदारी देख, प्रोफेसर हुए कायल

काराकाट (रोहतास) :काराकाट थाना के एक एसआई ने ईमानदारी का मिशाल कायम किया है। यह खबर गुरुवार रात्रि की है, जब काराकाट एसआई संजीव कुमार अंचला अधिकारी के साथ ड्यूटी पर थे। उसी दौरान एसआई साहब को रोड पर पड़ा एक बटुआ मिला। उनके द्वारा उस बटुआ को सही सलामत सही हाथों में देने का ख्याल आया। लेकिन उस बटुआ के अंदर ऐसी कोई जानकारी उपलब्ध नही थी, जिससे उस व्यक्ति से संपर्क साधा जा सके। जबकि उसे बटुआ में तमाम वो कागजात उपलब्ध थी जो अक्सर बटुआ में होती है पैसा, पैन कार्ड, आधार कार्ड, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड व अन्य जरूरी कागजात उपलब्ध थी। एसआई श्री कुमार को बहुत प्रयास करने के बाद बटुआ के अंदर से बैंक का रसीद हाथ लगा। फिर अगली सुबह दिन शुक्रवार को बैंक गये और उस बैंक रसीद के माध्यम से उसे व्यक्ति की सारी जानकारी इकट्ठा की। उसके मोबाइल नंबर पर संपर्क किया। और बटुआ को सही व्यक्ति के हाथों सुपूर्त कर दिया। बटुआ पाते व्यक्ति का खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

मतदाताओं को किया गया जागरूक

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास)। काराकाट प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत संकुल संसाधन केंद्र मध्य विद्यालय चिकसील के बुथ न. 03 पर मतदाताओं को लोकतंत्र के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांख्यिकी पदाधिकारी अनुज कुमार ने किया। साथ हीं सभी को लोकतंत्र में आस्था रखने का शपथ भी दिलाया। हम भारत के नागरिक लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतांत्रिक परंपराओं को मयार्दा बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र निष्पक्ष एवं शांतिपूर्वक निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्य रखते हुए निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मौके पर सांख्यिकी पदाधिकारी के अलावा पंचायत सचिव सुमन कुमार, कृषि सलाहकार अखिलेश कुमार, कृषि समन्वयक ककलेश कुमार, जीविका सीएम सोनी पटेल, स्वच्छता पर्यवेक्षक मिथिलेश कुमार, शिक्षक मुनीर आलम, शिक्षक बैजनाथ ठाकुर, वार्ड सदस्य सहित सैकड़ों ग्रामीण जनता मौजूद थे।

स्थानीय आधार पर आर्थिक विकास की प्रक्रिया को अपनाना होगा : प्रो. विजय

प्रात : किरण संवाददाता

भागलपुर। स्नातकोत्तर गाँधी विचार विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर में "बिहार आंदोलन के 50 वर्ष" विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुरूआत में बापू की प्रतिमा पर माल्यार्पण व पुष्प अर्पित करने के बाद विभाग के स्वराज कक्षा में अतिथियों द्वारा सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. सुरेन्द्र भाई पूर्व अध्यक्ष गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली ने कहा कि संपूर्ण क्रांति के मुद्दों में भ्रष्टाचार प्रमुख मुद्दा था भ्रष्टाचार के मुद्दे पर उत्पन्न यह क्रांति आज भी जीवित है क्योंकि भ्रष्टाचार आज और गहरा होता चला गया है। इन्होंने इंदिरा की तानाशाही के खिलाफ उत्पन्न आंदोलन की सफलता को सामने रखते हुए कहा कि संपूर्ण क्रांति ने लोकतंत्र में तानाशाही की प्रवृत्ति को समाप्त किया और आज के संदर्भ में आने वाले पीढ़ी के लिए हर तनाशाही के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा के रूप में संपूर्ण क्रांति जीवित है, जीवित रहेगा, साथी अहिंसक और निर्दलीय नेतृत्व की आवश्यकता जताई। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के पूर्व अधिकारी हरेंद्र प्रताप ने जनता को उसकी शक्ति और कर्तव्य का एहसास करते हुए कहा कि सत्ता न हो भ्रष्टाचारी, हमारी भी है जिम्मेदारी।

जे. पी. विश्वविद्यालय छपरा के पूर्व कुलपति प्रोफेसर फारूक अली ने अपने उद्बोधन में कहा कि अंधेरे के तीन प्रकाश गांधी, लोहिया, जयप्रकाश। गांधी शांति प्रतिष्ठान भागलपुर के अध्यक्ष प्रकाश चंद्र गुप्ता ने कहा कि जेपी ने अहिंसक आंदोलन की शर्त पर नेतृत्व को स्वीकारा था साथ ही उन्होंने कहा कि विचार और कर्म में आज भी एक होने की आवश्यकता है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो मनोज कुमार ने संपूर्ण क्रांति आंदोलन की सफलता और सफलता के संदर्भ में कहा की किसी भी आंदोलन में दो तरह के लोग होते हैं कुछ लोग स्वार्थी होते हैं जो आंदोलन में इसलिए प्रवेश करते हैं ताकि उसे आंदोलन से लाभ उठा सकें। 1947 के आंदोलन में भी और 1974 के आंदोलन में भी और फिर अन्ना आंदोलन में भी इस तरह की बातें देखी गई।

50 हजार रुपये का काटा ऑनलाइन चालान

प्रात : किरण संवाददाता

दिनारा(रोहतास)। वरीय अधिकारियों के दिशा - निर्देश पर दिनारा पुलिस ने वाहन चेकिंग अभियान चलाया। जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष विनय कुमार ने कहा कि थाना क्षेत्र के अलग- अलग जगहों पर पुलिस अधिकारियों की देखरेख में वाहन जांच किया गया। जिस क्रम में वाहन जांच दौरान वाहन चालकों से 50 हजार रुपये का ऑनलाइन चालान काटा गया। उन्होंने कहा कि वाहन जांच की प्रक्रिया निरंतर चलते रहेगा। श्री कुमार ने कहा कि वाहन जांच के क्रम में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर ध्यान में रखते हुए गहन रूप से सभी विन्दुओं पर छोटे एवं बड़े वाहनों की जांच की गई। मौके पर पुलिस अधिकारी, पुलिस बल के जवान और वाहन चालक लोग मौजूद थे।

मैं उनके लिए खुश हूं... धनुष को लेकर बोलीं ऐश्वर्या रजनीकांत

ऐश्वर्या रजनीकांत के निर्देशन में बनी फिल्म लाल सलाम हाल ही में रिलीज हुई थी। इस फिल्म से उन्होंने बतौर निर्देशक कॉलीवुड में नौ साल बाद वापसी की है। हालांकि, रजनीकांत के एक्सटेंडेड कैमियो के बाद भी फिल्म बॉक्स ऑफिस कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। इस बीच ऐश्वर्या ने पहली बार धनुष के साथ अपने अलगाव पर चुप्पी तोड़ी है। आइए जानते हैं कि उन्होंने क्या कहा है।

एक इंटरव्यू में ऐश्वर्या रजनीकांत अपने एक्स हसबैंड धनुष के बारे में अलग होने के दो साल बाद कुछ बात की है। इंटरव्यू में ऐश्वर्या से म्यूजिक कंपोजर अनिरुद्ध रविचंद्र को लेकर सवाल किया गया था। बता दें कि उन्होंने धनुष और श्रुति हसन के साथ वायरल गाना कोलावेरी डी कंपोज किया था। आगे ऐश्वर्या ने अनिरुद्ध को लेकर किए सवाल का जवाब देते हुए धनुष को लेकर भी बात की है।

धनुष को दिया श्रेय

ऐश्वर्या ने कहा, मुझे खुशी है कि वह सबसे डिमांडिंग संगीत निर्देशकों में से एक बन गए हैं। हालांकि, फिल्म इंडस्ट्री में उनकी एंट्री का मुझसे कोई संबंध नहीं है। वह मेरे चचेरा भाई हैं, लेकिन उनकी संगीत प्रतिभा को धनुष ने पहचाना। धनुष ने उन्हें 3 के गाने लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। सिनेमा इंडस्ट्री में उनका प्रवेश पूरी तरह से धनुष के कारण हुआ।

धनुष की वजह से अनिरुद्ध ने चुना संगीत करियर

ऐश्वर्या ने यह भी खुलासा किया कि अनिरुद्ध के माता-पिता की उनके लिए एक अलग योजना थी और वे चाहते थे कि वह सिंगापुर चले जाएं और अच्छी शिक्षा लें। हालांकि, धनुष ने अनिरुद्ध के माता-पिता को उनकी संगीत प्रतिभा और उनके संगीत करियर को आगे बढ़ाने में मदद करने के लिए राजी कर लिया था। ऐश्वर्या ने कहा, उनके लिए कीबोर्ड खरीदने से लेकर 3 के गाने लिखने के लिए दबाव डालने तक का श्रेय धनुष को जाता है। अनिरुद्ध की इंडस्ट्री में एंट्री धनुष की वजह से हुई है। लेकिन आज वह जहां तक पहुंचे हैं वह उनकी कड़ी मेहनत की वजह से है। और मैं उसके लिए काफी खुश हूं।

लव टुडे के हिंदी रीमेक में नजर आएंगी खुशी!

जोया अख्तर की फिल्म द आर्चीज से अभिनय की शुरुआत करने वाली खुशी कपूर जल्द आमिर खान के बेटे जुनैद खान के साथ अभिनय करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। यह जोड़ी पहली बार तमिल फिल्म लव टुडे के हिंदी रीमेक के लिए स्क्रीन पर साथ काम करेगी बोनी कपूर की लाडली बेटी और जान्हवी कपूर की बहन खुशी कपूर, जोया अख्तर की फिल्म द आर्चीज से अपना अभिनय डेब्यू किया था। खुशी कपूर डेब्यू के बाद से ही अपने अंदाज से दर्शकों का दिल जीत चुकी हैं। खुशी की सोशल मीडिया पर तगड़ी फैन फॉलोइंग है। जहां एक तरफ खुशी के फैंस उनकी हर एक अदा और एक्टिविटी पर प्यार लुटाते हैं। तो वहीं, ट्रोल्स कोई न कोई कमी निकालकर उन्हें ट्रोल भी करते हैं। हालांकि, इन सब के बीच अभिनेत्री के आगामी प्रोजेक्ट को लेकर एक बड़ी खबर आई है।

लव टुडे के हिंदी रीमेक में दिखेंगी खुशी

जोया अख्तर की फिल्म द आर्चीज से अभिनय की शुरुआत करने वाली खुशी कपूर जल्द आमिर खान के बेटे जुनैद खान के साथ अभिनय करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। यह जोड़ी पहली बार तमिल फिल्म लव टुडे के हिंदी रीमेक के लिए स्क्रीन पर साथ काम करेगी, जिसमें प्रदीप रंगनाथन और इवाना ने अभिनय किया था। फैंस इस खबर को सुनकर काफी ज्यादा एक्साइटेड हैं। आइए जानते हैं कि बाकी अपडेट्स क्या है।

ओटीटी पर होगी रिलीज

अभिनेत्री फिलहाल नादानियां की शूटिंग कर रही हैं। यह सरजमीन के बाद सैफ अली खान के बेटे इब्राहिम अली खान की दूसरी फिल्म है। यह फिल्म करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस ने निर्मित किया है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो यह फिल्म डायरेक्ट-टू-ओटीटी रिलीज होगी और शाउना गौतम के निर्देशन की पहली फिल्म होगी।

इस फिल्म से किया था डेब्यू

बता दें कि फिल्म की आधिकारिक घोषणा का इंतजार है। यह बताया गया है कि फिल्म की शूटिंग इस गर्मी में शुरू होगी। बता दें कि खुशी कपूर की पिछली फिल्म द आर्चीज 2023 में नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई थी। इसमें अगस्त्य नंदा, सुहाना खान, वेदांग रैना, मिहिर आहूजा, अदिति सहगल और युवराज मेंडा ने अभिनय किया था। फिल्म को दर्शकों ने की खूब सराहना मिली थी।

गिरफ्तारी की झूठी खबरों पर

फूटा वरालक्ष्मी का गुस्सा

वरालक्ष्मी सरथकुमार की गिनती साउथ सिनेमा की टॉप एक्ट्रेस में होती है। अपने अभिनय और खूबसूरती से वरालक्ष्मी ने दर्शकों के दिल में खास जगह बनाई है। हाल ही में उन्हें लेकर ये खबर सामने आई थी कि उन्हें राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने गिरफ्तार किया था। अब अभिनेत्री ने इन फर्जी खबरों की आलोचना की है। रिपोर्ट में दावा किया गया कि वरालक्ष्मी को उनके पूर्व मैनेजर आदिलिंगम की चल रही जांच के संबंध में गिरफ्तार किया गया था, जो कथित तौर पर ड्रग्स और हथियारों के सौदे में शामिल थे। अभिनेत्री ने अपने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट साझा कर मीडिया पर झूठी खबर छापने को लेकर निशाना साझा है। वरालक्ष्मी सरथकुमार ने लिखा, यह बहुत दुखद है कि हमारी प्रतिभाशाली मीडिया के पास पुरानी और फेक खबरें प्रसारित करने के अलावा कोई खबर नहीं है। हमारे प्रिय पत्रकार, खासतौर पर समाचार साइटें और आपके आर्टिकल, आप लोग वास्तविक पत्रकारिता करना क्यों नहीं शुरू करते हैं मशहूर हस्तियों में खामियां ढूंढना बंद कर दें। उन्होंने आगे लिखा, हम अभिनय करने, लोगों का मनोरंजन करने और अपना काम करने की कोशिश कर रहे हैं। तो फिर आप लोग अपना काम क्यों नहीं करते ऐसे एक हजार गंभीर मुद्दे हैं, जिन पर आपको वास्तविक ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारी खामोशी को कमजोरी की निशानी मत समझिए। अभिनेत्री ने आगे लिखा, मानहानि के मामले भी अब ट्रेंड में हैं। फर्जी कचरा और आधारहीन खबरें छापना बंद करें और ऐसी पत्रकारिता वापस लेकर आएं, जो हमें गर्व महसूस करवाए।

शाहरुख के बाद अब अल्लू अर्जुन के साथ धमाल मचाने को तैयार एटली

तमिल फिल्म निर्देशक एटली कुमार अपने करियर के बेस्ट फेज में हैं। बॉलीवुड करियर की टॉप ग्रोसर फिल्म देने के बाद निर्देशक टॉलीवुड सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के साथ अगली फिल्म की तैयारी में हैं। खबर है कि 8 अप्रैल, 2024 को अल्लू अर्जुन के जन्मदिन के साथ ही आधिकारिक घोषणा भी हो सकती है। सोशल मीडिया पर प्रसिद्ध निर्देशक एटली के अगले प्रोजेक्ट की खबरों से गूंज हर तरफ सुनाई दे रही है। यह खबर उनकी पत्नी प्रिया एटली द्वारा साझा की गई रील से शुरू हुई है। वीडियो में एटली और अन्य लोगों को गहरी चर्चा करते हुए दिखाया गया है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद टॉलीवुड के आइकन स्टार, अल्लू अर्जुन के साथ उनके आगामी प्रोजेक्ट्स के लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। हालांकि, अभी तक फिल्म को लेकर आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। खबरों के मुताबिक ऐसी संभावना जताई जा रही है कि यह घोषणा अल्लू अर्जुन के जन्मदिन यानी 8 अप्रैल को हो सकती है।

चल रहा है प्री-प्रोडक्शन वर्क

खबरों की मानें तो अल्लू अर्जुन और एटली कुमार की इस फिल्म का प्री-प्रोडक्शन वर्क तेजी से चल रहा है। फिल्म की कहानी बनकर तैयार हो रही है। इसके साथ ही फिल्म से जुड़ी बातचीत भी अपने आखिरी पड़ाव पर है। अगर सब कुछ ठीक रहा तो निर्देशक अल्लू अर्जुन और एटली कुमार की इस फिल्म की शूटिंग पुष्पा 2 के रिलीज होने के बाद शुरू हो सकती है।

फैंस का मिला ये रिएक्शन

पिछले दिनों इस फिल्म को लेकर अल्लू अर्जुन के फीस की खूब चर्चाएं हुई थीं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो अल्लू अर्जुन इस फिल्म के लिए मेकर्स से पूरे 60 करोड़ रुपये बतौर फीस लेने वाले हैं। यह रकम अब तक किसी भी फिल्म निर्देशक को दी जाने वाली फीस की तुलना में कहीं ज्यादा है।

मुझे ईमानदार, वफादार जीवनसाथी की तलाश है

बॉलीवुड में नेहा धूपिया अपनी बेबाकी के लिए मशहूर हैं। नेहा का वही बेबाक अंदाज उनके चैट शो में भी देखने मिलता है। नो फिल्टर नेहा के एपिसोड में बॉलीवुड की खूबसूरत अभिनेत्री कृति सेनन बतौर मेहमान दिखाई देने वाली हैं।

नेहा धूपिया इन दिनों अपने शो नो फिल्टर नेहा की वजह से सुर्खियां बटोर रही हैं। यह शो अपने पिछले सीजन से काफी अलग और बेहतर है। नो फिल्टर नेहा के इस सीजन में अभी तक शाहिद कपूर, टाइगर श्रॉफ और करीना कपूर खान बतौर मेहमान आ चुके हैं। वहीं शो के आगामी एपिसोड में कृति सेनन अपनी निजी जिंदगी के बारे में से नेहा बातें करती नजर आएंगी। सोशल मीडिया पर नेहा और कृति के इस एपिसोड का प्रोमो काफी वायरल हो रहा है।

डेटिंग ऐप्स पर भरोसा नहीं करती कृति

बॉलीवुड में नेहा धूपिया अपनी बेबाकी के लिए मशहूर हैं। नेहा का वही बेबाक अंदाज उनके चैट शो में भी देखने मिलता है। नो फिल्टर नेहा के अगले एपिसोड में बॉलीवुड की खूबसूरत अभिनेत्री कृति सेनन बतौर मेहमान दिखाई देने वाली हैं। यूट्यूब पर जारी किए गए शो के प्रोमो में नेहा कृति से पूछती हैं कि उन्हें कैसे जीवनसाथी की तलाश है। इस सवाल के जवाब में कृति कहती हैं, सच कहूं तो मुझे डेटिंग ऐप्स पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं है। मैंने अपने आस-पास के लोगों को बता रखा है कि मुझे एक जीवन साथी की तलाश है और उसे ढूंढने में वे मेरी मदद करें।

प्यार के मामले में कृति हैं ओल्ड-स्कूल

कृति सेनन अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं, मैं प्यार को लेकर एकदम पुरानी सोच रखती हूं। मुझे एक ऐसा जीवनसाथी चाहिए जो मेरे साथ बिल्कुल ईमानदार हो और मुझ से बहुत प्यार करे। मेरे लिए वफादार होना बहुत मायने रखता है।

ज्यादा नहीं बस बेसिक चीजें चाहिए जिंदगी में

शो नो फिल्टर नेहा के प्रोमो में तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया स्टार कृति सेनन बेबाकी से अपने आने वाले जीवन के बारे में बातें करती दिखाई दे रही हैं। कृति की बातों को सुनकर नेहा कहती हैं, मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि आप एक नहीं बल्कि सात-आठ लड़कों के बारे में बात कर रही हैं। इस बात पर कृति हंसते हुए जवाब देती हैं, मैं ज्यादा नहीं बोल रही हूं। जो भी मैं चाह रही हूं वो सब तो बेसिक बाते हैं।

बेटी राहा के ब्रांड कलेक्शन पर बोलीं आलिया

आलिया भट्ट ने एक हालिया इंटरव्यू के दौरान बेटी राहा के बारे में बातचीत की। आलिया से उनके ब्रांड कलेक्शन में से राहा की फेवरेट ड्रेस के बारे में पूछा गया। उन्होंने बताया कि वो पिछले साल मेट गाला 2023 में शामिल होने न्यूयॉर्क गई थीं। उन्हें उस ब्रांड के फोटोशूट के दौरान राहा के लिए एक प्यारा गिफ्ट मिला था, जिसकी वो ब्रांड ऐंबैस्डर भी हैं। आलिया ने बताया कि उन्हें बेटी राहा के लिए एक प्यारी ड्रेस गिफ्ट की गई थी, लेकिन उस समय वो ड्रेस राहा को बड़ी थी। ड्रेस के बारे में बताते हुए आलिया ने कहा कि वो सफेद कॉलर वाली नीले रंग की ड्रेस है। उन्होंने कहा कि ये मेरी पसंदीदा ड्रेस है, क्योंकि वो राहा का पहला गिफ्ट है। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान आलिया भट्ट की बहन, पूजा भट्ट ने अपनी भतीजी राहा के बारे में बात की। उन्होंने कहा- अभी मैं उन्हें बड़ा होते हुए देख रही हूं। पूजा भट्ट ने कहा कि राहा रणबीर और आलिया से ज्यादा टैलेंटेड होंगी, अभी से वो कई ऐसी चीजें करती हैं जो हैरान करने वाली हैं।

पूजा ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- हर जेनरेशन अपने पेरेंट्स से बेहतर होती है, ये अभी से ही राहा में दिख रही है। उन्होंने कहा कि राहा बहुत खूबसूरत होने वाली हैं। वहीं पूजा भट्ट ने आलिया की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने प्रेग्नेंसी के दौरान अपना काफी ख्याल रखा और लोगों को भी कई टिप्स भी दिए। पूजा के मुताबिक, आलिया और रणबीर बेस्ट कपल हैं जो अपनी बेटी राहा को बेहतर परवरिश दे रहे हैं।

कार्तिक आर्यन ने खरीदी करोड़ों की लग्जरी कार

बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म भूल भुलैया 3 की शूटिंग में व्यस्त हैं। अब हाल ही में अभिनेता ने अपने फैंस के साथ एक खुशखबरी साझा की है। दरअसल, अभिनेता ने नई शानदार लग्जरी कार खरीदी है। अभिनेता ने हाल ही में एक रेंज रोवर एसवी खरीदी है, जिसकी कीमत छह करोड़ रुपये है। गुरुवार को कार्तिक का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया, जिसमें वे पूजा करते और अपनी नई कार का स्वागत करते नजर आए।

कार्तिक ने साझा की नई कार की तस्वीर

उन्होंने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक तस्वीर भी साझा की, जिसमें वह अपनी शानदार कार के डिक्की में खुशी से बैठे नजर आ रहे हैं। कार्तिक के साथ उनकी पालतू पेट कटोरी भी थीं। इस दौरान वे आरामदायक शर्ट, सफेद पतलून और कोल्हापुरी चप्पल पहने कैजुअल लुक में नजर आए। नई कार के साथ तस्वीर साझा करते हुए कार्तिक ने कैप्शन में लिखा, हमारी रेंग थोड़ी सी बढ़ गई। मिनी माथुर और डब्बू रत्नानी सहित उनके कई उद्योग के साथियों ने उन्हें उनकी नई कार के लिए बधाई दी।

कार्तिक का कार कलेक्शन

कार्तिक आर्यन के पास बीएमडब्ल्यू 5 सीरीज 520डी, मैकलेरन जीटी, मिनी कूपर एस, लेम्बोर्गिनी उरुस कैप्सूल और पोर्श 718 बॉक्सस्टर समेत कई शानदार कार हैं। इंडस्ट्री के सितारों के साथ तमाम फैंस कार्तिक को उनकी नई कार के लिए बधाई दे रहे हैं। वहीं बात करें कार्तिक की आने वाली फिल्मों के बारे में तो फिलहाल भूल भुलैया 3 की शूटिंग शुरू कर चुके हैं।

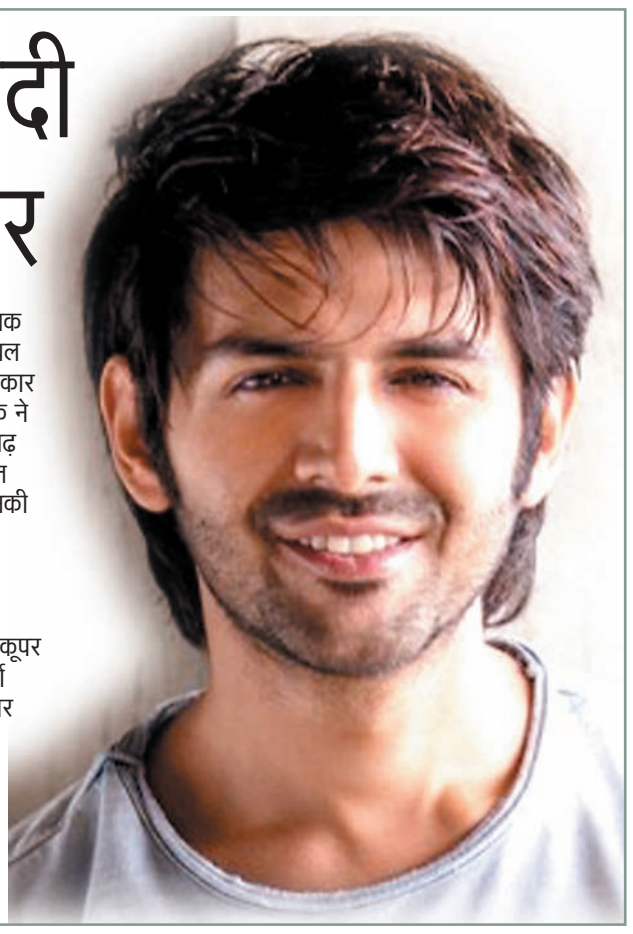

सेंसेक्स
73097.28 पर बंद
निफ्टी
22146.65 पर बंद

सोना
65,782
चांदी
75,514

प्रॉफिट वाली कंपनी का आ रहा आईपीओ, 450 करोड़ का है फेश इश्यू

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) पर दांव लगाकर कमाई की सोच रहे हैं तो यह खबर आपके काम की हो सकती है। दरअसल, ट्रांसरेल लाइटिंग लिमिटेड ने आईपीओ से पैसे जुटाने के लिए पूंजी बाजार नियामक सेबी के पास दस्तावेज दाखिल किए हैं। पिछले सप्ताह दायर दस्तावेजों के मुताबिक प्रस्तावित प्रारंभिक शेयर बिक्री 450 करोड़ रुपये के इक्विटी शेयरों के फ्रेश इश्यू और प्रवर्तक अजंमा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा एक करोड़ से अधिक शेयरों की बिक्री की पेशकश का एक संयोजन है। वर्तमान में, मुंबई स्थित कंपनी में प्रवर्तकों की 86 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी है। कंपनी 50 करोड़ रुपये के आईपीओ पूर्व बिक्री पर विचार कर सकती है। अगर ऐसा होता है तो बिक्री वाले नए शेयरों का आकार घट जाएगा। ट्रांसरेल लाइटिंग लिमिटेड के फ्रेश इश्यू से जुटाई गई रकम में से 250 करोड़ रुपये का उपयोग वर्किंग कैपिटल जरूरतें पूरा करने के लिए और 90.9 करोड़ रुपये का उपयोग पूंजीगत व्यय का समर्थन करने के लिए किया जाएगा। शेष रकम का उपयोग सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए होग। बता दें कि वेंचर्स, एक्सिस कैपिटल, एचडीएफसी बैंक और आईडीबीआई कैपिटल मार्केट्स एंड सिक्योरिटीज इस इश्यू के प्रमुख प्रबंधक हैं। लिंक इनटाइम इंडिया इस इश्यू का रजिस्ट्रार है।

5 करोड़ नौकरी, इकॉनमी को 1 ट्रिलियन का बूस्टर, यूनिकॉर्न पर यह रिपोर्ट जोश भर देगी !

नई दिल्ली, एजेंसी। नई यूनिकॉर्न कंपनियों से भारतीय अर्थव्यवस्था में एक लाख करोड़ डॉलर जुड़ने की संभावना है। ये कंपनियां पांच करोड़ नए रोजगार के अवसर भी तैयार करेंगी। उद्योग मंडल भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने गुरुवार को जारी एक रिपोर्ट में यह अनुमान जताया। यह रिपोर्ट मैकिंजी एंड कंपनी के सहयोग से तैयार की गई है। एक अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक मूल्य वाली स्टार्टअप कंपनियों को 'यूनिकॉर्न' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

सीआईआई की रिपोर्ट में वित्त वर्ष 2029-30 तक भारत की अर्थव्यवस्था सात लाख करोड़ डॉलर तक पहुंचने और उसमें स्टार्टअप कंपनियों का योगदान एक लाख करोड़ डॉलर होने की कल्पना की गई है। इससे देश में पांच करोड़ से अधिक रोजगार अवसर पैदा होंगे।

रिपोर्ट कहती है कि खुदरा और ई-कॉमर्स, अगली पीढ़ी की वित्तीय सेवाएं, विनिर्माण और सॉफ्टवेयर सेवा एवं डिजिटल जैसे क्षेत्र आने वाले वर्षों में बड़े पैमाने पर वृद्धि को गति देने के लिए तैयार हैं। भारत में पहली बार किसी प्रौद्योगिकी-आधारित कंपनी को यूनिकॉर्न का दर्जा 2011 में मिला था। एक दशक में ही भारत ने 100 यूनिकॉर्न का आंकड़ा पार कर लिया है। जनवरी, 2024 तक मौजूद 113 यूनिकॉर्न कंपनियों का संयुक्त मूल्यांकन 350 अरब डॉलर है।

यूनिकॉर्न कल्चर कौन से फैक्टर दे रहे बढ़ावा

उद्योग निकाय ने कहा कि 100 से अधिक यूनिकॉर्न का उदय एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इसका श्रेय कई महत्वपूर्ण कारकों को दिया जाता है। इसमें डिजिटल रूप से कुशल युवा आबादी, मोबाइल इंटरनेट तक व्यापक पहुंच, मध्यम वर्ग की बढ़ोतरी और एक मददगार नियामकीय ढांचे की मौजूदगी शामिल है। सीआईआई के अध्यक्ष आर दिनेश ने कहा कि स्टार्टअप इकोसिस्टम इनोवेशन, जुझारू क्षमता और परिवर्तनकारी विचारों के धागों से बुना हुआ एक जीवंत चित्र है।

ईडी जांच; 100 से अधिक कंपनियों से कनेक्शन ! कौन हैं 1368 करोड़ के महादानी सैंटियागो मार्टिन

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट के आदेश का अनुपालन करते हुए चुनावी बॉन्ड का विवरण प्रकाशित किया। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने चुनाव आयोग को 12 मार्च को ये आंकड़े सौंपे थे। आंकड़ों के अनुसार, जो अब ईसीआई वेबसाइट पर उपलब्ध है, कोयंबटूर स्थित कंपनी फ्यूचर गेमिंग व होटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का नाम चुनावी बॉन्ड के सबसे बड़ा दानदाता के रूप में सामने आया। फ्यूचर गेमिंग की स्थापना 1991 में लॉटरी किंग ऑफ इंडिया सैंटियागो मार्टिन ने की थी। आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2019 से खरीदे गए इलेक्टोरल बॉन्ड के कुल मूल्य का आधा हिस्सा 23 कंपनियों का है। कोयंबटूर स्थित लॉटरी सेवा फर्म फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड शीर्ष खरीदार है। ईसीआई द्वारा प्रकाशित सूची में 12,155.51 करोड़ रुपये के बॉन्ड का विवरण दिया गया है, जिसे लगभग पांच वर्षों में 1,300 से अधिक कंपनियों द्वारा खरीदा गया था। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि फ्यूचर गेमिंग और होटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड ने 1,368 करोड़ रुपये के बॉन्ड खरीदे और इस तरह यह 1,000 करोड़ रुपये से अधिक का दान करने वाली अकेली कंपनी है।

सरकार ने ईवी के लिए 500 करोड़ रुपए की नई योजना का किया ऐलान

नई दिल्ली, एजेंसी। मिनिस्ट्री ऑफ हैवी इंडस्ट्री ने देश में ई-व्हीकल को बढ़ावा देने के लिए एक नई योजना की घोषणा की है। अप्रैल 2024 से जुलाई 2024 तक (चार महीने) के लिए चलने वाली इस योजना पर 500 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। ये परियोजना दोपहिया और तिपहिया वाहनों के लिए है। देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाने और मैन्युफैक्चरिंग कार्यक्रम का दूसरा चरण (फेम-2) 31 मार्च, 2024 को समाप्त हो रहा है। हैवी इंडस्ट्री के मंत्री महेंद्र नाथ पांडे ने ई-व्हीकल संवर्द्धन योजना 2024 (ईएम पीएस 2024) की घोषणा करते हुए कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार देश में ई-व्हीकल को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

योजना के तहत प्रति दोपहिया वाहन के लिए 10,000 रुपए की सहायता प्रदान की जाएगी। इसका उद्देश्य लगभग 3.3 लाख दोपहिया वाहनों को सहायता प्रदान करना है। छोटे तिपहिया वाहनों (ई-रिक्शा और ई-कार्ट) की खरीद के लिए 25,000 रुपए तक की सहायता दी जाएगी। ऐसे 41,000 से अधिक वाहनों को शामिल किया जाएगा। बड़ा तिपहिया वाहन खरीदने पर 50,000 रुपए की वित्तीय मदद दी जाएगी। फेम-2 के तहत सब्सिडी 31 मार्च, 2024 तक या धन उपलब्ध होने तक बेचे जाने वाले ई-वाहनों के लिए पात्र होगी। इससे पहले भारी उद्योग मंत्रालय और आइआइटी रुड़की ने इनोवेशन को प्रोत्साहित करने और ऑटोमोटिव और इलेक्ट्रिक वाहन क्षेत्र को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से मिलकर काम करने के लिए एक डील साइन की है। मंत्रालय द्वारा प्रदान किए गए कुल 19.87 करोड़ रुपए के अनुदान और इंडस्ट्री में भागीदारों के अतिरिक्त 4.78 करोड़ रुपए के योगदान के साथ कुल परियोजना लागत 24.66 करोड़ रुपए है।

ऐसे मिलता फायदा

बता दें कि केंद्र सरकार ने देश में इलेक्ट्रिक वाहन को बढ़ावा देने के लिए पहले फेम 1 स्कीम शुरू की शुरुआत की थी, जिसे बाद में फेम 2 स्कीम के नाम से आगे बढ़ाया गया। इस स्कीम में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर और इलेक्ट्रिक फोर व्हीलर वाहन खरीदने पर केंद्र सरकार और राज्य सरकार की ओर से सब्सिडी दी जाती है। आपको बता दें इस सब्सिडी का सीधा फायदा वाहन खरीदार को मिलता है।

साबु ट्रेड के ग्यारह किस्म के मिलेट जल्द ही बाजार में

मिलेट और कसावाकंद से तैयार फरियाली आटा मार्केट टेस्टिंग में सफल

मुंबई, एजेंसी। 1993 से भारत का सर्वप्रथम एगमार्क प्रमाणित साबूदाना व अन्य स्वास्थ्यवर्धक एफएमसीजी उत्पादों के निर्माता साबु ट्रेड प्राइवेट लिमिटेड, सेलम, चालीस वर्षों से लगातार देश भर में उच्चतम मापदंडों वाला साबूदाना एगमार्क में तथा शुद्ध फरीयाली साबूदाना पापड़ आदि उपलब्ध करा रही है । पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में कम्पनी ने अनेक नये शुद्ध उत्पाद जैसे अल्पाहार ब्रांड में सेलम की उच्च करक्युमिन वाली हल्दी का पाउडर, नारियल का शुद्ध अति गुणवत्ता वाला कोलेस्ट्रोलमुक्त हाइ-फेट पाउडर, हेंड-पिक्ड फूल-मखाना आदि तथा कुकरीजॉकी ब्रांड में पाँच तरह के उच्च पोषक और स्वास्थ्यवर्धक श्रीधान्य (मिलेट) सोर्टेक्स क्लीन करवा कर पाँच किस्म मोरधन-भगर, कोदरा, कंगनी, झंगोरा और रागी आकर्षक उपभोक्ता पैक में लगातार बाजार में ग्राहक सेवा में उपलब्ध हैं । उपभोक्ता भी पूरे विश्वास से साबु के उत्कृष्ट उत्पादों को बाजार में अच्छा प्रतिसाद दे रहे हैं ।

साबु ट्रेड के प्रबंध निर्देशक श्री गोपाल जी साबु ने अपने इंदौर प्रवास पर बताया कि - हमारी कम्पनी ने कुकरीजॉकी ब्रांड में छह उत्तम किस्म के अन्य श्रीधान्य ((छेन्ना, राजगीरा, हरी कंगनी, ज्वार, बाजरा, और किनोवा मिलेट)भी सोर्टेक्स क्लीन कर उपभोक्ता पैकिंग में लाँच कर दिये हैं, जो इन्दौर के उपभोक्ताओं को अगले महीने से बाजार में उपलब्ध हो जायेंगे । इसके अतिरिक्त हमारी आर एंड डी टीम ने मिलेट और कसावा जमीकंद के मिश्रण से एक फरियाली आटा तैयार किया है, जो ग्लुटेन मुक्त होने के साथ पोषक भी है। पिछले दिनों इन्दौर में कई परिवारों में इस आटे का सेम्पल देकर गृहिनियों से रोटियाँ बनाने के बाद जब फीडबैक लिया तो पाया कि इस आटे की रोटियाँ, बिना गर्म जल के उपयोग के भी बहुत नर्म और स्वादिष्ट बनती है। सौ प्रतिशत पाज़िटिव फीडबैक के बाद कम्पनी अप्रैल माह से सच्चासाबु ब्रांड में इसका व्यावसायिक उत्पादन करने का विचार कर रही है।

अकुशल से कुशलः मध्य प्रदेश में राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिए कुशल कामगार तैयार कर रही कामधेनू

भोपाल। सुरक्षित निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत की सबसे बड़ी निर्माता और रिटेल में ब्रांडेड टीएमटी बार की विक्रेता कामधेनू लिमिटेड ने मध्य प्रदेश में पिछले एक साल में 500 से अधिक राजमिस्त्रियों को 'राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम' के अंतर्गत प्रशिक्षित किया। कंपनी राज्य में हर महीने 40-45 राजमिस्त्रियों के प्रत्येक समूह में निर्माण श्रमिकों के साथ नियमित बातचीत एवं प्रशिक्षण और गुणवत्ता कार्यक्रम सुनिश्चित करती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कंपनी निर्माण क्षेत्र के बारे में नवीनतम जानकारी उन लोगों तक पहुंचाती है जो निर्माण और चिनाई के काम में शामिल हैं। कामधेनु की ओर से बैठक को प्रतिभागियों के लिए अधिक इंटरैक्टिव और रोमांचक बनाने के लिए एक विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म भी दिखाई जाती है। जिसमे अच्छी किस्म के मैटेरियल का उपयोग करने पर बल दिया जाता है।

निर्माण में स्टील के उपयोग के बारे में बात करने के अलावा, राजमिस्त्री कंपनी के इनोवेटिव उत्पादों जैसे अगली पीढ़ी के इंटरलॉक स्टील कामधेनु एनएक्सटी के बारे में भी विस्तृत जानकारी देते हैं। कार्यक्रम को राजमिस्त्री समुदाय से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिल रही है। कामधेनु लिमिटेड के निदेशक श्री सुनील अग्रवाल ने कहा, वर्ष 2009 में शुरू किए गए 'राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम'का उद्देश्य संरचनात्मक सुरक्षा और निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए राजमिस्त्रियों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाना था। इसका लक्ष्य हमारे देश की अकुशल श्रमिक आबादी का उत्थान करके राजमिस्त्रियों और निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ पहुंचाना है। निम्न-गुणवत्ता वाली स्थानीय सरिया के उपयोग से निर्माण की गुणवत्ता ख़राब होती है। बार-बार मरम्मत की आवश्यकता होती है। यह कार्यक्रम राजमिस्त्रियों को सही कौशल प्रदान करने और निर्माण एवं रख-रखाव परियोजनाओं के लिए हमारे अपने कामधेनु एनएक्सटी जैसे उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने में सफल रहा है।

इंडकल टेक्नोलॉजीज़ ने एसर एयरकंडीशनर्स की 2024 श्रृंखला की घोषणा की, होम कूलिंग में नए मानक स्थापित किए

मुंबई, एजेंसी। भारत में एसर होम अप्लायंसेज़ के आधिकारिक लाईसेंसी, इंडकल टेक्नोलॉजीज़ प्राईवेट लिमिटेड ने एसर एयरकंडीशनर्स की 2024 श्रृंखला पेश की है। होम कूलिंग का अनुभव बेहतर बनाने के लिए निर्मित ये एयर कंडीशन 1 टन - 3 और 5 स्टार रेटिंग, 1.5 टन - 3 और 5 स्टार रेटिंग और 2 टन - 3 स्टार रेटिंग में उपलब्ध होंगे। इन एयरकंडीशनर्स में आर्कटिकरैप कूलिंग, एआईसेंस, और कूलस्फेयर एयरफ्लो मैनेजमेंट जैसी अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी हैं। ये नए एयरकंडीशनर ग्राहक-अनुभव को प्राथमिकता देते हुए शुरू में देश में सभी ऑफलाईन रिटेल चैनलों पर उपलब्ध होंगे।

एसर एयरकंडीशनर्स में भारत में पहली बार 7-इन-1 कन्वर्टिबल टेक्नोलॉजी के साथ उद्योग की अग्रणी विशेषता दी गई है। इस टेक्नोलॉजी द्वारा यूज़र्स कूलिंग को अपनी जरूरत के अनुसार अनुकूलित कर सकते हैं। इसके अलावा, इन एसी में आर्कटिक रैप कूलिंग है, जो 55 डिग्री सेल्सियस की गर्मी में भी शक्तिशाली और भरोसेमंद कूलिंग प्रदान करती है। एसर एसी की इंटैलिजेंट एआईसेंस टेक्नोलॉजी की मदद से ये मशीनें एडैप्टिव कूलिंग इंटैलिजेंस के साथ आती हैं, जिसकी मदद से ये यूज़र की पसंद के अनुरूप अनुकूलित हो जाते हैं, और बाहरी तापमान के आधार पर कूलिंग की सैटिंग को भी ऑप्टिमाईज़ कर देते हैं, ताकि बिजली की खपत कम हो, और बिजली का बिल कम आए। ये एसी बहुत कम नॉईज़ के साथ काम करते हैं। एसर एसी में दिए गए कूलस्फेयर एयरफ्लो द्वारा 3डी कूलिंग डाईव की मदद से कमरे में सबसे अच्छा कूलिंग का वातावरण मिलता है, जो पूरा कम्फर्ट प्रदान करता है।

ये एसी इनोवेशन और खूबसूरत डिज़ाईन का बेहतरीन मिश्रण पेश करते हैं, जो स्लीक होने के साथ मिनिमलिस्ट भी है। साथ ही, इसके वन डिज़ाईन में एक उपयोगी एलईडी डिस्प्ले भी दिया गया है, जो भारतीय बाजार में इस तरह के फीचर का पहला उदाहरण है।

इंडकल टेक्नोलॉजीज़ प्राईवेट लिमिटेड के सीईओ, श्री आनंद दुबे ने कहा, ''हम एसर एयरकंडीशनर्स की 2024 श्रृंखला पेश करके बहुत उत्साहित हैं। यह भारत के परिवारों को आधुनिक टेक्नोलॉजी के भरोसेमंद कूलिंग समाधान प्रदान करने के हमारे मिशन की ओर एक बड़ा कदम हैं। इनोवेशन और ग्राहक संतुष्टि की हमारी प्रतिबद्धता हमें लगातार अपनी सीमाएं बढ़ाने और अपेक्षाओं से बढ़कर इनोवेशन लाने के लिए प्रेरित करती है।''

कंपनी के विज़न के बारे में श्री दुबे ने बताया, ''इंडकल टेक्नोलॉजीज़ प्राईवेट लिमिटेड में हम न केवल बेहतरीन उत्पाद पेश करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, बल्कि एक ऐसा विस्तृत सर्विस नेटवर्क भी स्थापित करना चाहते हैं, जो हमारे ग्राहकों के लिए तुरंत एवं व्यक्तिगत सहायता सुनिश्चित कर सके। हम विश्वसनीयता और मन के सुकून का महत्व समझते हैं, और अपने व्यवसाय के हर पहलू में इनका ख्याल रखते हैं।''

केंद्र की हिस्सेदारी घटाने की योजना, 75 फीसदी से नीचे लाएंगे पांच सरकारी बैंक

नई दिल्ली, एजेंसी। बैंक ऑफ महाराष्ट्र, इंडियन ओवरसीज बैंक (आईओबी) व यूको बैंक सहित पांच सरकारी बैंक केंद्र का हिस्सा घटाकर 75 फीसदी से नीचे लाने की योजना बना रहे हैं। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता (एमपीएस) मानदंडों के अनुपालन के लिए बैंक यह योजना बना रहे हैं। वित्तीय सेवा सचिव विवेक जोशी ने गुरुवार को कहा, 12 सरकारी बैंकों (पीएसबी) में से चार 31 मार्च, 2023 तक सार्वजनिक शेयरधारिता नियमों का अनुपालन कर चुके हैं। चालू वित्त वर्ष में तीन और पीएसबी न्यूनतम 25 फीसदी एमपीएस का अनुपालन पूरा कर चुके हैं।शेष पांच सरकारी बैंकों ने एमपीएस मानदंड पूरी करने की योजना बनाईहै। जोशी ने कहा, नियामक सेबी ने सरकारी बैंकों को विशेष छूट दी है। उनके पास 25 फीसदी सार्वजनिक शेयरधारिता के नियम को पूरा करने के लिए अगस्त, 2024 तक का समय है। बाजार की स्थिति के आधार पर इनमें से प्रत्येक बैंक शेयरधारकों के सर्वोत्तम हित में निर्णय लेंगे।

चुनावी बॉन्ड में निवेश करने वाले बड़े दानकर्ताओं में अंबानी-अदाणी नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश तहत भारतीय चुनाव आयोग ने गुरुवार को चुनावी बॉन्ड से जुड़ी जानकारी अपनी वेबसाइट पर अपलोड कर दी है। चुनाव की ओर से चुनावी बॉन्ड से जुड़ी जानकारी दो अलग-अलग पीडीएफ फाइलों के जरिए साझा की गई है। चुनाव आयोग की ओर से अपलोड की गई जानकारी के अनुसार चुनावी बॉन्ड मद में देश के कई करोबारी प्रतिष्ठानों ने बड़ा योगदान दिया है, पर इसमें अंबानी और अदाणी समूह का नाम शामिल नहीं है।चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार चुनावी बॉन्ड के बड़े दानकर्ताओं में फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज का नाम है। कंपनी ओर से करीब 1368 करोड़ रुपये का योगदान किया गया है। चुनावी बॉन्ड के तहत सबसे अधिक दान देने वाली कंपनी तमिलनाडु से, करती है यह काम भारतीय स्टेट बैंक की ओर से चुनाव आयोग को इलेक्टरोल बॉन्ड से संबधित जो आंकड़े मुहैया कराए गए हैं। उनमें एक कंपनी का नाम चौंकाने वाला है। इन आंकड़ों के अनुसार गेमिंग व्यवसाय का संचालन करने वाली कंपनी फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज ने साल 2019 से 2024 के बीच इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिए

सबसे अधिक चुनावी चंदा दिया है। कंपनी गेमिंग व्यवसाय का संचालन करती है। चुनाव आयोग की ओर से वेबसाइट पर अपलोड की गई जानकारी के अनुसार फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज ने चुनावी बॉन्ड के जरिए 1368 करोड़ रुपये की बड़ी राशि दान में दी है।

फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड 30 दिसंबर, 1991 को रजिस्टर्ड एक गैर सूचीबद्ध निजी कंपनी है। यह प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है और यह तमिलनाडु के कोयंबटूर में स्थित है। इसकी अधिकृत शेयर पूंजी 50.00 करोड़ रुपये है और कुल चुकता पूंजी (पेड अप कैपिटल) 10.07 करोड़ रुपये है।

31 मार्च, 2022 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के लिए फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज़ का परिचालन राजस्व 500 करोड़ से अधिक था। इस दौरान कंपनी के पछले वर्ष की तुलना में 1.92 प्रतिशत की कमी आई थी। हालांकि, कंपनी का बुक नेटवर्थ उस दौरान 3.38 फीसदी बढ़ा था। यह कंपनी लॉटरी वितरक के रूप में काम करती है। इसके फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के दो निदेशक मार्टिन सैंटियागो और मानिक्का गौडर शिवप्रकाश नामक दो लोग हैं।

इलेक्टोरल बॉन्ड में महादान करने वाली कंपनी का देश की अन्य 118 कंपनियों से भी नाता

पब्लिक डोमेन में उपलब्ध जानकारी के अनुसार कंपनी के एक निदेशक मार्टिन सेंटियागो देश की 114 अलग-अलग कंपनियों में निदेशक के तौर पर जुड़े हुए हैं। वे 30 दिसंबर 1991 से कंपनी के निदेशक हैं। उनका डीआईएन नंबर 00029458 है। वहीं दूसरी ओर, फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के दूसरे निदेशक मनिक्का गौडर शिवप्रकाश भी देश की करीब 22 अलग-अलग कंपनियों में निदेशक के तौर पर जुड़े हुए हैं। वे 22 अगस्त, 2022 से कंपनी के निदेशक हैं। उनका डीआईएन नंबर 08109321 है। कंपनी अपने दोनों निदेशकों के माध्यम से देश की 118 कंपनियों से

दुनियाभर में होगी वंदे भारत ट्रेन की गूंज...पहिये पर बड़ी तैयारी में रेलवे

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत अब रेलगाड़ियों में इस्तेमाल होने वाले पहियों (फोर्ज्ड व्हील) का निर्यात करेगा। यह जानकारी रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दी है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि भारतीय रेलवे अब अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को विकसित करने पर विचार करेगा। बता दें कि 2019 में वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें लॉन्च की गई है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि रेलगाड़ियों में इस्तेमाल होने वाले पहियों (फोर्ज्ड व्हील) का आयातक होने के 60 से 70 साल बाद भारत अब इसका निर्यात करने को तैयार है। अश्विनी वैष्णव अमेरिका की सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग क्वालकॉम के चेन्नई डिजाइन केंद्र का उद्घाटन करने आए थे।

उन्होंने कहा कि रेलवे के लिए फोर्ज्ड व्हील का उत्पादन करने के लिए एक प्लांट स्थापित करने को निर्माण गतिविधियां तमिलनाडु में शुरू हो गई हैं। रेलवे ने पहले चरण में 650 करोड़ रुपये की लागत से चेन्नई के पास गुम्मिडिपोंडी में मैन्युफैक्चरिंग इकाई स्थापित करने के लिए रामकृष्ण फोर्जिंग्स लिमिटेड के साथ एक ज्वांइट वेंचर शुरू किया है। बता दें कि रामकृष्ण फोर्जिंग्स लिमिटेड के शेयर की बात करें तो गुरुवार को 621.75 रुपये पर पहुंच गया है। यह शेयर 0.73 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुआ।

वंदे भारत के पहिये का होगा इस्तेमाल

अश्विनी वैष्णव ने कहा कि वंदे भारत ट्रेन बहुत सफल रही है। वंदे भारत में जो पहिये इस्तेमाल किए जाते हैं, वे विशेष गुणवत्ता वाले होते हैं। वे एक स्पेशल मैन्युफैक्चरिंग प्रक्रिया से गुजरते हैं। वैगन में हम जिन पहियों का उपयोग करते हैं, वे कास्टिंग प्रक्रिया से गुजरते हैं।

संक्षिप्त समाचार

आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए अफगानिस्तान टीम की घोषणा

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान के स्टार गेंदबाजी ऑलराउंडर राशिद खान अपनी पीठ की चोट से उबर गए हैं और आगामी आयरलैंड टी20आई श्रृंखला के लिए टीम में शामिल किए गए हैं। इससे पहले स्टार

अफगान क्रिकेटर भारत, श्रीलंका, यूएई के खिलाफ अफगानिस्तान की सीरीज और आयरलैंड के खिलाफ टेस्ट और वनडे में भी नहीं खेल पाए थे। चोट के कारण वह बिग बैश लीग और एसए20 जैसे प्रमुख टूर्नामेंटों में भी हिस्सा लेने में असफल रहे।

प्रेस से बात करते हुए राशिद के टीम साथी इब्राहिम जादरान ने कहा कि गेंदबाजी ऑलराउंडर पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ है लेकिन टीम के साथ यात्रा करेगा।

पीएसएल 2024

मुल्तान सुल्तांस ने पेशावर जाल्मी को हराया, लगातार चौथी बार फाइनल में पहुंची

कराची (एजेंसी)। मुल्तान सुल्तांस ने एकतरफा क्वालीफायर में पेशावर जाल्मी को सात विकेट से हराकर लगातार चौथे पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) फाइनल

में प्रवेश किया। मुल्तान सुल्तांस ने 2021 में पीएसएल खिताब जीता था लेकिन पिछले दो चरण में उसे फाइनल में लाहौर कलंदर्स से हार मिली थी। बाबर आजम की अगुआई वाली पेशावर जाल्मी को सोमवार को होने वाले फाइनल में जगह बनाने का एक और मौका मिलेगा जब वह इस्लामाबाद यूनाईटेड और क्वेटा ग्लैडिएटर्स के बीच शनिवार को होने वाले एलिमिनेटर की विजेता से भिड़ेगी।

यू.पी. में बनेगा चौथा इंटरनैशनल स्टेडियम

होंगे आई.पी.एल. मुकाबले, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दी मंजूरी

● बी.सी.सी.आई. उपाध्यक्ष ने किया शिलान्यास ● 32 एकड़ क्षेत्र में बनेगा खेल स्टेडियम ● 55 हजार लोग एक साथ देख सकेंगे मैच

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में चौथा इंटरनैशनल क्रिकेट स्टेडियम के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं। बी.सी.सी.आई. (भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड) के उपाध्यक्ष और राज्यसभा सांसद राजीव शुक्ला ने मोर्टी राजनगर एक्सटैंशन में उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यू.पी.सी.ए.) द्वारा विकसित की जाने वाली इस परियोजना के तहत स्टेडियम का शिलान्यास रख दिया। स्टेडियम 2 साल में बनकर तैयार हो जाएगा। इसमें आई.पी.एल. के मैच भी करवाए जाएंगे। उक्त परियोजना की रूपरेखा 9 साल पहले खींची गई थी लेकिन अब जाकर इसको अमली जामा पहनाया जा रहा है।

शिलान्यास समारोह में गाजियाबाद के सांसद और सड़क परिवहन और राजमार्ग और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह (सेवानिवृत्त) विशेष तौर पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि हर कोई लंबे समय से इसका इंतजार कर रहा था। गाजियाबाद दिल्ली के नजदीक है। अगर यह स्टेडियम बनेगा तो दिल्ली कैपिटल्स के मैच यहीं होंगे। फिलहाल सड़क की हालत खराब है, इसे बेहतर किया जाएगा। फिलहाल यू.पी. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से स्टेडियम निर्माण के लिए भूमि उपयोग जैसी सभी जरूरतों को मंजूरी दी जा चुकी है।

सिंह ने कहा कि पहले चरण का काम 400 करोड़ तो दूसरे चरण का काम 50 करोड़ रुपए में किया जाएगा। चारदीवारी निर्माण और अन्य के लिए निविदाएं जारी कर दी गई हैं। स्टेडियम का निर्माण अगले दो साल यानी 2026 तक पूरा होने की संभावना है। पिछले 9 साल में प्रोजेक्ट के बजट में करीब 25 फीसदी की बढ़ौतरी की गई है। प्रारंभ में परियोजना की लागत 350 करोड़ रुपए तय की गई थी, जिसे अब बढ़ाकर 450 करोड़ रुपए कर दिया गया है।

यह थी अड़चनें- जमीन खरीदने और रजिस्ट्री कराने के बाद बिजली विभाग ने यहां 400 के.वी.ए. क्षमता का टावर लगा दिया था। जिसे अब बिजली विभाग ही हटाएगा।

यू.पी. में इंटरनैशनल स्टैंडर्ड के स्टेडियम

ग्रीन पार्क स्टेडियम, कानपुर
क्षमता - 25 हजार दर्शक
1945 में बना स्टेडियम गंगा नदी के किनारे स्थित है। कई इंटरनैशनल मुकाबले हो चुके

इकाना क्रिकेट स्टेडियम, लखनऊ
क्षमता - 50 हजार दर्शक
2023 विश्व कप के 5 मुकाबले करवाए गए थे, आई.पी.एल. की एल.एस.जे. का घरेलू मैदान

इंटरनैशनल क्रिकेट स्टेडियम, वाराणसी
क्षमता - 30 हजार दर्शक
दिसंबर 2025 की आखिरी डैडलाइन, भगवान शिव के डमरू, बेल पत्र से बना है डिजाइन

इंटरनैशनल क्रिकेट स्टेडियम, गाजियाबाद
क्षमता -55 हजार दर्शक
दिल्ली कैपिटल्स के लिए बन सकता है घरेलू मैदान, रणजी ट्रॉफी के लिए अहम मैदान

सैफई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, इटावा
क्षमता - 43 हजार दर्शक
ध्यानचंद स्पोर्ट्स कॉलेज के परिसर में बने स्टेडियम में सबसे बड़ा स्कोरबोर्ड डिस्प्ले भी है। (मान्यता नहीं है)

सीएसके में वापसी से उत्साहित शार्दुल ने कहा- माही भाई से सीखने को बेकरार हूं

मुंबई (एजेंसी)। भारत के ऑलराउंडर शार्दुल ठाकुर हाल में मुंबई के साथ रणजी ट्राफी खिताब जीतने के बाद आगामी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के लिए महेंद्र सिंह धोनी की अगुआई में बेहतरीन प्रदर्शन की उम्मीद लगाए हैं क्योंकि पिछला चरण उनके लिए इतना अच्छा नहीं रहा था।

शार्दुल 2018 से 2021 तक सीएसके टीम का हिस्सा रहे थे जिसके बाद 2022 में वह दिल्ली कैपिटल्स और 2023 में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए खेले थे। इस सत्र में वह फिर सीएसके में वापसी करेंगे

जिसके लिए उन्हें चार करोड़ रुपए में खरीदा गया। शार्दुल ने कहा, 'ईमानदारी से कहूं तो पिछला आईपीएल मेरे लिए अच्छा नहीं रहा।' वह पिछले सत्र में 11 आईपीएल मैच में महज सात विकेट ही झटक सके थे और बल्ले से 14.13 के औसत से रन जुटा पाए थे। विदर्भ के खिलाफ गुरुवार को यहां मेजबान मुंबई के 169 रन की जीत से 42वां रणजी ट्राफी खिताब जीतने के बाद शार्दुल ने कहा, 'मैं माही भाई के नेतृत्व में खेलने को लेकर काफी उत्साहित हूं। जब आप उनके साथ खेलते हो तो आप मैच से कुछ न कुछ जरूर सीखते हो। वह स्टंप के पीछे खड़े होकर आपका मार्गदर्शन करते रहते हैं जिससे आपके प्रदर्शन में निखार आता है। ठाकुर ने कहा कि धोनी की सबसे अच्छी खासियत है कि वह एक खिलाड़ी के प्रदर्शन को निखरने देते हैं।

सात्विक-चिराग की जोड़ी ऑल इंग्लैंड चैम्पियनशिप से बाहर

बर्मिंघम (एजेंसी)। भारत के सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की दुनिया की नंबर एक जोड़ी गुरुवार रात यहां आल इंग्लैंड बैडमिंटन चैम्पियनशिप के पुरुष युगल प्री क्वार्टरफाइनल से बाहर हो गई। भारतीय जोड़ी को प्री क्वार्टरफाइनल में इंडोनेशिया के मोहम्मद शोहिबुल फिकरी और बागास मौलाना की जोड़ी से 16-21 15-21 से हार का सामना करना पड़ा।

इंडोनेशियाई जोड़ी यहां 2022 में चैम्पियन रही थी। शीर्ष वरीय भारतीय जोड़ी ने पिछले हफ्ते फ्रेंच ओपन खिताब जीता था लेकिन यहां तीसरी वरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वियों के दबाव से नहीं निपट सकी और एक घंटे से ज्यादा समय तक चले मुकाबले में हारकर बाहर हो गयी। तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा की जोड़ी भी महिला युगल के राउंड 16 से बाहर हो गई। उन्हें चीन की झांग शु जियान और जेंग यु से 21-11 11-21 11-21 से पराजय झेलनी पड़ी। भारत के लक्ष्य सेन का सामना पुरुष एकल क्वार्टरफाइनल में मलेशिया के ली जि जिया से हुआ।लक्ष्य ने दुनिया के तीसरे नंबर के खिलाड़ी एंडर्स एंटोनसेन पर 24-22 11-21 21-14 की जीत से क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। लेकिन दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू का अभियान दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी दक्षिण कोरिया की एन से यंग से 19-21 11-21 से हारकर समाप्त हो गया।

मुधमक्खियों के हमले के कारण

अल्काराज-ज्वेरेव का मैच सस्पेंड, कोर्ट से भागते नजर आए टेनिस खिलाड़ी

इंडियन वेल्स, एजेंसी। अल्काराज को चेयर अंपायर के पास जाते देखा गया। रास्ते में ही उन पर मधुमक्खियों ने हमला कर दिया और वह भागकर छुप गए। इंडियन वेल्स ओपन के डिफेंडिंग चैंपियन स्पेन के कार्लोस अल्काराज और जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव के बीच क्वार्टर फाइनल मुकाबला मधुमक्खियों के हमले के बाद रद्द कर दिया गया। इस घटना का वीडियो भी वायरल हो गया है। अल्काराज को कोर्ट से बाहर भागते हुए देखा जा सकता है। इससे पहले 18 मिनट का मुकाबला हो चुका था और स्कोर 1-1 से बराबर था। तभी अल्काराज को चेयर अंपायर के पास जाते देखा गया। रास्ते में ही उन पर मधुमक्खियों ने हमला कर दिया और वह भागकर छुप गए। वहीं, महिला एकल में एमा नवारावो ने दूसरी वरीयता की आर्यना सबालेंका को बीएनपी परिबास ओपन के चौथे दौर में 6-3, 3-6, 6-2 से हरा दिया। यह युवा अमेरिकी खिलाड़ी के कॅरिअर की अब तक की सबसे बड़ी जीत है। वर्जीनिया की 22 साल की खिलाड़ी इस साल चौथी बार क्वार्टर फाइनल में पहुंची हैं।

कोहली आईपीएल 2024 में 6 रन रन बनाते ही रच देंगे इतिहास

नईदिल्ली, एजेंसी। आरसीबी के स्टार बल्लेबाज व पूर्व कप्तान विराट कोहली के पास आईपीएल 2024 में एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम करने का बड़ा मौका है। आईपीएल के 17वें सीजन की शुरुआत 22 मार्च से होगी और पहले ही मुकाबले में आरसीबी का सामना डिफेंडिंग चैंपियन सीएसके के साथ होगा।

इस मैच में विराट कोहली 6 रन बनाते ही इतिहास रच देंगे। कोहली इस लीग के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जो पिछले 16 सीजन से सिर्फ आरसीबी के लिए खेल रहे हैं। उनके नाम पर इस लीग में सबसे ज्यादा रन बनाने का साथ ही सबसे ज्यादा शतक लगाने का रिकॉर्ड भी दर्ज है।

यही नहीं उनके नाम पर एक सीजन में सबसे ज्यादा रन बनाने का कीर्तिमान भी दर्ज है और साल 2016 में 973 रन बनाकर उन्होंने यह उपलब्धि अपने नाम दर्ज की ली थी, लेकिन अब टी20 प्रारूप में वह भारत की तरफ से 12,000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बनने के बिल्कुल पास हैं।

कोहली को 12,000 रन बनाने के लिए 6 रन की जरूरत

आईपीएल 2024 में 6 रन बनाते ही विराट कोहली टी20 क्रिकेट में अपने 12,000 रन पूरे कर लेंगे और वह क्रिकेट के इस प्रारूप में रन के इस आंकड़े को छूने वाले पहले खिलाड़ी बन जाएंगे।

विराट कोहली ने टी20 में अब तक कुल 11994 रन बनाए हैं। विराट कोहली ने टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 4037 रन बनाए हैं तो वहीं आईपीएल में 7263 रन उनके नाम पर दर्ज है।

भारत की तरफ से इस वक्त विराट कोहली टी20 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हों तो वहीं रोहित शर्मा उनके बाद यानी दूसरे स्थान पर हैं।

गेल, मलिक, पोलार्ड और वॉर्नर की लिस्ट में शामिल होंगे कोहली

विराट कोहली टी20 क्रिकेट में 6 रन बनाते ही 12,000 रन पूरे करने वाले पहले भारतीय जरूर बन जाएंगे, लेकिन ओवरऑल वह टी20 में 12,000 रन बनाने वाले दुनिया के छठे बल्लेबाज बन जाएंगे।

टी20 में कोहली के पहले 12,000 या उससे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज क्रिस गेल, शोएब मलिक, किरोन पोलार्ड, एलेक्स हेल्स और डेविड वॉर्नर हैं। अब विराट कोहली इन खिलाड़ियों की इस खास लिस्ट में शामिल हो जाएंगे।

टी20 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले

टॉप 6 बल्लेबाज

क्रिस गेल- 14,562 रन
शोएब मलिक- 13,360 रन
किरोन पोलार्ड- 12,900 रन
एलेक्स हेल्स- 12,225 रन
डेविड वॉर्नर- 12,065 रन
विराट कोहली- 11,1194 रन

टी20 में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा रन बनाने वाले टॉप 5 बल्लेबाज

कोहली- 11,1194 रन
रोहित शर्मा- 11,156 रन
शिखर धवन- 9,465 रन
सुरेश रैना- 8654 रन
केएल राहुल- 7066 रन

आईपीएल में बतौर कप्तान सबसे ज्यादा मैच जीतने का रिकॉर्ड धोनी के नाम

नईदिल्ली, एजेंसी। आईपीएल में अगर सबसे सफल कप्तानों की बात अपनी टीम को चैंपियन बनाने के मामले में की जाए तो इसमें एमएस धोनी और रोहित शर्मा बराबरी पर हैं।

दोनों की कप्तानी में उनकी-उनकी टीमें 5-5 बार चैंपियन बन चुकी है, लेकिन आईपीएल 2024 में रोहित शर्मा अब मैदान पर कप्तान के रूप में नजर नहीं आएंगे क्योंकि उनसे मुंबई इंडियंस की कप्तानी ले ली गई थी और उनकी जगह टीम का कप्तान हार्दिक पांड्या को बना दिया गया। वहीं इस लीग में अगर बात बतौर कप्तान सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले खिलाड़ी की बात की जाए तो इस मामले में एमएस धोनी पहले नंबर पर हैं जबकि रोहित शर्मा दूसरे नंबर पर हैं तो वहीं आरसीबी के पूर्व कप्तान विराट कोहली इस लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं।

आईपीएल में साल 2008 से लेकर 2023 तक अगर बात बतौर कप्तान सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले खिलाड़ी की हो तो इसमें अव्वल नंबर पर सीएसके टीम के मौजूदा कप्तान एमएस धोनी मौजूद हैं।

एमएस धोनी ने आईपीएल में अब तक कुल 226 मैचो में कप्तानी की है जिसमें उन्हें 133 मैचों में जीत मिली है और वह इस लीग में 100 या उससे ज्यादा मैच जीतने वाले इकलौते कप्तान हैं। इस लीग में कप्तान के रूप में सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले खिलाड़ी की लिस्ट में दूसरे नंबर पर मुंबई इंडियंस के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा हैं। रोहित शर्मा ने इस लीग में कुल 158 मैचों में कप्तानी की थी जिसमें से उन्हें 87 मैचों में जीत मिली थी।

आईपीएल में बतौर कप्तान सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले प्लेयर्स की लिस्ट में तीसरे नंबर पर गौतम गंभीर हैं। गंभीर ने इस लीग में कई टीमों के लिए कप्तानी की थी और कप्तान के रूप में कुल 129 मैच खेले थे जिसमें से उन्हें 71 मुकाबलों में जीत मिली थी।

इस लिस्ट में चौथे स्थान पर विराट कोहली हैं जिन्होंने 143 मैचों में कप्तानी करते हुए 66 मैचों में जीत दर्ज की थी। वहीं इस लिस्ट में पांचवें स्थान पर डेविड वॉर्नर हैं जिन्होंने आईपीएल में 83 मैचों में कप्तानी की और 40 मैचों में जीत दर्ज की थी।

आईपीएल में सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले टॉप 5 कप्तान

एमएस धोनी- 133 जीत (226 मैच)
रोहित शर्मा- 87 जीत (158 मैच)
गौतम गंभीर- 71 जीत (129 मैच)
विराट कोहली- 66 जीत (143 मैच)
डेविड वॉर्नर- 40 मैच (83 मैच)

संक्षिप्त समाचार

यूपी के प्रेमी ने की थी पुलिसकर्मी की पत्नी की हत्या

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के विधानसभा थाने में दर्ज पुलिसकर्मी की पत्नी की हत्या के मामले की गुत्थी को पुलिस सुलझाने में सफल हो गई है। पुलिस ने इस मामले में जांच करते हुए उत्तर प्रदेश से एक आरोपी को गिरफ्तार कर रायपुर ले आई है। सोशल मीडिया चैट से पता चला है कि आरोपी मृतक महिला का आशिक है। बता दे कि बीते दिनों रायपुर में महिला की अंधे कत्ल के मामले में पुलिस लगातार जांच में जुटी हुई थी। महिला के सोशल मीडिया अकाउंट को लगातार पुलिस के द्वारा चेक किया जा रहा था। जांच में यह पता चला कि उत्तर प्रदेश में रहने वाले जय सिंह नाम के व्यक्ति के साथ महिला की बातचीत होती थी। पुलिस ने जांच में पाया कि जय सिंह ने ही महिला की हत्या की है। बताया जा रहा है कि महिला और जय सिंह के बीच प्रेम संबंध गहरे हो गए थे। जिसके बाद मृतक महिला आरोपी को शादी करने का दबाव बना रही थी, जिसके चलते उसने हत्या कर दी है। आपको बतादें कि महिला पहले से शादीशुदा थी। उसका विवाह शिवपाल सिंह के साथ हुआ था। शिवपाल सिंह जोकि सुकमा में पुलिस विभाग में पदस्थ है। दोनों पति-पत्नी के बीच आपसी अनबन होने के कारण दोनों साथ नहीं रहते थे। पति शिवपाल सिंह सुकमा में रहता था, तो पत्नी रायपुर में रहा करती थी।

गेहूं की फसल के बीच 104 किलो से ज्यादा अफीम के पौधे किए जब्त

ऊधमसिंह नगर, एजेंसी। उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर में पुलिस ने गेहूं की फसल के बीच से 104 किलो से अधिक के अफीम के हरे-भरे पौधे जब्त किए हैं। साथ ही एक तस्कर को भी हिरासत में लिया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। पुलिस के मुताबिक, मुखबिर की सूचना पर पुलिस जनपद उधम सिहं नगर गंगापुर थाना केलाखेडा में दलजीत सिंह (उम्र 60 वर्ष) के घर के पास वाले खेत में पहुंची तो पाया कि गेहूं के पौधों के बीच अफीम के हरे पौधे और डोडा फल उगाए गए थे। पुलिस ने लगभग 104.205 किलोग्राम अफीम और डोडा फल जब्त कर दलजीत के ख्लिाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया।

पंजाब में गैंगस्टर के दो सहयोगी गिरफ्तार

चंडीगढ़, एजेंसी। पंजाब पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने गुरप्रीत लेहंबर और जस्सा नूरवाला गैंग के दो सहयोगियों को गिरफ्तार करने का दावा किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान जगदीप सिंह उर्फ रिंकू और बलविंदर सिंह उर्फ बब्बू के रूप में हुई है। यह गिरोह कई जघन्य अपराधों में संलिप्त रहा है, जिसमें हत्या, हत्या की कोशिश, अपहरण और वसूली शामिल है। पुलिस के मुताबिक, यह गिरोह लुधियाना, जगराओ, मोगा, बठिंडा और संगरूर जिलों में सक्रिय रहा है। बता दें कि आरोपी रिंकू के खिलाफ मोगा में हत्या की कोशिश के मामले में केस दर्ज कराया जा चुका है।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस नेता की ट्रैक्टर से कुचलकर हत्या

बलौदा बाजार, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बलौदा बाजार में गुरुवार की सुबह एक कांग्रेसी नेता की हत्या कर दी गई है। कांग्रेस नेता को बार-बार ट्रैक्टर से कुचलकर मौत के घाट उतारा गया है। कांग्रेस नेता दयाराम जायसवाल सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकले हुए थे। उस दौरान दयाराम को अकेला पाकर पहले ट्रैक्टर से ठोकर मारी गई फिर बार-बार टायर से कुचला गया है। क्या पूरा मामला कसडोल विधानसभा क्षेत्र के ग्राम असनींद का बताया जा रहा है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार दयाराम जायसवाल की लाश को सड़क किनारे देखा गया था। बताया जा रहा है कि घटनास्थल पर ही कांग्रेस नेता की मौत हो चुकी थी। वही जब पुलिस को इस पूरे मामले की जानकारी मिली तो पुलिस ने पूछताछ करते हुए आरोपी ट्रैक्टर चालक को गिरफ्तार कर लिया है। शुरुआती पूछताछ में यह पता चला है कि यह पूरी हत्या की वजह जमीन और खेती के विवाद को बताई जा रही है। पुलिस ने मामले की जानकारी और आरोपी से पूछताछ के बाद बताया कि आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।

पार्किंग से उठी चिंगारी ने तबाह किया परिवार, शास्त्री नगर की चार मंजिला इमारत में लगी भीषण आग; 4 की मौत

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली के शास्त्री नगर के सरोजनी पार्क स्थित चार मंजिला इमारत में गुरुवार सुबह आग लगने से चार लोगों की मौत हो गई। हादसे में पूरा परिवार तबाह हो गया। शाहदरा जिला पुलिस उपायुक्त सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि गीता कॉलोनी थाने में तड़के करीब साढ़े पांच बजे एक घर में आग की पीसीआर कॉल मिली थी। कॉलर ने बताया कि शास्त्री नगर के सरोजनी पार्क इलाके में आग लगी है। सूचना पर मौके पर अग्निशमन की चार गाड़ियां, एंबुलेंस, स्थानीय पुलिस और तीन पीसीआर वैन पहुंची। चार मंजिला रिहायशी इमारत के भूतल पर पार्किंग और एक अन्य फ्लैट है। आग पार्किंग में शॉर्ट सर्किट के चलते लगी थी और धीरे-धीरे पूरी इमारत को अपनी चपेट में ले लिया।

आग के बाद इमारत में मच गई अफरातफरी

पूरी इमारत में धुंआ भर गया, जिसके चलते लोगों में अफरा-तफरी मच गई। इमारत के अन्य तलों पर रहने वाले लोग छत की ओर भागे और अपनी जान बचाई। इसके चलते उनको मामूली चोटें आई और इलाज के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। वहीं, मनोज का परिवार भूतल पर यानि सबसे नीचे था और आग भी वहीं से शुरू हुई थी। इसके चलते उन्हें संभलने का मौका नहीं मिल पाया और धुएं और आग की चपेट मे आने के चलते पहले परिवार के लोगों का दम घुटने के चलते उनकी मौत हो गई। इस दौरान आग ने भी काफी विकराल रूप ले लिया।

पहले भी कई घटनाएं हो चुकीं

वजीराबाद पुलिस ट्रेनिंग स्कूल स्थित मालखाने की पार्किंग में 29 जनवरी को भयंकर आग लग गई। आग की चपेट में आने के चलते यहां खड़ी 250 से ज्यादा कारें जल गईं थी।

फंस गए थे 35 लोग

पूर्वी दिल्ली के गौतमपुरी में बीते साल 27 दिसंबर को चार मंजिला मकान की पार्किंग में आग लगी थी। मकान में मौजूद 35 लोग यहां फंस गए। इलाके की गली संकरी थी। लकड़ी की सीढ़ी के जरिये पड़ोसियों ने घर में लोगों की जान बचाई थी

मेट्रो स्टेशन के पास घटना

दक्षिणी दिल्ली के जामिया नगर मेट्रो स्टेशन के पास 8 जून 2022 को एक इलेक्ट्रिक व्हीकल पार्किंग में आग लगने से करीब 100 गाड़ियां जल गई थीं। हालांकि, अग्निशमन विभाग ने आग पर समय रहते काबू पा लिया था और कोई मानवीय क्षति नहीं हुई थी

ऊपरी तलों तक नहीं पहुंच पाई आग: सुभाष नगर स्थित दिल्ली नगर निगम की पार्किंग में 26 दिसंबर 2022 को भीषण आग लग गई थी। इससे पार्किंग के बेसमेंट में खड़ी लगभग 25 कारें जल गई थीं। हालांकि, आग ऊपर के तलों तक नहीं पहुंच पाई थीं

कर्नाटक भाजपा में बगावत! येदियुरप्पा के बेटे के खिलाफ लड़ेंगे वरिष्ठ नेता ईश्वरप्पा

बेंगलुरु, एजेंसी। लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी होने के कर्टनाक में विरोध के स्वर फूटने लगे हैं। हिंदूवादी मुद्दों के लिए मुखर रहने वाले पूर्व उपमुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता केएस ईश्वरप्पा ने बड़ा ऐलान कर दिया है। केएस ईश्वरप्पा के बेटे कांतेश को भाजपा ने टिकट नहीं दिया है। ऐसे में ईश्वरप्पा ने पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा के खिलाफ खुद लोकसभा चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। उन्होंने कहा, बीवाई राघवेंद्र के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए मुझपर बहुत दबाव है। भारतीय जनता पार्टी मेरे लिए मां की तरह है लेकिन मैं समर्थकों की मांग को भी नजरअंदाज नहीं कर सकता। भाजपा को भी गला घोंटा जा रहा है और हमें किसी तरह से उसे बचाना है।

बता दें कि ईश्वरप्पा को उम्मीद थी कि उनके बेटे कांतेश को अगर विधानसभा चुनाव में टिकट नहीं दिया गया है तो लोकसभा में जरूर दिया जाएगा। हालांकि लिस्ट में 20 उम्मीदवारों में उनका नाम नहीं शामिल किया गया है। ईश्वरप्पा ने कहा कि बीएस येदियुरप्पा ने खुद वादा किया था कि कांतेश को पार्टी का टिकट मिलेगा। उन्होंने कांतेश के लिए प्रचार करने का भी वादा किया था। हालांकि हावेरी लोकसभा सीट से पूर्व सीएम बासवराज बोम्मई को उतार दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि 15 मार्च को वह अपने समर्थकों के साथ बैठक करेंगे और उसके बाद ही फाइनल फैसला लिया जाएगा। वह अपने बेटे कांतेश को भी निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर उतारने का प्लान बना रहे हैं। केएस ईश्वरप्पा में कर्नाटक में भाजपा को बनाने वालों में से एक हैं। उन्हें बीएस येदियुरप्पा के बराबर ही माना जाता है।

राजस्थान में पेट्रोल-डीजल के रेट में डबल कटौती, 7 रुपए तक हुआ सस्ता

जयपुर, एजेंसी।
होली से पहले राजस्थान के लोगों को महंगाई के मोर्चे पर बड़ी खुशखबरी मिली है। लंबे इंतजार के बाद पेट्रोल-डीजल की कीमत में कमी की गई है। एक ही दिन में राज्य और केंद्र सरकार की ओर से की गई कटौती की वजह से राजस्थान में कीमतें सबसे ज्यादा कम हुई हैं। गंगानगर में तो पेट्रोल 7.13 रुपए लीटर सस्ता हो गया है। केंद्र सरकार ने जहां पेट्रोल और डीजल की कीमत में 2 रुपए प्रति लीटर की कमी की है तो भजनलाल सरकार ने 2 पर्सेंट वैट घटा दिया है। राजस्थान में डीजल पर वैट पर 19.30 फीसदी से घटकर 17.30 फीसदी रह गया है तो पेट्रोल पर अब 29.04 फीसदी वैट लगेगा जो पहले 31.04 फीसदी था। वैट के दरों में कटौती की वजह से अलग-अलग शहरों में पेट्रोल 1.40 रुपए 5.30 रुपए प्रति लीटर तक सस्ता होगा तो डीजल 1.34 रुपए से 4.85 रुपए सस्ता हुआ है। नई दरें शुक्रवार सुबह 6 बजे से प्रभावी हो गई हैं। गौरतलब है कि विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान की जनता से वादा किया था कि यदि राज्य में भाजपा की सरकार बनी तो पेट्रोल-डीजल की कीमतों की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने चुनावी रैलियों में भाजपा शासित पड़ोसी राज्यों से राजस्थान में पेट्रोल-डीजल की कीमतों की तुलना की थी। लोकसभा चुनाव से पहले राजस्थान और केंद्र सरकार ने कटौती करके राज्य के करोड़ों उपभोक्ताओं को बड़ी राहत दी है। डबल कटौती के बाद जयपुर में पेट्रोल 3.60 रुपए लीटर हो गया है तो डीजल पर प्रति लीटर आपको 3.40 रुपए कम खर्च करने पड़ेंगे। जयपुर में गुरुवार को पेट्रोल की कीमत 108.48 रुपए प्रति लीटर थी जो अब घटकर 104.88 रुपए हो गई है। वहीं, डीजल की कीमत 93.72 रुपए प्रति लीटर से घटकर 90.32 रुपए लीटर रह गई है।

पालतू कुत्तों के स्वभाव का पता लगाएं, मांगी स्टेटस रिपोर्ट; दिल्ली हाईकोर्ट ने पुलिस को क्यों दिया आदेश

नईदिल्ली, एजेंसी।
उच्च न्यायालय ने गुरुवार को दिल्ली पुलिस को तुगलक लेन क्षेत्र के धोबी घाट क्षेत्र में पालतू जानवरों की प्रकृति की जांच करने का निर्देश दिया। यहां पिछले महीने डेढ़ साल की एक बच्ची को कथित तौर पर कुत्तों के एक झुंड ने मार डाला था।

न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने पुलिस को विवरण देते हुए 19 मार्च से पहले एक स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने को कहा है। पीठ शिशु के पिता की याचिका पर सुनवाई कर रही है, जिसमें बच्चे की मौत पर 50 लाख रुपये का मुआवजा मांगा गया है। पीठ ने कहा कि पुलिस क्षेत्र में रखे गए पालतू जानवरों की प्रकृति के संबंध में जांच करे। यह भी कहा गया कि क्षेत्र में एक पिटबुल भी है, उसकी भी जांच करें। स्थिति रिपोर्ट मंगलवार तक दाखिल की जाए। पीठ ने पुलिस से यह भी पता लगाने को कहा कि जहां घटना हुई,

वहां आसपास के घरों में कोई पालतू कुत्ता था या नहीं। पीठ ने कहा कि वह सिर्फ पास के घर में रखे गए एक खूंखार कुत्ते की आशंका को खारिज करने के लिए जानकारी मांग रहे हैं, जो बच्चे पर हमला कर सकता था। इस मामले में पक्षकार बनने की मांग कर रहे एक एनजीओ का प्रतिनिधित्व करने वाले वकील में से एक ने दावा किया कि इलाके में एक पिटबुल है। पीठ ने कहा कि अगर किसी बच्चे पर हमला हुआ तो सवाल यह है कि दिन के समय भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। कोर्ट ने नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी), शहर सरकार और पुलिस को नोटिस जारी किया था। इन लोगों से उठाए गए कदमों के संबंध में स्थिति रिपोर्ट मांगी थी कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। दावा है कि बच्ची घर के बाहर बैठी थी। इसी दौरान चार से पांच कुत्तों ने उस पर हमला किया और उसे कई मीटर तक घसीटा। इसके बाद नोचकर मार डाला था। दिल्ली के उप राज्यपाल और मेयर से आवारा कुत्तों पर लगाम लगाने की मांग की गई है। कांग्रेस नेता हरी किशन जिंदल ने बताया कि सड़कों और गलियों में आवारा घूम रहे कुत्तों के काटे जाने से जान का खतरा बना रहता है। इनके आतंक से लोग गली-मोहल्ले में निकलने से भी घबराने लगे हैं। ऐसे में आवारा कुत्तों के लिए बाड़ा बनाया जाना चाहिए, ताकि इनके खतरे से लोगों को बचाया जा सके।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को दबाना चाहते हैं इस्लामी चरमपंथी; यह लोकतंत्र के लिए खतरा- ब्रिटेन सरकार

लंदन, एजेंसी।
पिछले साल सात अक्तूबर को इस्राइल पर आतंकी संगठन हमास के हमलों के बाद से बढ़ते खतरों और इस्लामी चरमपंथ के खिलाफ ब्रिटेन सरकार ने नई परिभाषा जारी की। ब्रिटेन में उग्रवाद को अब हिंसा, घृणा या असहिष्णुता पर आधारित विचारधारा के रूप में परिभाषित किया गया है।

यूके लेवलिंग अप और कम्युनिटी सेक्रेटरी माइकल गोव ने कहा कि ब्रिटेन को एक बहु-राष्ट्रीय, बहु-जातीय, बहु-विश्वास लोकतंत्र के रूप में सुरक्षित रखने के लिए अपडेट करने की जरूरत थी, जो इसकी विविधता को मजबूत करेगा। उन्होंने विस्तारित परिभाषा के तहत चरमपंथ विचार रखने की आशंका वाले लोगों के उदाहरण के रूप में तीन इस्लामिक समूहों और दो अन्य समूहों का

भी नाम लिया। उन्होंने कहा कि सात अक्तूबर के हमलों के बाद चरमपंथी विचारधाराओं की वृद्धि हुई। जिसके चलते हमारा लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा हो गया है। उन्होंने कहा कि इस तरह के विचारधारा वाले लोग लोगों को कट्टरपंथी बनाना चाहते हैं। लोगों को उनके पूर्ण अधिकारों से वंचित करना चाहते हैं। और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को दबाना चाहते हैं। गौरतलब है कि 2023 में इस्राइल में हमास के आतंकवादी हमलों के बाद से सरकार ने कहा कि चरमपंथी के जोखिमों के बारे में चिंताएं उठाई गई हैं। कम्युनिटी सिक्योरिटी ट्रस्ट ने 2023 में हुए हमलों के बाद से ब्रिटेन में 4,103 यहूदी विरोधी घटनाएं दर्ज कीं, जो 2022 की तुलना में 147 प्रतिशत की बढ़ोतरी है।

ऑस्ट्रिया ने रूस के दो राजनयिकों को निकाला

विएना, एजेंसी। ऑस्ट्रिया ने बुधवार को कहा कि उसने राजधानी विएना में स्थित रूसी दूतावास के दो राजनयिकों को देश छोड़ने का आदेश दिया है। एक ऑस्ट्रियाई अधिकारी ने बताया कि दोनों राजनयिकों को जासूसी गतिविधियों में शामिल होने के चलते निष्कासित किया गया है। विदेश मंत्रालय ने एक संक्षिप्त बयान जारी कर बताया कि रूस के दो राजनयिक पद पर रहते हुए असंगत कृत्य में शामिल थे, इसलिए उन्हें निष्कासित किया गया है।

उन्होंने राजनयिकों या उनके कथित कार्यों के बारे में कोई और विवरण नहीं दिया। राजनयिकों ऑस्ट्रिया छोड़ने के लिए 19 मार्च तक का समय दिया गया है। मामले की जानकारी रखने वाले एक ऑस्ट्रियाई अधिकारी ने कहा कि राजनयिकों को जासूसी के आरोप में देश से निष्कासित किया गया है। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर इस बारे में जानकारी साझा की है।

ऑस्ट्रिया में रूसी दूतावास ने अपने टेलीग्राम चैनल पर एक बयान जारी कर कहा कि वह रूसी दूतावास के दो कर्मचारियों को देश से निकालने के ऑस्ट्रिया विदेश मंत्रालय के फैसले से नाराज है। रूसी दूतावास की ओर से जारी किये गये बयान में कहा गया है ''हमारे राजनयिकों को निकालने के बारे में किसी भी प्रकार का कोई सबूत पेश नहीं किया गया। राजनयिकों द्वारा वियना कन्वेंशन का उल्लंघन करने के बारे में भी सबूत नहीं दिया गया है। यह ऑस्ट्रियाई अधिकारियों का पूरी तरह से राजनीतिक निर्णय है।

अमेरिका में बढ़ रहा है हिंदू फोबिया, इससे लड़ने की जरूरत- अमेरिकी सांसद

वाशिंगटन, एजेंसी। भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद श्री थानेदार ने कहा है कि हाल ही में अमेरिका में हिंदू फोबिया में वृद्धि देखी गई है, जिससे लड़ने की जरूरत है क्योंकि इस देश में नफरत के लिए कोई जगह नहीं है। थानेदार ने हिंदू समुदाय के खिलाफ बढ़ते घृणा अपराध से लड़ने की मांग करने वाले हिंदू नेताओं और संगठनों के एक समूह में शामिल होने के अवसर पर यह बात कही। हिंदूएक्शन नामक संगठन द्वारा आयोजित एक बैठक के दौरान विभिन्न भारतीय अमेरिकी समूहों के प्रतिनिधियों ने बुधवार को अमेरिका की राजधानी में मुलाकात की। थानेदार ने कहा, '' हम अमेरिका में बहुत अधिक हिंदू फोबिया (हिंदुओं को लेकर एक प्रकार की असुरक्षा की भावना) देखते हैं। हमने कैलिफोर्निया एसबी403 (जातिगत भेदभाव पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक) देखा है, और यह तो बस शुरुआत है। हमारे मंदिरों पर हमले और दुनिया भर में हिंदुओं पर हमले। यही एक कारण है कि मैंने हिंदू कॉकस बनाने का फैसला किया है। डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य थानेदार ने कहा, '' अमेरिकी कांग्रेस में पहली बार, हमारे पास एक हिंदू कॉकस है। हम यह सुनिश्चित करने के लिए कई पहल कर रहे हैं कि लोगों को अपने धर्म का पालन करने की धार्मिक स्वतंत्रता हो जिस तरह से वे चाहते हैं।

अगर यूरोप शांति चाहता है तो उसे युद्ध के लिए तैयार रहना होगा : फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने कहा कि अगर यूरोप शांति चाहता है तो उसे युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए, राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के रूस को एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी कहा जो दो साल पुराने संघर्ष में कीव के सैनिकों को हराने के बाद भी यूक्रेन में नहीं रुकेगा। मैक्रॉन ने फरवरी में यह कहकर विवाद पैदा कर दिया था कि वह भविष्य में यूक्रेन में जमीनी सैनिकों की तैनाती से इनकार नहीं कर सकते, कई नेताओं ने खुद को इससे दूर कर लिया, जबकि अन्य, विशेष रूप से पूर्वी यूरोप ने समर्थन व्यक्त किया। अगर रूस यह युद्ध जीतता है, तो यूरोप की विश्वसनीयता शून्य हो जाएगी, मैक्रॉन ने एक टेलीविजन इंटरन्यू में कहा, जो ज्यादातर घरेलू दर्शकों के लिए था, मैक्रॉन ने कहा कि वह विपक्षी नेताओं से गहराई से असहमत हैं। उन्होंने कहा, आज, यूक्रेन को समर्थन देने के खिलाफ वोट देने या अनुपस्थित रहने का निर्णय, यह शांति नहीं चुन रहा है, यह हार चुन रहा है। यह अलग है। मैक्रॉन की मुख्य विपक्षी पार्टी, मरीन ले पेन की धुर दक्षिणपंथी पार्टी, फ्रांस द्वारा यूक्रेन के साथ हस्ताक्षरित सुरक्षा समझौते के बारे में सप्ताह की शुरुआत में संसद में मतदान में अनुपस्थित रही।

पनामा पेपर्स से जुड़े मामले में नवाज के बेटों को राहत; आरक्षित सीटों को लेकर कोर्ट से इमरान को झटका

इस्लामाबाद, एजेंसी।
पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के परिवार को बड़ी राहत देते हुए एक भ्रष्टाचार निरोधक अदालत ने गुरुवार को पनामा पेपर्स घोटाले से जुड़े मामलों में नवाज शरीफ के बेटों की गिरफ्तारी वारंट को रद्द कर दिया है। गौरतलब है कि 2016 के पनामा पेपर्स घोटाले में नाम आने के बाद हसन नवाज और हुसैन नवाज ने 2018 में पाकिस्तान छोड़ दिया था।

बता दें कि पनामा पेपर्स से जुड़े भ्रष्टाचार के तीन मामलों में आरोप लगाए गए थे लेकिन वे कभी भी अदालत के सामने पेश नहीं हुए, जिसने उन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया। इस्लामाबाद की भ्रष्टाचार निरोधक अदालत द्वारा सात मार्च को दोनों के खिलाफ स्थायी गिरफ्तारी वारंट को गुरुवार तक निलंबित करने के बाद दोनों भाई पाकिस्तान लौट आए।

गुरुवार को हसन और हुसैन इस्लामाबाद स्थित अदालत में पेश हुए, जिसने दलीलें सुनने के बाद भ्रष्टाचार मामलों में जारी स्थायी गिरफ्तारी वारंट को रद्द कर दिया। अदालत ने 50,000 रुपये के मुचलके पर उनकी जमानत भी मंजूरी दी। पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के दोनों बेटों ने भी अगली सुनवाई पर अदालत में उपस्थित होने से छूट के लिए आवेदन किया। कोर्ट ने सुनवाई शुक्रवार तक के लिए स्थगित कर दी।

पिछले साल अक्तूबर में नवाज शरीफ ब्रिटेन में चार साल के आत्म निर्वासन के बाद पाकिस्तान लौट आए और एक कार्यवाही के बाद उन्हें सभी मामलों से बरी कर दिया गया था। पीएमएल-एन और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी द्वारा गठबंधन सरकार पर सहमति के बाद नवाज शरीफ के छोटे भाई शहबाज शरीफ को दूसरी बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बनाया गया था। जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी को बड़ा झटका देते हुए पाकिस्तान की शीर्ष अदालत ने गुरुवार को सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल(एसआईसी) द्वारा दायर एक याचिका को खारिज कर दिया। पाकिस्तान चुनाव आयोग

(ईसीपी) ने चार मार्च को सीट कोटा के लिए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ समर्थित सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल की उम्मीदों पर पानी फेर दिया, साथ ही इसे नियमों का उल्लंघन बताया। बुधवार को पाकिस्तान के अटॉर्नी जनरल मंसूर उस्मान अवान और पाकिस्तान पीपल्स पार्टी और ईसीपी के वकीलों ने अपनी दलीलें पूरी कर ली थीं। एजीपी अवान ने कहा था कि एक राजनीतिक दल को आरक्षित सीटें तभी मिल सकती हैं, जब वह सामान्य सीट जीतेगी। पाकिस्तान चुनाव आयोग के वकील सिकंदर बशीर ने उनके तर्कों का समर्थन करते हुए कहा कि एसआईसी एक राजनीतिक दल है, लेकिन संसदीय नहीं।

जापान के टोक्यो में भूकंप के तेज झटके, रिक्टर पैमाने पर तीव्रता 6 मापी गई; कोई नुकसान नहीं

टोक्यो, एजेंसी।
जापान के टोक्यो में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक, रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 6 मापी गई। इसका केंद्र जमीन से 68 किलोमीटर गहराई में था। फिलहाल किसी भी तरह के नुकसान की खबर नहीं है। लगातार घूमती रहती हैं। जहां ये प्लेट्स ज्यादा टकराती हैं, वह जोन फॉल्ट लाइन कहलाता है। बार-बार टकराने से प्लेट्स के कोने मुड़ते हैं। जब ज्यादा दबाव बनता है तो प्लेट्स टूटने लगती हैं। नीचे की ऊर्जा बाहर आने का रास्ता खोजती हैं और डिस्टर्बेंस के बाद भूकंप आता है। भूकंप का केंद्र उस स्थान को कहते हैं जिसके ठीक नीचे प्लेटों में हलचल से भूगर्भीय ऊर्जा निकलती है। इस स्थान पर भूकंप का कंपन ज्यादा होता है। कंपन की आवृत्ति ज्यों-ज्यों दूर होती जाती हैं, इसका प्रभाव कम होता जाता है। फिर भी यदि रिक्टर स्केल पर 7 या इससे अधिक की तीव्रता वाला भूकंप है तो आसपास के 40 किमी के दायरे में झटका तेज होता है। यदि कंपन की आवृत्ति ऊपर को है तो कम क्षेत्र प्रभावित होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129